भावना सरोवर

लेखक
स्वामी ब्रह्मविदानन्द सरस्वती

प्रकाशक
दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट
आर्यवन, रोजड (गुजरात)

ओ३म्

भावना सरोवर

-: लेखक :-
स्वामी ब्रह्मविदानन्द सरस्वती

प्रकाशक
दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट
आर्यवन, रोजड़, सागपुर, जिला-साबरकांठा (गुजरात) 383307
दूरभाष - +91- 9409415011, 9409615011
ईमेल - darshanyog@gmail.com
https://www.darshanyog.org

पुस्तक - **भावना सरोवर**
लेखक - स्वामी ब्रह्मविदानंद सरस्वती
संस्करण - प्रथम
प्रकाशन तिथि - भाद्रपद अमावस्या, 2079 (25 सितंबर 2022)
सृष्टि संबत - 1,96,08,53,123
मूल्य - ₹50/-
Online Store - https://vedicbhandar.org

-: मुख्य प्राप्ति स्थान :-

दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़-9409415011, दर्शन योग महाविद्यालय, सुंदरपुर-7027026175, दर्शन योग साधना आश्रम, कमोदा- 7027515011, दर्शन योग धाम, लाकरोड़ा- 9409615011, अहमदाबाद: वैदिक संस्थान ओढव-079-2972340 आर्यसमाज, रायपुर दरवाजा बाहर-079-24454373 दिल्ली : विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क 011-2397016 आर्य प्रकाशन अजमेरी गेट 98684158 आर्य प्रतिनिधि सभा, हनुमान रोड-011-23360950, राउरकेला : श्रुति न्यास : 98613353251, आमसेना: गुरुकुल आश्रम 7873111213, होशंगाबाद : गुरुकुल महाविद्यालय 07574-275788 गाँधीधाम श्री चंद्रेश जी आर्य 9427458494, निलंगा विजय वस्त्र भंडार: 9423349409, लोहारु: पतंजलि आरोग्य केन्द्र, आर्यसमाज : 9728455044 आर्य समाज मन्दिर, राजकोट- 02821-2231146 पोरबंदर- 9428703176, भरुच-9327904074, जूनागढ़-0285-2626435, आणंद- 94278 58935, जामनगर- 0288-2550220, सुरत-93282 70373 सभी प्रमुख आर्य समाज ।

अनुक्रमाणिका

प्रकाशकीय

मनुष्य जीवन का लक्ष्य है सब दुःखों से छूटना और निरंतर केवल तृप्तिदायक सुख को प्राप्त करना। जो कि संसार में उपलब्ध नहीं होता, ऐसा तृप्तिदायक सुख मोक्ष में ही उपलब्ध होता है जो ईश्वर भक्ति से ही संभव है। ईश्वर भक्ति व मोक्ष प्राप्ति कैसे हो? इस हेतु ऋषियों ने वेदों का अध्ययन किया, ईश्वरोक्त वेद जो कि सब सत्य विद्याओं का आदि मूल है, उसमें से जिस विद्या से मनुष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है उसका चयन किया, जिसका नाम है योग विद्या, आध्यात्मिक विद्या, मोक्ष विद्या, ब्रह्मविद्या या पराविद्या है।

मनुष्यों का स्वाभाविक ज्ञान अत्यंत अल्प होने से मनुष्य स्वाभाविक ज्ञान के तुलना में नैमितिक ज्ञान पर अधिक निर्भर है। इसलिए परमेश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चारो वेदों का ज्ञान दिया, जिससे मनुष्य अपना जीवन-यापन उचित प्रकार कर जीवन के मुख्य और अंतिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सके।

वेदो में व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय तथा वैश्विक उन्नति के लिए नीति-नियम सिद्धान्तो का व्यावहारिक वर्णन किया गया हैं, इन सब में जो अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं वह हैं योग विद्या = ब्रह्मविद्या। वेदों के जिन मंत्रों में योग विद्या के स्वरूप का वर्णन किया गया है उसके महत्व को प्रतिपादित करने हेतु 'भावना सरोवर' पुस्तक का निर्माण किया गया हैं, जिससे की योग जिज्ञासुओं को ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना करने एवं योग आध्यात्म को जानने के लिए जिन मंत्रों की आवश्यकता है वो सरलता से एक ही पुस्तक में उपलब्ध हो जाये। वेद मंत्र हमें यही सिखाते हैं की ईश्वर का सानिध्य कैसे प्राप्त करें? जिनसे मनुष्य वैदिक मंत्रों के माध्यम से ईश्वर से अपने दुर्गुणों को दूर करने एवं शुभगुणों की प्राप्ति के लिए शक्ति-सामर्थ्य की प्रार्थना करता है, जिससे की वह अध्यात्म मार्ग में उन्नति करते हुए मोक्षमार्ग का पथिक बनकर अपने जीवन को सफल बना सके।

दर्शन योग महाविद्याल के वर्तमान आचार्य योगनिष्ठ एवं ब्रह्मनिष्ठ पूज्य स्वामी ब्रह्मविदानन्द सरस्वती जी ने अपनी डेढ़ वर्ष की योग साधना एवं मौनाभ्यास (दिनांक ०१ जुलाई २०१२ से ३१ दिसम्बर २०१३) में जिन भावों को लेकर वेद मंत्रों के द्वारा ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना की उन भावों को योग एवं अध्यात्म प्रेमी जनों के आध्यात्मिक उन्नति हेतु इस **'भावना सरोवर'** रूपी अध्यात्म पुस्तक की रचना की है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि हम सभी इस पुस्तक को पढ़कर वैदिक योगामृत का पान करें।

शुभेच्छुक
आचार्य प्रियेश
दर्शन योग धाम, संस्कृति वन,
लाकरोड़ा, ता. : माणसा, जि. गांधीनगर

प्राक्कथन

कया त्वं न ऊत्याभिः प्रमन्दसे वृषन्। कया स्तोतृभ्य आ भर।।

यजु. ३६-७।

हे अनन्तगुणकृपानिधान् सुखसिंचक! हमें पता नहीं, यह तो आपको हीपता होगा कि आप अनेक प्रकार की रक्षाओं के साथ हमें कैसे आनन्द में निमग्न रखते हैं तथा अपने स्तोताओं को कैसे सुख-साधनों से भरे रखते हैं ? हम कभी आपकी इस कृपा से वंचित न हो जाएँ। अतः हम भी अनेक प्रकार से आपकी स्तुति करके आपको समर्पित रहते हैं।

गायन्ति त्वा गायत्रिणो अर्चन्त्यर्कमर्किणः। ब्रह्माणस्त्वा शतक्रतो उद्वंशमिव येमिरे।। ऋग्.०१-१०-०१।

हे अनन्त पराक्रमिन् परमेश्वर! जैसे विद्याचरणसम्पन्न विद्वान् अपनी उत्तम-उत्तम प्रेरणाओं से अपने वंश को उन्नत करते रहते हैं, वैसे ही आपके उपासक सामगानविद् सामगान कर,ऋग्वेदी ज्ञानविशेष से स्तुति करके और यजुर्वेदी विविध अनुष्ठानों से आपकी ख्याति लोक में बढ़ाते हैं। हमें भी वही सामर्थ्य प्रदान करें जिससे हम आपकी ख्याति लोक में सदा बढ़ाते रहें।।

उद्देश्य उच्च और पवित्र हो तो प्रवृत्तियाँ नारकीय अन्धकार की ओर बलात् नहीं जाने देतीं। पुनरपि ज्ञान-बल के अभाव में हम ऐसा कर लेते हैं। परन्तु जब हम नैराश्य, ग्लानि, चिन्ता और क्षोभ के अपार जल में गोते खा रहा होते हैं तब यदि कहीं दूर से भी कोई ध्वनि सुनाई दे जाए तो हमें लगने लगता है कि अब कोई हमारा हाथ पकड़कर अवश्य ही किनारे पर खड़ा कर देगा।

साधना-उपासना में ऐसा होता रहता है और यह ऐसा ही है जैसे क्रीड़ा में अपनी हार देखकर बालक रोने लगता है।इतना ही नहीं तब उसे दूसरे बालक चिढ़ाना भी आरम्भ कर देते हैं परन्तु कोई वृद्ध-अनुभवी उसे समझा देते हैं कि भला खेल रोने के लिए होता है!क्रीड़ामें भी कोई रोता है ! देखो ! क्रीड़ा में रोने को तो दूसरे बालक भी बुरा समझते हैं और इसीलिए रोने वाले को चिढ़ाते हैं! वस्तुतः

सच्चे क्रीड़क कभी नहीं रोते। वे तो हार पर हार प्राप्त करते हैं, चोट पर चोट खाते हैं, धक्के पर धक्के सहते हैंपरन्तु मैदान से भागते नहीं, वहीं डटे रहते हैं। उनकी त्यौरियों पर बल नहीं पड़ते, साहस और धैर्य उनका साथ नहीं छोड़ते,हृदय पर मालिन्य के छींटे नहीं पड़ने देते। न किसी से जलते हैं, न चिढ़ते हैं। क्रीडा में रोना कैसा! क्रीड़ा मनोविनोद के लिए ही तो होती है।

शनैःशनैः परमपिता की कृपा से साधक को भी लगने लगता है कि साधना कोई विपत्ति नहीं, दुर्भाग्य नहीं। यह भी उस महाक्रीडी के साथ एक क्रीडा ही है और अहा! मैं तो क्रीड़ा में एक बच्चे के समान हारकर रोने लगा था। यह तो अनुचित था। अब ऐसा नहीं होगा !!

ईश्वर सर्वगुण सम्पन्न है। सृष्टि के समान वेद भी उनकी अनुपम कृति है। अतः जैसे सृष्टि के पदार्थों की सूक्ष्मता के साथ-साथ उनकी दिव्यता बढ़ती जाती है वैसे ही वेदमन्त्रों का एक-एक अंश हमारे लिए असीम योग रखता है और यही कारण है कि मन्त्र का जितना-जितना चिन्तन हम करते जाते हैं, हमारी बुद्धि में उसका उतना-उतना ही दिव्यज्ञान = तत्त्व-प्रकाश होता जाता हैपरन्तु ऐसा न अनायास होता, न तत्काल होता है। अति पुरुषार्थ, अभ्यास, तप-त्याग और दीर्घकालिक प्रतीक्षा के उपरान्त होता है। विलम्ब से आहत साधक धैर्यविहीन होकर अभ्यासत्यागकर भी असफल ही रहता है। सफलता तो इन्हें सब प्रकार से लेकर चलते हुए ही मिलती है। अतः पुरुषार्थ आदि सहित निरन्तर तत्त्वज्ञान का अभ्यास ही इसमें सफलता का एकमात्र उपाय रह जाता है। प्रस्तुत कृति में उसी विधि का दिग्दर्शन किया गया है।

स्वामी ब्रह्मविदानन्द सरस्वती

॥ओ३म्॥

॥ भावना सरोवर ॥

०१

अकामो धीरो अमृतः स्वयम्भूः रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः ।
तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम् ॥
अथर्व. १०/८/४४।

भावान्तर १

हे ईश्वर ! आप सब प्रकार से पूर्ण हैं। आपको अपने लिए किसी प्रकार की कामना नहीं है। अतः आप सर्वथा शान्त हैं। आप सर्वज्ञ हैं, अविनाशी, स्वयं समर्थ हैं। आप में कहीं से कोई कमी नहीं, सर्वथा आनन्द से परिपूर्ण हैं। आप स्थिर, जरा-जीर्णता से पृथक्, सदा एकरस, बलवान् को जान लेने पर ही विद्वान् मरने से भयभीत नहीं होता ॥

भावान्तर २

हे ईश्वर ! आप सब प्रकार से पूर्ण हैं। आपको अपने लिए किसी प्रकार की कामना नहीं है। अतः आप सर्वथा शान्त हैं, निर्भय, निर्द्वन्द्व हैं। आप सर्वज्ञ हैं, अविनाशी, स्वयं समर्थ हैं। आप में कहीं से कोई कमी नहीं है, सर्वथा आनन्द से परिपूर्ण हैं। आप स्थिर, जरा-जीर्णता से पृथक्, सदा एकरस, बलवान् को जान लेने पर ही विद्वान् मरने से भयभीत नहीं होता। अतः मैं भी आपको प्राप्त कर आपके सदृश बनना चाहता हूँ ॥

भावान्तर ३

हे ईश्वर ! आप सब प्रकार से पूर्ण हैं। आपको अपने लिए किसी प्रकार की कामना नहीं है। आप सर्वज्ञ हैं, अविनाशी, स्वयं समर्थ हैं। आप में कहीं से कोई कमी नहीं, सर्वथा आनन्द से परिपूर्ण हैं। आप स्थिर, जरा-जीर्णता से पृथक्, सदा एकरस, बलवान् को जान लेने पर ही विद्वान् मरने से भयभीत नहीं होता। प्रभो ! मैं भी अमर होना चाहता हूँ। वस्तुतः आपकी सन्निधि से अतिरिक्त मेरी अन्य कोई कामना नहीं है ॥

भावान्तर ४

हे ईश्वर ! आप सब प्रकार से पूर्ण हैं। आपको अपने लिए किसी प्रकार की कामना नहीं है। आप सर्वज्ञ हैं, अविनाशी, स्वयं समर्थ हैं। आप में कहीं से कोई कमी नहीं, सर्वथा आनन्द से परिपूर्ण हैं। आप स्थिर, जरा-जीर्णता से पृथक्, सदा एकरस, बलवान् को जान लेने पर ही विद्वान् मरने से भयभीत नहीं होता। प्रभो ! मैं भी अकाम होना चाहता हूँ। वस्तुतः आपसे अतिरिक्त मेरी अन्य कोई कामना नहीं हो सकती है॥

भावान्तर ५

हे ईश्वर ! आप सब प्रकार से पूर्ण हैं। आपको अपने लिए किसी प्रकार की कामना नहीं है। आप सर्वज्ञ हैं, अविनाशी, स्वयं समर्थ हैं। आप में कहीं से कोई कमी नहीं, सर्वथा आनन्द से परिपूर्ण हैं। आप स्थिर, जरा-जीर्णता से पृथक्, सदा एकरस, बलवान् को जान लेने पर ही विद्वान् को मृत्युभय से शान्ति मिलती है॥

भावान्तर ६

जैसे आप कामनारहित हैं वैसा ही हमको भी होना पड़ेगा, अन्यथा न तो मृत्यु का भय जाएगा, न मृत्यु स्वीकार होगी। क्योंकि आसक्ति ही मृत्यु से बांधे रखने का कारण है॥

भावान्तर ७

हे ईश्वर ! आप अपनी तृप्ति की कामनाओं से सर्वथा रहित, सर्वज्ञ, मृत्यु से रहित तथा आनन्द से परिपूर्ण हैं। आप में किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं है। आप अजर-अमर, एकरस, पूर्णसमर्थ को ही प्राप्त होकर मैं मृत्यु से निर्भय हो सकता हूँ। अतः अपना स्वरूप मुझमें प्रकट करें॥

भावान्तर ८

हे ईश्वर ! आप अपनी तृप्ति की कामनाओं से सर्वथा रहित, सर्वज्ञ, मृत्यु से रहित तथा आनन्द से परिपूर्ण हैं। आप में किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं है। आप अजर-अमर, एकरस, पूर्णसमर्थ को ही प्राप्त होकर तत्त्वज्ञानी मृत्यु से निर्भय हो जाते हैं॥

पदार्थ

(अकामः) (१/१) अपने लिए कामनाओं से रहित (धीरः) (१/१) विद्वान्, सर्वज्ञ, अपने नियम से चलित न होनेवाला (अमृतः)(१/१) मृत्यु से रहित (स्वयम्भूः) (१/१) अपने आप वर्त्तमान (रसेन) (३/१) तृप्तः (१/१) आनन्द से परिपूर्ण (कुतश्चन ऊन न) (अ.प)) कहीं से भी अन्यून (न्यूनता से रहित) (तम्) (२/१) उस (को) (आत्मानं)(२/१) परमात्मा (को) (धीरं) (२/१) विद्वान् (को) (अजरं) (२/१) जराहीन (युवानं)(२/१) बलवान् (को) (एव) (अ.प.) ही (विद्वान्) (१/१) जाननेवाला (मृत्योः) (५/१) मृत्यु से (न) (अ.प.) नहीं (बिभाय) (लिट.प्र.पु./१) डरा।

०२

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ साम. पू. १/१/१।

भावान्तर १

हे ज्ञानस्वरूप ईश्वर ! आप हमको ज्ञान देने के लिए, उपदेशक बनकर तथा मेरी उपासना को स्वीकार करने हेतु हमारी बुद्धि में प्रकट होइए ॥

भावान्तर २

हे ज्ञानस्वरूप परमात्मन् ! इस समर्पित पुत्र को तत्त्वज्ञान का उपदेश करने हेतु प्रसन्न होइए ! हमारे ज्ञान में अपना स्वरूप प्रकट कीजिए !!

पदार्थ

हे (अग्ने) (सम्बो०/१) प्रकाशमय प्रभो! ज्ञानस्वरूप भगवान्! (आप) (गृणानः) (१/१) स्तुति किये हुए (है) (होता) (१/१) सबके सब पदार्थों का दाता है (अतः) (वीतये) (४/१) हमारे हृदय को प्रकाशित करने के लिए (हव्यदातये) (४/१) भक्ति का फल देने के लिए (नि सत्सि) (लट्.म.पु/१) विराजिए। हे प्रभो! (बर्हिषि) (७/१) हमारे ध्यान में (आयाहि) (लोट्.म.पु./१) अपना स्वरूप प्रकट कीजिए।

०३ अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत । स देवाँ एह वक्षति ॥ ऋ. १/१/२ ।

भावान्तर १

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! आप जैसे पहले के ऋषियों द्वारा प्रशंसित हैं, वैसे ही नये तत्त्वज्ञानियों के द्वारा भी प्रशंसा करने योग्य हैं । आप ही अपना ज्ञान देकर सबको कृतार्थ करते हैं । अतः मैं आपके आनन्द आदि गुणों की साक्षाद् अनुभूति करके आप की स्तुति करना चाहता हूँ ॥

भावान्तर २

पहले के ऋषियों विद्वानों ने आपकी स्तुति की और आपने उनको ज्ञान दिया । तो मैं भी आपकी स्तुति कर रहा हूँ । अतः मुझे भी ज्ञान दें ॥

पदार्थ

(पूर्वेभिः ऋषिभिः) (३/३) पहले के ऋषियों के द्वारा (उत) (अ.प.) वैसे ही (नूतनैः) (३/३) नये तत्त्वज्ञानियों के द्वारा (अग्निः) (१/१) ज्ञानस्वरूप परमात्मा (इड्यः) (१/१) स्तुति योग्य है (सः) (१/१) वह परमात्मा (देवान्) (२/३) विद्वानों को (एह) (अ.प.) अपना (वक्षति) (लट्.प्र.पू./१) अनुभूति कराता है ।

०४ अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवेदिवे । यशसं वीरवत्तमम् ॥ ऋ. १/१/३ ।

भावार्थ

सर्वज्ञ प्रभो ! आप हमें ऐसा ज्ञान-विज्ञान दीजिए, जो प्रतिदिन हमारे ज्ञान और व्यवहार को पुष्ट करे तथा विश्वसनीयता के कारण प्रसिद्धिकारक हो और भावी पीढ़ियों के निर्माण में आधार भूत कारण हो ॥

पदार्थ

यह मनुष्य (अग्निना एव) अच्छी प्रकार ईश्वर की उपासना और भौतिक अग्नि ही को कलाओं में संयुक्त करने से (दिवे दिवे) प्रतिदिन (पोषम्) आत्मा और

शरीर की पुष्टि करनेवाला (यशसम्) जो उत्तम कीर्ति का बढ़ानेवाला और (वीरवत्तमम्) जिसको अच्छे-अच्छे वा शूरवीर लोग चाहा करते हैं (रयिम्) विद्या और सुवर्णादि उत्तम उस धन को सुगमता से (अश्नवत्) प्राप्त होता है ।।३ ।।

०५

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ॥ ऋ. १/१/१ ।

भावार्थ

हे प्रभो ! आप ज्ञानस्वरूप हैं । आप सदा सबका हित करते हैं । आप इस उपासना रूप सर्वोत्तम कर्म के रक्षक और विधानकर्त्ता हैं । आप यथाकाल सब कर्मों के सम्पादक हैं । हमको ज्ञान-विज्ञान देने वाले हैं तथा मोक्षानन्द को धारण करते हैं । कृपया मुझे समुचित विज्ञान दीजिए, जिससे सरलता से आपके नित्य आनन्द को प्राप्त कर सकूँ ॥

पदार्थ

(यज्ञस्य) हम लोग विद्वानों के सत्कार सङ्गम महिमा और कर्म के (होतारम्) देने तथा ग्रहण करने वाले (पुरोहितम्) उत्पत्ति के समय से पहिले परमाणु आदि सृष्टि के धारण करने और (ऋत्विजम्) वारंवार उत्पत्ति के समय में स्थूल सृष्टि के रचनेवाले तथा ऋतु-ऋतु में उपासना करने योग्य (रत्नधातमम्) और निश्चय करके मनोहर पृथिवी वा सुवर्ण आदि रत्नों के धारण करने वाले (देवम्) देने तथा सब पदार्थों के प्रकाश करनेवाले परमेश्वर की (ईळे) स्तुति करते हैं ।

०६

अग्नेनय सुपथा रायेअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्ठां तेनमौक्तिं विधेम ॥
40/16 यजुर्वेद

भावान्तर १

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! हमको आप अपनी प्राप्ति के लिए उत्तम ज्ञान और सम्पूर्ण विधि बताइए, जिससे जानकर यथार्थतया योगाभ्यास कर सकूँ । आप सम्पूर्ण विश्व के साथ मुझे भी पूरी तरह से जान रहे हैं । मैं कोई ऐसा अकृत न करूँ,

जिससे व्यवहार में कुटिलता करनी पड़े तथा अब तक की सब बुराइयों को नष्ट कर दें। एतदर्थ मैं आपकी भूरिशः स्तुति-प्रार्थना-उपासना कर रहा हूँ ॥

भावान्तर २

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! आप हमें अपनी ओर चलाइए, संसार से विमुक्ति के लिए। आप सम्पूर्ण ज्ञेयों को जानते हैं। मेरे सारे पापों को दूर कर दीजिए, जिसके लिए मैं आपकी बहुत-बहुत स्तुति-प्रार्थना-उपासना कर रहा हूँ ॥

भावान्तर ३

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! आप हमें सन्मार्ग की ओर चलाइए, आध्यात्मिक सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए। आप सम्पूर्ण ज्ञेयों को जानते हैं। मेरे सारे पापों को दूर कर दीजिए, जिसके लिए मैं आपकी बहुत-बहुत स्तुति-प्रार्थना-उपासना करता रहूँ॥

भावान्तर ४

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! हमको आप अपनी प्राप्ति के लिए ज्ञान के उत्तम मार्ग पर चलाइए। सम्पूर्ण ज्ञेयों के साथ मैं किन कारणों से बाधित हूँ, उसे आप अच्छी तरह जानते हैं। उन्हें दूर कर दीजिए, एतदर्थ मैं आपकी भूरिशः स्तुति-प्रार्थना-उपासना करता रहूँ ॥

भावान्तर ५

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! हमको आप अपनी प्राप्ति के लिए ज्ञान के उत्तम मार्ग पर चलाइए। सम्पूर्ण ज्ञेयों के साथ मैं किन कारणों से बाधित हूँ, उसे आप अच्छी तरह जानते हैं। जैसे कि शरीर को अपना स्वरूप मान रहा हूँ, अपना विशुद्ध स्वरूप आपके समक्ष प्रस्तुत कर नहीं रहा हूँ। अतः आपके साथ समुचित व्यवहार नहीं कर रहा। अतः ऐसे सब दोषों को शीघ्र दूर कर दीजिए, एतदर्थ मैं आपकी भूरिशः स्तुति-प्रार्थना-उपासना करता रहूँ ॥

भावान्तर ६

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! आप हमें सन्मार्ग की ओर चलाइए, आध्यात्मिक सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए। आप सम्पूर्ण ज्ञेयों को जानते हैं। आपकी प्राप्ति से ही

मेरे सारे द्वेष आदि पाप दूर होंगे। अतः अपना प्रत्यक्ष ज्ञान करा दीजिए। जिसके लिए मैं आपकी बहुत-बहुत स्तुति-प्रार्थना-उपासना करता रहूँ ॥

भावान्तर ७

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! आप हमें अपनी प्राप्ति की ओर चलाइए, मेरे कल्याण के लिए। आप सम्पूर्ण ज्ञेयों को जानते हैं। मेरे सारे पापों को दूर कर दीजिए, जिसके लिए मैं आपकी बहुत-बहुत स्तुति-प्रार्थना-उपासना करता रहूँ ॥

भावान्तर ८

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! आप हमें अपनी प्राप्ति की ओर चलाइए, आनन्द, ज्ञान आदि की प्राप्ति के लिए। आप सम्पूर्ण ज्ञेयों को जानते हैं। मेरे सारे पापों को दूर कर दीजिए, जिसके लिए मैं आपकी बहुत-बहुत स्तुति-प्रार्थना-उपासना करता रहूँ ॥

भावान्तर ९

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! हमको आप अपनी प्राप्ति हेतु ज्ञान के उत्तम मार्ग पर चलाइए। सम्पूर्ण ज्ञेयों के साथ मैं किन कारणों से बाधित हूँ, उसे आप अच्छी तरह जानते हैं। विशेषकर मेरी इस व्याधि को दूर करें, जिससे मैं पुरुषार्थ करने में बाधित न रहूँ ॥

भावान्तर १०

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! हमको आप अपनी प्राप्ति के मार्ग पर आरूढ़ कीजिए। (ज्ञान और सम्पूर्ण विधि बताइए, जिससे मैं सफल हो सकूँ।) आप सम्पूर्ण विश्व के साथ मुझे भी पूरी तरह से जान रहे हैं। अतः आपकी प्राप्ति में बाधक बनी हमारी सारी कुटिलताओं या बुराइयों को नष्ट कर दें। एतदर्थ मैं आपकी भूरिशः स्तुति-प्रार्थना-उपासना कर रहा हूँ ॥

भावान्तर ११

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! हमको आप अपनी प्राप्ति के लिए ज्ञान के उत्तम मार्ग पर चलाइए। सम्पूर्ण ज्ञेयों के साथ मैं किन कारणों से बाधित हूँ, उसे आप

अच्छी तरह जानते हैं। जैसे कि मैं अपनी आत्मा में ज्ञान और प्रयत्न को दूर-दूर जान रहा हूँ, उपासना की प्रवृत्ति में प्रतिकूलता हो रही है। कृपया यथार्थ ज्ञान देकर इन्हें दूर कर दीजिए, एतदर्थ मैं आपकी भूरिशः स्तुति-प्रार्थना-उपासना कर रहा हूँ ॥

भावान्तर १२

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! हमको आप अपनी प्राप्ति के लिए ज्ञान के उत्तम मार्ग पर चलाइए। सम्पूर्ण ज्ञेयों के साथ मैं किन कारणों से बाधित हूँ, उसे आप अच्छी तरह जानते हैं। जैसे कि आपको आत्मा मानते हुए भी अपने समान ज्ञाता नहीं मान रहा हूँ। कृपया यथार्थ ज्ञान देकर इन्हें दूर कर दीजिए, एतदर्थ मैं आपकी भूरिशः स्तुति-प्रार्थना-उपासना कर रहा हूँ ॥

भावान्तर १३

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! हमको आप अपनी प्राप्ति के लिए उत्तम ज्ञान और सम्पूर्ण विधि बताइए, जिससे मैं सफल हो सकूँ। आप सम्पूर्ण विश्व के साथ मुझे भी पूरी तरह से जान रहे हैं। हमारी सारी कुटिलताओं व बुराइयों को नष्ट कर दें। एतदर्थ मैं आपकी भूरिशः स्तुति-प्रार्थना-उपासना कर रहा हूँ ॥

भावान्तर १४

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! हमको आप अपनी प्राप्ति के लिए उत्तम ज्ञान और सम्पूर्ण विधि बताइए, जिससे जानकर यथार्थतया योगाभ्यास कर सकूँ। आप सम्पूर्ण विश्व के साथ मुझे भी पूरी तरह से जान रहे हैं। मैं कोई ऐसा अकृत न करूँ, जिससे व्यवहार में कुटिलता करनी पड़े तथा अब तक की सब बुराइयों को नष्ट कर दें। एतदर्थ मैं आपकी भूरिशः स्तुति-प्रार्थना-उपासना कर रहा हूँ ॥

भावान्तर १५

हे परमेश्वर आप ज्ञानस्वरूप हैं ! हमको आप अपने इस स्वरूप की प्राप्ति के लिए उत्तम ज्ञान और सम्पूर्ण विधि बताइए, जिससे मैं सफल हो सकूँ। आप सम्पूर्ण विश्व के साथ मुझे भी पूरी तरह से जान रहे हैं। हमारी सारी कुटिलताओं व बुराइयों को नष्ट कर दें। एतदर्थ मैं आपकी भूरिशः स्तुति-प्रार्थना-उपासना कर रहा हूँ ॥

भावान्तर १६

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! आप मुझे उस मार्ग पर चलाइए, जिस पर चलकर आप तक पहुँच जाएँ। आप मेरे आलस्य, प्रमाद आदि दोषों को सर्वथा जानते हैं, कृपया उन्हें दूर करने की सामर्थ्य दें। आपकी प्राप्ति के नाम पर जो मिथ्या व्यवहार करता हूँ, कृपया उसके लिए दण्ड विधान करें। एतदर्थ हम आपकी बहुत स्तुति-प्रार्थना-उपासना कर रहे हैं ॥

पदार्थ

(अग्ने) (सम्बो०) हे प्रकाशस्वरूप। ज्ञानस्वरूप भगवन्! (राये) (४/१) विज्ञानादि ऐश्वर्य के लिए (अस्मान्) (२/३) हमको (सुपथा) (३/१) शोभन मार्ग से (नय) (लोट्.म.पु./१) ले चलिए (देव) (सम्बो० १) हे दिव्यस्वरूप परमेश्वर! (आप) (विश्वानि) (२/३) सब (वयुनानि) (२/३) कर्मों को (विद्वान्) (१/१) जानने वाले हैं। (अतः) (अस्मत्) (५/१) हमसे (जुहुराणम्) (२/१) कुटिलता युक्त (एनः) (२/१) पाप को (युयोधि) (लोट्.म.पु./१) दूर कीजिए (ते) (६/१) आप की (भूयिष्ठां) (२/१) अत्यन्त (नम उक्तिम्) (२/१) नम्रतापूर्वक प्रशंसा (विधेम) (वि.कि.उ.पु./३) हम किया करें।

०७

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि ॥ यजु. १/५ ।

भावान्तर १

हे ईश्वर ! मैं लौकिक सुख को छोड़कर आप तक पहुँचना चाहता हूँ, परन्तु ऐसा कर नहीं पा रहा हूँ। पुनः पुनः उसके लिए लालायित होता हूँ। आप मुझे सफल करें। मैं इस असत्य को छोड़ आपके नित्य सत्य सुख को प्राप्त होऊँ ॥

भावान्तर २

हे अपने नियम में सदा दृढ़ रहने वाले परमेश्वर ! मैं आपकी प्राप्ति के लिए आवश्यक नियमों का पालन करना चाहता हूँ। वह पूरा कर सकूँ, उसके लिए सामर्थ्य प्रदान कर सफल कीजिए। आपकी प्राप्ति के विरुद्ध जो दोष मुझसे हो रहे हैं, उनका संकेत कीजिए, जिससे मैं उन्हें छोड़कर ऊपर उठ सकूँ ॥

पदार्थ

(व्रतपते) (सम्बो॰/१) अग्ने हे धर्मों के पालक सर्वप्रकाशक परमेश्वर! (अनृतात्) (५/१) झूठ से पृथक् (सत्यम्) (२/१) वेदविद्या, श्रेष्ठ विचार, विभ्रम सिद्धान्त (व्रतम्) (२/१) सत्य बोलना, मानना और सत्य करने का (उपैमि) (लट्.उ.पु./१) नियम से ग्रहण करने, जानने एवं प्राप्ति की इच्छा करता हूं। (तत्) (२/१) उस सत्य व्रत को (आप) (राध्यताम्) (कम लेट्.प्र.पु./१) अच्छी प्रकार सिद्ध कीजिए, जिससे (अहम्) (१/१) मैं उस सत्य व्रत के नियमों को अनुष्ठान करने में (शकेयम्) (विधि उ.पु./१) समर्थ होऊं। और मैं (इदम्) (२/१) इसी सत्यव्रत का आचरण (चरिष्यामि) (लट्.उ.पु./१) करूंगा।

०८

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवाऽआप्नुवन्पूर्वमर्षत्।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति॥
यजु. ४०/४।

भावान्तर १

सर्वत्र अपने स्थान में स्थिर रूप में रहने वाला, मन से भी अधिक शक्तिशाली, जिसको कोई भी इन्द्रिय व्याप्त नहीं कर सकती, सबके कहीं पहुँचने से पूर्व वहाँ प्राप्त, तीव्र दौड़ने वाले से भी आगे रहने वाला, उसी के अन्दर जीवात्मा अपने सारे कर्मों को सम्पन्न करता है। हे ईश्वर ! आप हमारे अन्दर-बाहर व्यापक होते हुए हमारे सब कर्मों के साक्षी हैं। कृपया आप अपनी विद्यमानता की प्रतीति कराएँ॥

भावान्तर २

हे नित्य एकरस सर्वव्यापक ईश्वर ! आप सदा सर्वत्र स्थिर रूप में विद्यमान रहते हुए सबको प्रेरित करते हैं। बिना गति किए सम्पूर्ण संसार की रचना आदि करते हैं। आप हमारे मन से भी अधिक शक्तिशाली हैं, आपको कोई भी इन्द्रिय व्याप्त नहीं कर सकती, सबके कहीं पहुँचने से पूर्व वहाँ प्राप्त रहते हैं। तीव्र दौड़ने वाले से भी आगे रहने वाले तथा आपके अन्दर ही हम सब जीवात्मा अपने सारे कर्मों को सम्पन्न करते हैं। सो प्रभो ! आप अपने इस स्वरूप की प्रतीति कराएँ॥

भावान्तर ३

हे प्रभो ! आप सदैव सर्वत्र प्राप्त होकर अधिष्ठित हैं। आपको मन आदि किसी भी प्राकृतिक साधनों से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। आप अपने स्थान में स्थिर रहते हुए ही दूर-दूर भागने वाले सभी एकदेशी पदार्थों को व्याप्त = नियन्त्रित कर लेते हैं। हम जो कुछ भी चेष्टा करते हैं कोई भी आपसे बाहर नहीं, सब आपके अन्दर ही होती हैं॥

भावान्तर ४

हे ईश्वर ! आप निश्चय से एक तत्त्व-विशेष हैं। नित्य, एकरस, सर्वव्यापक हैं और स्वयं सदा सर्वत्र स्थिर रूप में विद्यमान रहते हुए सबको प्रेरित करते हैं। आप हमारे मन से भी अधिक शक्तिशाली हैं। आपकी सर्वव्यापकता के कारण कोई भी इन्द्रिय आपको व्याप्त नहीं कर सकती, क्योंकि वे एकदेशी को ही ग्रहण कर पाती हैं। इसी सर्वव्यापकता के कारण सबके कहीं पहुँचने से पूर्व वहाँ प्राप्त रहते हैं। तीव्र दौड़ने वाले से भी आगे होते हैं। सर्वज्ञ होने से भूत, भविष्य को भी तत्काल जान लेते हैं। अनुमान से हमारी योजनाओं को जान लेते हैं। आपके अन्दर ही हम सब जीवात्मा अपने सारे कर्मों को सम्पन्न करते हैं, जिन्हें कि आप सतत जानते रहते हैं। सो प्रभो ! आप अपने इस स्वरूप को और अधिक स्पष्टता से जनाएँ॥

भावान्तर ५

हे नित्य एकरस सर्वव्यापक ईश्वर ! आप सदा सर्वत्र स्थिर रूप में विद्यमान रहते हुए सबको प्रेरित करते हैं। बिना गति किए सम्पूर्ण संसार की रचना आदि करते हैं। आप हमारे मन से भी अधिक शक्तिशाली हैं, आपको कोई भी इन्द्रिय व्याप्त नहीं कर सकती, सबके कहीं पहुँचने से पूर्व वहाँ प्राप्त रहते हैं। तीव्र दौड़ने वाले से भी आगे रहने वाले तथा आपके अन्दर ही हम सब जीवात्मा अपने सारे कर्मों को सम्पन्न करते हैं। सो प्रभो ! आप अपने इस स्वरूप की प्रतीति कराएँ॥

भावान्तर ६

हे नित्य एकरस सर्वव्यापक ईश्वर ! आप निश्चय से एक तत्त्व-विशेष हैं, जो सबको प्रेरित करते हुए स्वयं सदा, सर्वत्र, स्थिर रूप में विद्यमान रहते हैं। परन्तु

सृष्टि की रचना आदि कार्य आप काल-क्रम-गति के आश्रय से व्यवस्थित रूप में करते हैं। अनियमित कुछ भी नहीं करते हैं। आप हमारे मन से भी अधिक शक्तिशाली हैं, आपको हमारी कोई भी इन्द्रिय व्याप्त नहीं कर सकती, सबके कहीं पहुँचने से पूर्व वहाँ प्राप्त रहते हैं। तीव्र दौड़ने वाले से भी आगे रहने वाले तथा आपके अन्दर ही हम सब जीवात्मा अपने सारे कर्मों को सम्पन्न करते हैं। सो प्रभो ! आप अपने इस स्वरूप की प्रतीति कराएँ ॥

भावान्तर ७

हे नित्य, एकरस, सर्वव्यापक ईश्वर ! आप निश्चय से एक तत्त्व विशेष हैं, जो सबको प्रेरित करते हुए स्वयं सदा, सर्वत्र, स्थिर रूप में विद्यमान रहते हैं। आप हमारे मन से भी अधिक शक्तिशाली हैं, आपको कोई भी इन्द्रिय व्याप्त नहीं कर सकती, सबके कहीं पहुँचने से पूर्व वहाँ प्राप्त रहते हैं। तीव्र दौड़ने वाले से भी आगे रहने वाले तथा आपके अन्दर ही हम सब जीवात्मा अपने सारे कर्मों को सम्पन्न करते हैं। सो प्रभो ! आप अपने इस स्वरूप की प्रतीति कराएँ ॥

पदार्थ

हे विद्वान् मनुष्यो! जो (एकम्) अद्वितीय (अनेजत्) नहीं कंपनेवाला अर्थात् अचल, अपनी अवस्था से हटना कंपन कहाता है उससे रहित (मनसः) मन के वेग से भी (जवीषः) अति वेगवान् (पूर्वम्) सबसे आगे (अर्षत्) चलता हुआ अर्थात् जहां कोई चलकर जावे वहां प्रथम ही सर्वत्र व्याप्ति से पहुंचा हुआ ब्रह्म है (एनत्) इस पूर्वोक्त ईश्वर को (देवाः) चक्षु आदि इन्द्रिय (न) नहीं (आप्नुवन्) प्राप्त होते (तत्) वह परब्रह्म अपने-आप (तिष्ठत्) स्थिर हुआ अपनी अनन्त व्याप्ति से (धावतः) विषयों की ओर गिरते हुए (अन्यान्) आत्मा के स्वरूप से विलक्षण मन वाणी आदि इन्द्रियों का (अति, एति) उल्लङ्घन कर जाता है (तस्मिन्) उस सर्वत्र अभिव्याप्त ईश्वर की स्थिरता में (मातरिश्वा) अन्तरिक्ष में प्राणों को धारण करनेहारे वायु के तुल्य जीव (अपः) कर्म वा क्रिया को (दधाति) धारण करता है, यह जानो।।४।।

०९

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते ।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ सम्भूत्याꣳरताः ॥

यजु. ४०/९

भावान्तर १

हे ईश्वर ! आपका कथन पूर्ण सत्य है कि जो संसार के सूक्ष्म, सूक्ष्मतर, सूक्ष्मतम प्रकृति की खोज में लगे रहते हैं, वे अन्ततः अन्धकार को प्राप्त होते हैं तथा जो संसार की प्राप्ति में लगे रहते हैं, वे घोर अन्धकार को प्राप्त होते हैं। क्योंकि दुःख, निराशा, अतृप्ति ही उन्हें प्राप्त होती है। आपके असीम नित्यानन्द को वे कभी जान नहीं पाते हैं। जीवन को कृतकृत्य न बनाकर यों ही समय गँवा देते हैं। एक साधारण को जो अतृप्तावस्था प्राप्त होती है, वही लौकिक घोर पुरुषार्थी को भी प्राप्त होने से पुरुषार्थ की निष्फलता ही सिद्ध होती है ॥

भावान्तर २

हे ईश्वर ! जो कारण रूप प्रकृति की खोज में लगे रहते हैं, वे अन्ततः दुःख को प्राप्त होते हैं। क्योंकि उनका सारा वर्त्तमान जीवन भी सुखयुक्त नहीं रहता तथा शेष जीवन भी कल्पना में बीत जाता है। जो कार्यरूप संसार के भोग और रक्षण में लगे रहते हैं, वे और भयंकर दुःख को प्राप्त होते हैं। क्योंकि जीवन भर पुरुषार्थ करके तृप्त नहीं होते हैं और उसी अवस्था में शरीर आदि से भी वंचित हो जाते हैं। अन्ततः उनका किया कुछ भी शेष नहीं रहता। सब नष्ट हो जाते हैं। आपको न जानने के कारण जीवन की सफलता से अधूरे रह जाते हैं ॥

भावान्तर ३

मृत्यु को प्राप्त करने में एक और पोषक तत्त्व मिला कि जो संसार के मूल की ओर जाना चाह रहे हैं, वे अज्ञानग्रस्त ही रहेंगे और जो संसार को प्राप्त करने में लगे हैं, इसको छोड़ना नहीं चाह रहे हैं, वे और भी दुःखी होंगे। इसलिए तुम शान्ति से मृत्यु की ओर जाओ ॥

पदार्थ

(ये) जो लोग (असम्भूतिम्) कारणरूप प्रकृति की (उपासते) खोज में लगे रहते हैं (अन्धम्, तमः) दुःख को (अन्धकार को) (प्रविशन्ति) प्राप्त होते हैं। और (ये) जो (सम्भूत्याम्) कार्यरूप संसार में (रताः) रमण करते हैं (ते) वे (उ) तो (ततः) उससे भी (भूय इव) अधिक (तमः) अविद्यारूप अन्धकार को प्राप्त होते हैं।

१० अश्मनवती रीयते सꣳरभध्वमुत्तिष्ठत प्र तरता सखायः।
अत्रा जहीमोऽशिवा येऽअसञ्छिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान्॥
यजु. ३५/१०।

भावार्थ

देखो! कितने ही रोगों और विपदाओं से घिरा हुआ यह शरीर मृत्यु की ओर निरन्तर चला जा रहा है। इसलिए शीघ्र सावधान हो जाओ और ज्ञान-कर्म-उपासना व इनके करने वालों से संगति लगाते हुए हमको प्राप्त कर लो। इसके लिए प्रथम लौकिक सुखों और अन्य बाधकों को छोड़ते हुए वैराग्य और परोपकार को लेकर हम तक पहुँच जाओ॥

पदार्थ

हे (सखायः) मित्रो! जो (अश्मन्वती) बहुत मेघों वा पत्थरों वाली सृष्टि वा नदी प्रवाह से (रीयते) चलती है उसके साथ जैसे (वयम्) हम लोग (ये) जो (अत्र) इस जगत् में वा समय में (अशिवाः) अकल्याणकारी (असन्) हैं उनको (जहीमः) छोड़ते हैं तथा (शिवान्) सुखकारी (वाजान्) अत्युत्तम अन्नादि के भोगों को (अभि, उत्, तरेम) सब ओर से पाप करें अर्थात् भोग चुकें, वैसे तुम लोग (संरभध्वम्) सम्यक् आरम्भ करो (उत्तिष्ठत) उद्यत होओ और (प्रतरत) दुःखों का उल्लंघन करो।।१०।।

११ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाजऽ इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्॥ यजु. ३५/४।

भावान्तर १

हे उपासक! जिस शरीर में तुम हो, वही नष्ट हो रहा है और अन्ततः समाप्त हो जाएगा। इसमें उत्पन्न इन्द्रियों के सुख भी क्षणिक हैं, जिनके लिए तुम सतत

लालायित हो। पर वे भी एक दिन अप्राप्त हो जाएँगे, क्योंकि उनको प्राप्त कराने वाली वे इन्द्रियाँ ही नहीं रहेंगी। अतः इनको छोड़कर मेरी उपासना करते हुए मुझे प्राप्त करने का प्रयास करो॥

भावान्तर २

सदा परिवर्तनशील विनाशोन्मुखी संसार और क्षणभर में नष्ट होने योग्य शरीर में तुम्हारा निवास है। अतः इसके आश्रित इन्द्रिय सुख की आशा मत करो। उससे कृतार्थ नहीं हो सकते। अतः कृतार्थ होने के लिए उन्हें छोड़कर मेरा सान्निध्य शीघ्र प्राप्त करो!

भावान्तर ३

तुम्हारा यह निवासाश्रय शरीर सतत नष्ट हो रहा है। इसी में तुम्हारा यह प्राण = जीवन पीपल के डोलते पत्ते पर पड़ी बूँद के समान है। वह पता नहीं कब समाप्त हो जाए। इसलिए इन्द्रियों के भोगों से शीघ्रातिशीघ्र हटकर मुझ ईश्वर की प्राप्ति का उद्योग करो॥

भावान्तर ४

शरीर और संसार सबके जाते हुए तुम्हारे पास समय कहाँ है, यहाँ रहने की योजना बनाने के लिए। इसलिए तुम नित्य निवासाश्रय की प्राप्ति का उद्योग करो॥

भावान्तर ५

शरीर के जो-जो अवयव आज हैं, वे कल के लिए टिके रहेंगे, जिसके लिए ऐसा कहा नहीं जा सकता है। उन्हीं पर आश्रित सतत क्षीणता को प्राप्त होने वाले शरीर में तुम्हारा लौकिक निवास है। बीच-बीच में मन की अवस्थाएँ तथा व्याधि आदि से शरीर, इन्द्रियाँ और उनका सुख बाधित होते रहते हैं और धीरे-धीरे समाप्त हो रहे हैं। पुनरपि उन्हीं शरीरेन्द्रिय से उपलब्ध सुखों में संलग्न हो; यह ठीक नहीं है। उससे तृप्ति की आशा छोड़कर नित्य सुख का उद्योग करो॥

भावान्तर ६

जिस संसार में सूर्य भी नित्य नहीं, सतत क्षीण हो रहा है। जिस शरीर में अरबों परमाणु एक क्षण में बाहर निकल जाते हैं, उन पर तुम विश्वास कर रहे हो! वस्तुतः आधिदैविक आदि उत्पातों के कारण जहाँ कल क्या होगा, कोई निश्चित नहीं। यह शरीर किस अकस्मात् में क्षणभर में नष्ट हो जाएगा, कोई निश्चित नहीं, उसमें तुम्हारा निवास है। पुनरपि यहाँ ऐन्द्रियिक सुख में तल्लीन हो। धोखा खाओगे। अतः इनको छोड़ नित्य मोक्ष सुख का उद्योग करो॥

भावान्तर ७

कल जिसकी स्थिति समान रहने का निश्चय नहीं, उस संसार में तुम्हारा निवास है और क्षणभर में जिसका नाश हो सकता है उस शरीर पर तुम्हारा सुख आश्रित है। इसलिए इन्द्रियों के भोगों में न लगकर मुझ ईश्वर की प्राप्ति का उद्योग करो॥

भावान्तर ८

तुम्हारा आज गया, इसको तुम कल के लिए बचा नहीं सकते। गए हुए कल को तुम वापस ला नहीं सकते। कल के लिए जाने से बचा नहीं सकते। इस प्रकार तुम कहीं भी टिक नहीं रहे हो। बीच-बीच में व्याधि आदि से प्रताड़ित होते रहते हो तो भी कृतरक्षाप्रबन्ध क्यों नहीं बनना चाह रहे हो?

भावान्तर ९

तुम्हारा यह निवासाश्रय कब नष्ट हो जाएगा, इसका कुछ पता नहीं। इसी में तुम्हारा यह जीवन पीपल के डोलते पत्ते पर पड़ी बूँद के समान है। इसलिए इन्द्रियों के भोगों से हटकर मुझ ईश्वर की प्राप्ति का उद्योग करो॥

भावान्तर १०

हे ईश्वर! आपका उपदेश है - कल के लिए तुम्हारे पास समय नहीं है, क्योंकि तुम्हारा निवासाश्रय चलायमान है। तो मुझे इन्द्रियों के भोगों से हटाकर अपनी प्राप्ति में लगने हेतु सामर्थ्य दीजिए॥

भावान्तर ११

चित्त को एक अवस्था में तुम टिका नहीं सकते। यथेष्ट अवस्था को ला नहीं सकते। बीच-बीच में विषयान्तर से प्रभावित होते रहते हो, तो भी सफल होना क्यों नहीं चाह रहे हो ?

भावान्तर १२

हे ईश्वर ! आपका कथन ठीक है कि जिस शरीर में मैं हूँ, वह निरन्तर प्राण लेता हुआ भी नष्ट होता जा रहा है और अन्ततः समाप्त हो जाएगा। इसमें रहते हुए इन्द्रियों के विषय जिनके लिए मैं इच्छा रखता हूँ, वे भी एक दिन अप्राप्त हो जाएँगे, क्योंकि उनको प्राप्त कराने वाली वे इन्द्रियाँ ही नहीं रहेंगी। अतः जिनके पीछे मैं दिन-रात लगा हूँ, उनका मिलना बन्द हो जाने पर और क्या करूँगा ? केवल निराशा ही रहेगी। अतः इनको छोड़कर आपकी सन्निधि ही शीघ्र प्राप्त करने योग्य है ॥

भावान्तर १३

हे उपासक ! जिस संसार में तुम रह रहे हो, वह निरन्तर नष्ट हो रहा है और तुम्हारा यह शरीर तो कब साथ छोड़ दे, इसका कोई निश्चय नहीं। पुनरपि इन सांसारिक ऐन्द्रियिक विषयों के लिए तुम सतत लालायित हो, यह उचित नहीं। इसे छोड़कर मेरी उपासना करते हुए मेरे नित्य सुख या प्राप्ति करने का प्रयास करो ॥

भावान्तर १४

हे उपासक ! जिस शरीर में तुम हो, वही निरन्तर प्राण लेता हुआ भी नष्ट होता जा रहा है और अन्ततः समाप्त हो जाएगा। इसमें रहते हुए इन्द्रियों के विषय जिनके लिए तुम सतत लालायित हो, वे भी एक दिन अप्राप्त हो जाएँगे, क्योंकि उनको प्राप्त कराने वाली वे इन्द्रियाँ ही नहीं रहेंगी। अतः सोचो, जिनके पीछे दिन-रात लगे हो, उनका मिलना बन्द हो जाने पर क्या करोगे ? केवल निराशा ही रहेगी तो इनको छोड़कर मेरी उपासना करते हुए मुझे प्राप्त करने का प्रयास करो ॥

भावान्तर १५

हे प्रभो ! जिस शरीर में मैं रह रहा हूँ, वह निरन्तर प्राण लेता हुआ भी नष्ट होता जा रहा है और अन्ततः समाप्त हो जाएगा। इसमें रहते हुए इन्द्रियों के विषय जिनके लिए मैं सन्दिग्ध होकर लालायित हूँ, वे भी एक दिन अप्राप्त हो जाएँगे, क्योंकि उनको प्राप्त कराने वाली वे इन्द्रियाँ ही नहीं रहेंगी। अतः इनके पीछे दिन-रात लगे रहने से केवल निराशा ही रहेगी। अतः इनको छुड़ाकर अपनी उपासना के योग्य बनाएँ !!

भावान्तर १६

हे नित्य एकरस सर्वव्यापक ईश्वर ! निश्चय से मेरा निवास ऐसे संसार में है, जो सतत विनाश की ओर जा रहा है। इससे अधिक अनित्य मेरा यह शरीर है, जो कभी भी क्षणभर में नष्ट हो सकता है। पुनरपि मैं इन ऐन्द्रियिक विषयों से विमुख होकर केवल आपके आश्रित नहीं हो पा रहा हूँ, यद्यपि चाह रहा हूँ। अतः मुझे समर्थ करें ॥

भावान्तर १७

कल के लिए तुम्हारे पास समय नहीं है, क्योंकि तुम्हारा निवासाश्रय चलायमान है। इसलिए इन्द्रियों के भोगों में न लगकर मुझ ईश्वर की प्राप्ति का उद्योग करो। दूसरा अर्थ लिया कि श्वः प्राणः, स यत्र तिष्ठतीति श्वत्थः, न श्वत्थः अश्वत्थः। कल जहाँ अगला प्राण आएगा या नहीं, यह निश्चित नहीं है; वह हृदय तुम्हारा रहने का स्थान किया है ॥

पदार्थ

हे जीवो! जिस जगदीश्वर ने (अश्वत्थे) कल ठहरेगा वा नहीं ऐसे अनित्य संसार में (वः) तुम लोगों की (निषदनम्) स्थिति की (पर्णे) पत्ते के तुल्य चञ्चल जीवन में (वः) तुम्हारा (वसतिः) निवास (कृता) किया (यत्) जिस (पुरूषम्) सर्वत्र परिपूर्ण परमात्मा को (किल) ही (सनवथ) सेवन करो उसके साथ (गोभाजः) पृथिवी, वाणी इन्द्रिय वा किरणों का सेवन करने वाले (इत्) ही तुम लोग प्रयत्न के साथ धर्म में स्थिर (असथ) होओ। ।४। ।

१२ असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय॥ बृहद्. उ. १/३/२८।

भावान्तर १

असतो मा सद्गमय। इस सांसारिकी अनुभूति की अनित्य अवस्था से हटाकर आत्मादि नित्य विषय की अनुभूति कराने वाली अवस्था में स्थापित करें।

तमसो मा ज्योतिर्गमय। निष्कामता के द्वारा इस स्थिति से बाहर निकला जाए; यह ज्ञान दृढ़ व विस्तृत कर दें।

मृत्योर्मामृतं गमय। दुःख व लौकिकसुखेच्छा से हटाकर नित्य सुख से सम्बद्ध रखें॥

भावान्तर २

असतो मा सद्गमय। इस अनित्य शरीर, मन आदि के सम्पर्क से हटाकर मेरे एवं अपने नित्य स्वरूप से सम्बद्ध करें।

तमसो मा ज्योतिर्गमय। इस अज्ञानावस्था से बाहर निकलने का ज्ञान दें।

मृत्योर्मामृतं गमय। इस दुःखद अवस्था से हटाकर सुखद अवस्था से सम्बद्ध करें॥

भावान्तर ३

असतो मा सद्गमय। इस शारीरिक अनित्य अवस्था तथा लौकिक सुखेच्छा की स्थिति से हटाकर नित्य सुख व आत्मविषयक अनुभूति वाली अवस्था में स्थापित करें।

तमसो मा ज्योतिर्गमय। इस स्थिति से बाहर निकलने का ज्ञान दें।

मृत्योर्मामृतं गमय। इस दुःखदावस्था से हटाकर ज्ञान, सुख तक पहुँचाएँ॥

भावान्तर ४

असतो मा सद्गमय। लौकिक अवस्था से हटाकर आध्यात्मिक अवस्था में स्थापित करें।

तमसो मा ज्योतिर्गमय। अज्ञान लौकिक संस्कारों से ज्ञान, आध्यात्मिक संस्कारों से सम्बद्ध करें।

मृत्योर्मामृतं गमय। इस दुःखदावस्था से हटाकर स्वसुख तक पहुँचाएँ॥

भावान्तर ५

असतो मा सद्गमय। यह शरीर, मन आदि का आश्रय अनित्य है और आपका आश्रय नित्य है। अतः अनित्य आश्रय से हटाकर अपना नित्याश्रय प्रदान करें।

तमसो मा ज्योतिर्गमय। किन्तु आपके उस नित्याश्रय का स्वरूप समझ में नहीं आ रहा है कि हम आपमें किस रूप में अवस्थित हैं। अतः उसका ज्ञान दें। मृत्योर्मामृतं गमय। आपकी उस अवस्था को जानने में दुःख होता है, कृपया इसे दूर करें॥

भावान्तर ६

असतो मा सद्गमय। इस अनित्य शरीर, मन, संसार आदि की अनुभूति से हटाकर मूल प्राकृतिक, आत्मगत एवं आप अपने नित्य स्वरूप से सम्बद्ध अनुभूति कराएँ।

तमसो मा ज्योतिर्गमय। इस मिथ्याज्ञान का विरोधी तत्त्वज्ञान दीजिए।

मृत्योर्मामृतं गमय। इस पीड़ाजन्य अवस्था से हटाकर सुखद अवस्था से सम्बद्ध करें॥

भावान्तर ७

दोषयुक्त अवस्था से हटाकर निर्दोष अवस्था में ले चलें। दोष से सम्बन्धित अज्ञान से हटाकर निर्दोष ज्ञान की अवस्था में ले चलें। दोष से सम्बन्धित दुःखों से बचाकर ज्ञान से सम्बन्धित सुख से युक्त करें॥

भावान्तर ८

हे ईश्वर ! मुझे अनित्य सांसारिक अवस्था से हटाकर नित्य आत्मिक अवस्था में ले चलें। अनित्य सांसारिक अवस्था में रखने वाले अज्ञान को हटाकर नित्य आत्मिक अवस्था को दिखाने वाले ज्ञान को दें। अनित्य सांसारिक दुःखों से हटाकर निज नित्य शुद्ध सुख की अवस्था में ले चलें॥

भावान्तर ९

हे ईश्वर ! दो कणों के समान निर्बल सम्बन्ध वाली इस सांसारिक अवस्था से हटाकर आकाश के समान विस्तृत सम्बन्ध वाले स्वयं से मुझे आबद्ध करें। अपने या आपके स्वरूपदर्शन को रोकने वाले अज्ञान को हटाकर उन्हें दिखाने वाला ज्ञान दें। अनित्य सांसारिक दुःखों से हटाकर निज नित्य शुद्ध सुख की अवस्था में ले चलें ॥

भावान्तर १०

हे ईश्वर ! मुझे अनित्य सांसारिक अवस्था से हटाकर नित्य आत्मिक अवस्था में ले चलें। अनित्य सांसारिक अवस्था में रखने वाले अज्ञान को हटाकर नित्य आत्मिक अवस्था को दिखाने वाले ज्ञान को दें। सांसारिक दुःखों से हटाकर निज नित्य शुद्ध सुख की अवस्था को प्राप्त कराइए ॥

भावान्तर ११

असतो मा सद्गमय। इस ऐन्द्रियिक विषयानुभूति की अनित्य अवस्था से हटाकर नित्य विषय की अनुभूति कराने वाली अवस्था में स्थापित करें।

तमसो मा ज्योतिर्गमय। इस स्थिति से बाहर कैसे निकला जाए; यह ज्ञान दें।

मृत्योर्मामृतं गमय। सन्निकट दुःख से हटाकर सुख तक पहुँचाएँ ॥

भावान्तर १२

असतो मा सद्गमय। यह लम्बा-चौड़ा आकार मेरा स्वरूप नहीं है। अतः इस अवस्था से हटाकर स्वयं चेतन पदार्थ-विशेष की अवस्था में स्थापित करें।

तमसो मा ज्योतिर्गमय। मुझे इस शारीर अवस्था को छोड़ने और उस आत्मिक अवस्था को पकड़ने का ज्ञान दें। मृत्योर्मामृतं गमय। दुःखद स्थिति से हटाकर सुखद स्थिति से सम्बद्ध करें ॥

पदार्थ

(असतः) (५/१) असत्य से (मा) (२/१) मुझ को (हटाकर) (सद्) (२/१) सत्य की ओर (गमय) (लेट् म.पु./१) ले चलिए। (तमसः) (५/१) अज्ञानान्धकार से (मा)

(२/१) मुझ को (ज्योतिः) (२/१) ज्ञान की ओर (गमय) (लेट्.म.पु./१) ले चलिए। (मृत्योः) (५/१) मृत्यु दुःख से (मा) (२/१) मुझ को निकालकर (अमृतम्) (२/१) आनन्दरूप सुख (गमय) (लोट्.म.पु./१) प्राप्त कराईए।

१३

असुर्य्या नाम ते लोकाऽअन्धेन तमसावृताः ।
ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥
यजु. ४०/३।

भावान्तर १

असूर्य नाम उस लोक का है, जो घोर अज्ञानमय है। ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन या अपनी आत्म-कल्याण की सदिच्छा का हनन करने वाले लोग मरकर वहीं जन्म पाते हैं ॥

भावान्तर २

हे ईश्वर ! आप की विशेष कृपा, ज्ञान, बल, आनन्द, प्रेरणा, आज्ञा आदि से रहित वे लोक हैं, जो घोर अज्ञानमय हैं और जो सत्य को जानते हुए भी उससे विरुद्ध चलते हैं तथा असत्य को जानते हुए भी उसको स्वीकार करते हैं, वे ही उस लोक को प्राप्त होते हैं ॥

पदार्थ

जो (लोकाः) देखनेवाले लोग (अन्धेन) अन्धकाररूप (तमसा) ज्ञान का आवरण करनेहारे अज्ञान से (आवृताः) सब ओर से ढंपे हुए (च) और (ये) जो (के) कोई (आत्महनः) आत्मा के विरुद्ध आचरण करनेहारे (जनाः) मनुष्य हैं (ते) वे (असुर्य्या) अपने प्राणपोषण में तत्पर अविद्यादि दोषयुक्त लोगों के सम्बन्धी उनके पापकर्म करनेवाले (नाम) प्रसिद्ध में होते हैं (ते) वे (प्रेत्य) मरने के पीछे (अपि) और जीते हुए भी (तान्) उन दुःख और अज्ञानरूप अन्धकार से युक्त भोगों को (गच्छन्ति) प्राप्त होते हैं।।३।।

१४

ईशा वास्यमिदꣳ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥
यजु. ४०/१ ।

भावान्तर १

हे ईश्वर ! सर्वत्र आप ही आप हैं। सम्पूर्ण जगत् आपसे आच्छादित = आपके स्वामित्व और नियन्त्रण में है। अतः इनका प्रयोग आपकी अनुमति पूर्वक ही करना है, क्योंकि यह न हमारा, न हमारे में से किसी का है। आपकी प्राप्ति हेतु यह आपके द्वारा साधन रूप में उपलब्ध है ॥

भावान्तर २

हे ईश्वर ! सर्वत्र आप ही आप हैं। इनका प्रयोग आपकी अनुमति पूर्वक ही करना है, क्योंकि यह न हमारा, न हमारे में से किसी का है। यह तो आपका है और आपको छोड़कर हम इसके पीछे नहीं लगेंगे, अपितु इसको छोड़कर आपके पीछे लग रहा हूँ ॥

भावान्तर ३

हे ईश्वर ! आप कहीं अन्यत्र नहीं हैं, अपितु यहीं विद्यमान हैं। क्योंकि इस गतिमान् संसार का एक-एक कण आपसे व्याप्त है और पूर्णतः आपके अधिकार में है। आपकी आज्ञा के विरुद्ध इसका उपभोग करने से दुःख ही मिलेगा। अतः आपकी उपेक्षा करके इसके प्रति लोभ करने का भी कोई औचित्य नहीं है ॥

भावान्तर ४

यह सम्पूर्ण जगत् ईश्वर से परिपूर्ण है और उसकी सम्पत्ति है तथा उसी के अधिकार में है। अतः स्वेच्छा से इसका प्रयोग नहीं करना है तथा इसको अब छोड़ना भी है, सदा पकड़े नहीं रहना है; इस भाव से साधन के रूप में प्रयोग करना है ॥

भावान्तर ५

हे सर्वव्यापक ईश्वर ! आप से मेरी आत्मा अर्थात् मैं, मेरा शरीर आदि सारा जगत् व्याप्त है। अतः मुख्य रूप से आपके आनन्द का उपभोग करते हुए आपकी आज्ञानुसार त्यागभाव से संसार का उपयोग करूँ। इनका लोभ न करूँ॥

भावान्तर ६

हे सर्वव्यापक ईश्वर ! आप से मैं, मेरा शरीर आदि सारा जगत् व्याप्त है। अतः आप प्राप्य हैं। एतदर्थ त्यागभाव से संसार का उपयोग बताइए, कैसे करूँ? यह सब तो आपका ही है॥

भावान्तर ७

हे सर्वव्यापक ईश्वर ! यह मेरा शरीर आदि सारा जगत् आप से व्याप्त है। इसी प्रकार आप मुझमें भी व्यापक हैं। परन्तु यह शरीर आदि समस्त पदार्थ आपके हैं और आपकी प्राप्ति के लिए हैं। अतः इनको सदा साथ रखना या अपना मानना हमारे लिए अहितकर है, त्यागभाव से इसका उपयोग करते हुए हितकर है॥

भावान्तर ८

हे ईश्वर ! इस सम्पूर्ण जगत् में आप परिपूर्ण हैं और यह आपकी सम्पत्ति है तथा आपके ही अधिकार में है। अतः आपकी आज्ञा के विरुद्ध स्वेच्छा से इसका प्रयोग नहीं करना है, किन्तु आत्मज्ञान एवं आपका ज्ञान करने हेतु साधन के रूप में ही इनका प्रयोग करना है॥

भावान्तर ९

हे ईश्वर ! यह सम्पूर्ण जगत् आप से परिपूर्ण है और आपकी सम्पत्ति है तथा आपके ही अधिकार में है। पुनरपि इसमें जो सुख है, उसे आपकी उपेक्षा करके अपनाने की प्रवृत्ति उत्पन्न कर लेता हूँ, जो कि अनुचित है। अतः आत्म-ज्ञान एवं आपकी प्राप्ति हेतु साधन के रूप में प्रयोग करना है, किन्तु आपकी आज्ञा के विरुद्ध स्वेच्छा से इसका प्रयोग नहीं करना है॥

भावान्तर १०

हे ईश्वर ! जैसे यह सारा दृष्टादृष्ट अनित्य सुख-साधन चलायमान जगत् आपसे आच्छादित = आपमय है, वैसे ही मैं भी आपमय हूँ। इनके समान मुझमें भी आप व्यापक हैं। इसलिए इनको हम किसी अन्य दीन-दुर्बल का मानकर न तो छीनने का प्रयास करेंगे, न अपनी आवश्यकता से अधिक संगृहीत करेंगे, अपितु इन सबको छोड़कर प्रथम आपको ही प्राप्त करना चाहता हूँ॥

भावान्तर ११

हे ईश्वर ! यह सम्पूर्ण दृष्टादृष्ट अनित्य सुख-साधन चलायमान जगत् आपसे आच्छादित = आपके स्वामित्व और नियन्त्रण में है। हमें इन पर से अपना स्वामित्व हटाकर आपकी आज्ञानुसार ही इसका उपयोग करना है। स्वेच्छा से इसका प्रयोग नहीं करना है तथा इसको अब छोड़ना भी है, सदा पकड़े नहीं रहना है; इस भाव से साधन के रूप में प्रयोग करना है॥

भावान्तर १२

हे ईश्वर ! यह सारा दृष्टादृष्ट अनित्य सुख-साधन चलायमान जगत् आपसे आच्छादित = आपके स्वामित्व और नियन्त्रण में है। इन पर से अपना स्वामित्व हटाकर आपकी आज्ञानुसार ही इसका उपयोग करना है। इसलिए इनको हम किसी अन्य दीन-दुर्बल का मानकर न तो छीनने का प्रयास करेंगे, न अपनी आवश्यकता से अधिक संगृहीत करेंगे॥

भावान्तर १३

हे ईश्वर ! यह परिवर्तमानशील चलायमान सम्पूर्ण संसार आपकी व्यापकता से आच्छादित है। अतः अपनत्व की भावना से रहित होकर ही हमें इसका उपभोग करना होगा। पुनः मैं क्यों इसे अपनाने के लिए व्यग्र हो रहा हूँ। प्रभो ! यह सब आप का है। आपने ही हमें इसको उपलब्ध कराया है तो मैं इसकी चिन्ता क्यों करूँ। आप स्वयं उचित रूप में हमारे लिए उपस्थित करेंगे ही। जैसे मां स्वयं शिशु के लिए भोजन उपलब्ध कराती ही है॥

पदार्थ

(यत्) (१/१) जो (इदम्) (१/१) यह (प्रकृति से पृथ्वीपर्यन्त) (सर्वम्) (१/१) सब (जगत्याम्) (७/१) सृष्टि में (जगत्) (१/१) चरप्राणीमात्र (ईशा) (३/१) परमात्मा से (वास्यम्) (१/१) आच्छादित। व्याप्त है। (तेन) (३/१) अतः। इसलिए (तुम) (त्यक्तेन) (३/१) त्यागपूर्वक भाव से (भुञ्जीथाः) (विधिलिङ्.म.पु./१) उपभोग करो। (कस्य) (६/१) किसी के (स्वित्) (अ.प.) भी (धनम्) (१/१) वस्तुमात्त की (मा) (अ.प.) मत (गृधः) (लोट्.म.पु./१) अभिलाषा कर।

१५

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते॥

ऋ.१/१६४/३९।

भावान्तर १

ऋचाओं का वास्तविक ज्ञानस्वरूप तो आप आनन्दस्वरूप अविनाशी परम आकाश में अवस्थित है। आप में ही सूर्य-चन्द्र आदि सारे देव विद्यमान हैं। यदि आपको, सर्वज्ञ चेतन तत्त्व को नहीं जाना तो केवल बाह्य गुरुओं और शास्त्रों के शब्द से और लिपि रूप इन भौतिक ऋचाओं से कुछ नहीं हो पाएगा। क्योंकि वे सब भी आप परम तत्त्व को जानने के लिए अपने शब्दों से संकेत कर रहे हैं॥

भावान्तर २

हे ईश्वर ! आप में सारे ज्ञान तथा सब दिव्य पदार्थ विद्यमान हैं। आपको जाने बिना इधर-उधर का ज्ञान कर लिया तथा कुछ लौकिक पदार्थ संचित कर लिए तो उससे क्या हो जाएगा ?आपकी आज्ञा के विरुद्ध भोगकर भी कृतघ्न बनेगा तथा अकृतार्थ ही रहेगा। अतः इनके साथ आप की प्राप्ति अनिवार्य है सो मुझे अपना स्वरूप विदित कराएँ॥

भावान्तर ३

हे प्रभो ! पदार्थों के वास्तविक स्वरूप बताने वाली ऋचाओं का भी वास्तविक स्वरूप तो आप अनन्त, अविनाशी, आनन्दस्वरूप परम आकाश में

अवस्थित है। जिसमें कि ये सूर्य-चन्द्र आदि प्रकाशक लोक तथा अन्य सुख-साधन के ज्ञान, प्रयत्न रूप मूल भी विद्यमान हैं। अतः कोई आपको छोड़कर केवल इन ऊपरी साधनों और उनके संकेतक शब्दों में ही लगा रहता है तो उसे कुछ विशेष नहीं मिलेगा, क्योंकि जो इन समस्त साधनों व इनको बताने वाली ऋचाओं का भी निर्माता, धारणकर्त्ता और स्वामी है, उसी को प्राप्त करने से सब प्राप्त हो सकते हैं॥

भावान्तर ४

सब पदार्थों के वास्तविक स्वरूप को बताने वाले वाक्य तो आप आनन्दस्वरूप अविनाशी परम आकाश में अवस्थित हैं तथा आप में सूर्य-चन्द्र आदि देव भी विद्यमान हैं। अतः आपको ही मैं जानना चाहता हूँ, क्योंकि केवल इन शब्दों और पदार्थों को जानने से कुछ नहीं होता दिखता है॥

भावान्तर ५

हे ईश्वर ! सारे शब्दों के ज्ञान-विज्ञान और सब दिव्य पदार्थ आपके अन्दर हैं। अतः यदि कोई इन पदार्थों या शब्दों को जान ले, पर आपको नहीं जाने तो ये पदार्थ और शब्द उनको कुछ नहीं दे पाएँगे। परन्तु जो इन पदार्थों या शब्दों के साथ आपको जान लेता है, उसको सब कुछ प्राप्त हो जाता है॥

पदार्थ

(यस्मिन्) (७/१) जिस (परमे) (७/१) सर्वोत्तम (व्योमन्) (१/१) व्यापक (अक्षरे) (७/१) नाशरहित परमात्मा में (ऋचः) (१/३) वेद और (विश्वे) (१/३) सब (देवाः) (१/३) लोक, सब इन्द्रियाँ, समस्त विद्वान् (अधि नि,दुः) (लिट्.प्र.पु./३) स्थित होते हैं। (यः) (१/१) जो (जन) (तत्) (२/१) उस व्यापक परमात्मा को (न) (अ.प.) न (वेद) (लट्.पर.पु./१) जानता। मानता है, ध्यान करता है (उसके लिए) (ऋचा) (३/१) वेद शास्त्र (किं) (१/१) क्या (करिष्यति) (लट्.प्र.पु./१) कर लेगा (ये) (१/३) जो (तत्) (२/१) उस ब्रह्म को (विदुः) (लिट्.प्र.पु./३) जानते हैं (ते, इमे, इत्)वे ही तो (समासते) परम पद को प्राप्त होते हैं।

१६

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

यजु. ३१/३।

भावान्तर १

हे ईश्वर ! यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड आपकी महत्ता का ज्ञापक है। आप तो इससे बहुत महान् हैं। आप का नित्य सुखस्वरूप जितना अन्यत्र फैला है, उसके चौथाई से भी कम में यह ब्रह्माण्ड समा जाता है। मैं आपके उसी अनन्त स्वरूप को देखना चाह रहा हूँ॥

भावान्तर २

हे अनन्त परमेश्वर ! ये दृष्टादृष्ट संसार तो आपके बड़प्पन को बता ही रहे हैं, किन्तु आपका बड़प्पन तो इससे बहुत अधिक है। हमारे पास न तो उतने को जानने की सामर्थ्य है, न कोई पूरे को जनाने का साधन ही हो सकता है। यह सम्पूर्ण जगत् तो आपके एक अंश में ही समा जाता है। वस्तुतः इस उपलक्षण से हम इतना जान सकते हैं कि इससे कई गुना आपका आनन्दमय स्वरूप दिव्यलोक में फैला हुआ है, जिसे आप भी जानते होंगे॥

भावान्तर ३

हे अनन्त परमेश्वर ! ये दृष्टादृष्ट संसार जहाँ तक है, जितनी विशेषताएँ रखता है, उसकी रचना-व्यवस्था आदि का विज्ञान तथा सामर्थ्य तो आप में है ही। इतना तो आपका बड़प्पन है ही, अपितु इससे बहुत अधिक भी है। हमारे पास न तो उतने को जानने की सामर्थ्य है, न हम पूरा जान सकते हैं। पुनरपि यह सम्पूर्ण जगत् तो आपके एक अंश में ही समा जाता है। वस्तुतः इस उपलक्षण से हम इतना जान सकते हैं कि इससे कई गुना आपका आनन्दमय स्वरूप दिव्यलोक में फैला हुआ है, जिसे आप भी जानते होंगे॥

पदार्थ

हे मनुष्यो! (अस्य) इस जगदीश्वर का (एतावान्) यह दृश्य-अदृश्य ब्रह्माण्ड (महिमा) महत्त्वसूचक है (अतः) इस ब्रह्माण्ड से यह (पुरुषः) परिपूर्ण परमात्मा (ज्यायान्) अति प्रशंसित और बड़ा है (च) और (अस्य) इस ईश्वर के (विश्वा) सब (भूतानि) पृथिव्यादि चराचर जगत् एक (पादः) अंश है और (अस्य) इस जगत्स्रष्टा का (त्रिपाद्) तीन अंश (अमृतम्) नाशरहित महिमा (दिवि) द्योतनात्मक अपने स्वरूप में है।।३।।

१७

कया त्वं न ऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्।
कया स्तोतृभ्यऽआ भर ॥यजु. ३६/७।

भावान्तर १

हे परम दयालो प्रभो ! आप उपाय के किन-किन प्रकारों से सतत हमारी रक्षा कर रहे हैं, यह हम नहीं जान सकते हैं। आप हमारी स्तुतियों से प्रसन्न होकर कब हमको आनन्दित कर देते हैं, इसका भी निश्चय हमको नहीं हो सकता। अतः अब तो केवल आप की स्तुति-प्रार्थना और उपासना निरन्तर करते ही रहेंगे और उचित अवसर देखकर आप हमें अवश्य कृतार्थ करेंगे॥

भावान्तर २

हे सर्वरक्षक आनन्दस्वरूप परमात्मन् ! आप की रक्षा के अनन्त प्रकार हैं। अतः आप किस-किस प्रकार से कब-कब हमारी रक्षा करते और किन-किन साधनों से हमको आनन्दित करते हैं; यह हम नहीं जान सकते हैं। इसी प्रकार किन स्तुतियों से प्रसन्न होंगे; यह मैं न जानता हुआ भी विविध प्रकार से स्तुति कर रहा हूँ और आशा करता हूँ कि आप मुझे आनन्द से भरते रहेंगे॥

भावान्तर ३

हे सुख से तृप्त कर देने वाले सुखस्वरूप सर्वज्ञेश्वर ! आप सदैव हमारी रक्षा करते हुए अनेक विध साधनों और प्रकारों से हमको सुख से पूरित करते रहते हैं।

परन्तु हम आपके उन सभी साधनों और प्रकारों को नहीं जान सकते। परन्तु उनमें से स्तुति-प्रार्थना-उपासना भी एक साधन है। अतः हम अनेक प्रकार से आपकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करने हेतु प्रयत्नशील रहेंगे ॥

भावान्तर ४

हे सुखवर्षक सर्वरक्षक परमेश्वर ! आपके पास हमको सुखी करने के अनन्त साधन हैं। पता नहीं किस विधि से, कब हमारी रक्षा कर देते हैं। कोई एक ज्ञान विज्ञान दीजिए, जिससे मैं आपके उस अनुग्रह को सदा प्राप्त करता रहूँ ॥

भावान्तर ५

हे प्रभो ! आप अनन्त रक्षासाधनों से प्रतिक्षण हमारी रक्षा कर रहे हैं। परन्तु हम उसे नहीं समझ पाते कि कैसे-कैसे आप इतना कर लेते हैं। इसी प्रकार आपकी प्रसन्नता हेतु कौन सी स्तुति विशेष है, यह भी हम नहीं जान पाते। अतः अपनी उपलब्ध ज्ञान सामर्थ्य के आधार पर ही हम आपकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करते हैं। आप उसी से प्रसन्न होकर हमारे ऊपर कृपा करते रहिए !

पदार्थ

हे (वृषन्) सब ओर से सुखों को वर्षानेवाले ईश्वर (त्वम्) आप (कया) किस (ऊ त्या) रक्षण आदि क्रिया से (नः) हमको (अभि, प्र, मन्दसे) सब ओर से आनन्दित करते और (कया) किस रीति से (स्तोतृभ्यः) आपकी प्रशंसा करनेवाले मनुष्यों के लिये सुख को (आ, भर) अच्छे प्रकार धारण कीजिये ।।७।।

१८

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳ समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।
यजु. ४०/२।

भावान्तर १

हे अनन्त क्रियास्वरूप परमेश्वर ! आपकी आज्ञा है कि अपने पुरुषार्थ के बल पर हम इस जीवन को चलाएँ। इसके लिए अन्यों पर निर्भर न रहें। आपके

स्वामित्व में सब कार्यों का सम्पादन करें। इस प्रकार से किया हुआ कर्म हमारे बन्धन का कारण नहीं होगा ॥

भावान्तर २

हे सर्वरक्षक प्रभो ! इस संसार में आपकी प्राप्ति के अनुकूल निष्काम कर्म तथा उपासना करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कुछ-कुछ ठीक है। क्योंकि इस प्रकार किए गए कर्म संसार का ऋणी नहीं बनाते हैं तथा मृत्यु के उपरान्त भी संकल्प के विपरीत फल नहीं देते हैं। अन्यथा आपकी उपेक्षा और लौकिक भोगों की प्राप्ति की इच्छा से किया गया कर्म कर्त्ता को संसार से बाँधकर रखता है। अतः मरने के उपरान्त भी वह आपके नित्यानन्द को प्राप्त होने नहीं देता है ॥

पदार्थ

मनुष्य (इह) (अ.प.) इस संसार में (कर्माणि) (२/३) कर्मों को (निष्काम कर्मों को) (कुर्वन्) (१/१) करता हुआ (एव) (अ.प.) ही (शतम्) (१/१) सौ (समाः) (१/३) वर्ष (जिजीविषेत्) (विधि.प्र.पु./१) जीने की इच्छा करें। (एवम्) (अ.प.) ऐसा करने से (त्वयि) (७/१) तुझ (नरे) (७/१) मनुष्यों में (कर्म) (१/१) अधर्मयुक्त कर्म (लिप्यते) (लट्.कर्म.वा.प्र.पु./१) लिप्त (न) (अ.प.) नहीं होता (इतः) (५/१) इससे (अन्यथा) (अ.प.) और प्रकार (लिप्त न होने का उपाय) (न) (अ.प.) नहीं (अस्ति) (लट्.प्र.पु./१) है।

११

गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रतो उद्वंशमिव येमिरे ॥ऋक्.१/१०/१।

भावान्तर १

आप अत्यन्त श्रेष्ठ हैं तथा असंख्य उपकार सदैव करते रहते हैं। अतः गाने वाले आपको गाते रहते हैं। स्तुति करने वाले स्तुति करते रहते हैं। इसी प्रकार विद्वान् आपकी सत्ता को लोक में प्रतिष्ठित करने में लगे रहते हैं। ऐसे ही मैं भी आपका स्वरूप स्पष्ट करता जाऊँगा ॥

भावान्तर २

आप अत्यन्त श्रेष्ठ हैं। अतः गाने वाले तालछन्दमय संगीत से आपकी स्तुति करते हैं। किन्तु तत्त्ववेत्ता बिना तालछन्द के शब्दार्थ-सम्बन्ध से आपकी स्तुति करते हैं। मैं भी ऐसे ही आपकी स्तुति कर रहा हूँ। प्रभो ! आप मुझे इतना समर्थ बनाएँ कि जैसे विद्वान् अपनी वंश परम्परा बढ़ाते जाते हैं, वैसे ही मैं आपके स्वरूप को संसार में विस्तारित कर सकूँ ॥

भावान्तर ३

आप हैं और अत्यन्त श्रेष्ठ हैं। अतः सब प्रकार भक्त लोग आपकी प्रशंसा करते रहते हैं। गाने वाले संगीत गा-गाकर आपकी स्तुति करते हैं। मैं तो गाना नहीं जानता। अतः बिना संगीत के स्तुति कर रहा हूँ और जैसे विद्वान् अपनी वंश परम्परा को बढ़ाते जाते हैं, वैसे ही मैं आपके यश को संसार में प्रकाशित करूँगा ॥

भावान्तर ४

हे आनन्दस्वरूप परमेश्वर ! आप इतने श्रेष्ठ हैं कि गाने वाले आपको गाते ही रहते हैं। मैं तो गाना नहीं जानता। अतः बिना प्रवाह के स्तुति कर रहा हूँ। जैसे विद्वान् अपनी वंश परम्परा को बढ़ाते जाते हैं, वैसे ही मैं आपका स्वरूप स्पष्ट करता जाऊँगा ॥

भावान्तर ५

आप इतने श्रेष्ठ हैं कि गाने वाले आपको गाते ही रहते हैं। मैं तो गाना नहीं जानता। अतः बिना प्रवाह के स्तुति कर रहा हूँ। जैसे विद्वान् अपनी वंश परम्परा को बढ़ाते जाते हैं, वैसे ही मैं आपके लोक में आपका प्रचार करता रहूँगा ॥

पदार्थ

हे (शतक्रतो) असंख्यात कर्म और उत्तम ज्ञानयुक्त परमेश्वर! (ब्रह्माणः) जैसे वेदों को पढ़कर उत्तम-उत्तम क्रिया करनेवाले मनुष्य श्रेष्ठ उपदेश, गुण और अच्छी-अच्छी शिक्षाओं से (वंशम्) अपने वंश को (उद्येमिरे) प्रशस्त गुणयुक्त करके उद्यमवान् करते हैं, वैसे ही (गायत्रिणः) जिन्हों के गायत्र अर्थात् प्रशंसा

करने योग्य छन्दराग आदि पढ़े हुए धार्मिक और ईश्वर की उपासना करनेवाले हैं, वे पुरुष (त्वा) आपकी (गायन्ति) सामवेदादि के गानों से प्रशंसा करते हैं, तथा (अर्किण:) अर्क अर्थात् जो कि वेद के मंत्र पढने के नित्य अभ्यासी हैं, वे (अर्कम्) सब मनुष्यों को पूजने योग्य (त्वा) आपका (अर्चन्ति) नित्य पूजन करते हैं ।।१।।

२०

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके ।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ॥

यजु . ४०/५ ।

भावान्तर १

आप हमारी आत्मा में स्थिर रहते हुए हमको प्रेरित करने वाले हैं। आप दूर-दूर तक होते हुए भी हमारे पास भी हैं। आप सबके अन्दर-बाहर विद्यमान हैं ॥

भावान्तर २

आप निष्क्रिय नहीं हैं, किन्तु हमारी आत्मा में स्थिर रहते हुए हमको प्रेरित करने वाले हैं। आप दूर-दूर तक होते हुए भी हमारे पास भी हैं। आप सबके अन्दर-बाहर विद्यमान हैं ॥

भावान्तर ३

हे ईश्वर ! आप एक निश्चल सत्ता हैं और अन्यों को प्रेरित करने वाले हैं। आप दूर-दूर तक व्यापक हैं तथा निकट से निकट में विद्यमान हैं। यह तो निश्चित है कि आप हमारी आत्मा में विद्यमान हैं तथा स्थिर रहते हुए हमको प्रेरित करते रहते हैं। इसी प्रकार सर्वप्रेरक होकर अन्य सबके अन्दर-बाहर विद्यमान हैं। परन्तु आपको उपलब्ध नहीं कर पा रहा हूँ, इसमें मेरी अज्ञानता ही बाधक लग रही है। मुझे जुड़ना नहीं आ रहा है ॥

भावान्तर ४

आप हमारी आत्मा में स्थिर रहते हुए हमको प्रेरित करते रहते हैं। विभु होने से आप दूर होते हुए हमारे पास भी हैं। आप सबके अन्दर-बाहर विद्यमान हैं। हम आपसे रहित या पृथक् कभी नहीं हैं ॥

भावान्तर ५

हे सर्वव्यापक आनन्दस्वरूप ईश्वर ! आप स्वयं स्थिर रहते हुए प्रकृति और हम सब जीवात्माओं को प्रेरित करने वाले हैं। आप दूर से दूर तथा निकट से निकट होते हुए हम सबके भीतर और बाहर विद्यमान हैं। मैं आपके इस स्वरूप को प्रत्यक्ष रूप में जानना चाहता हूँ ॥

भावान्तर ६

हे अनन्त सक्रिय प्रभो ! हमारी आत्मा में स्थिर रहते हुए हमको प्रेरित करने वाले हैं। आप दूर-दूर तक होते हुए हमारे में भी हैं। इस प्रकार अन्दर-बाहर विद्यमान हैं ॥

भावान्तर ७

हे ईश्वर ! आप एक निश्चल सत्ता हैं और अन्यों को प्रेरित करने वाले हैं। आप दूर-दूर तक व्यापक हैं तथा निकट से निकट में विद्यमान हैं। यह तो निश्चित है कि आप स्थिर रहते हुए हमको प्रेरित करते रहते हैं। अतः आप हमारी आत्मा में विद्यमान हैं। इसी प्रकार सर्वप्रेरक होकर अन्य सबके अन्दर-बाहर विद्यमान हैं। परन्तु आपको उपलब्ध नहीं कर पा रहा हूँ, इसमें मेरी अज्ञानता ही बाधक लग रही है। मुझे जुड़ना नहीं आ रहा है। कृपया अपनी सद्यः प्रेरणा से अनुगृहीत करें ॥

भावान्तर ८

हे प्रभो ! आप हमारी आत्मा में स्थिर रहते हुए हमको विशेष ज्ञान देकर प्रेरित करते रहते हैं तथा हमारे अनुकूल ज्ञान साधन को धारण कर पुनः हमारे लिए उपस्थित कर सके, ऐसी व्यवस्था हमारे मन में करते हैं। तभी तो आपके वेदमन्त्र संस्कार रूप में हमारे मन में जम जाते हैं और हमारे द्वारा प्रेरणा पाकर पुनः शब्द और तत्सम्बद्ध अर्थज्ञान को प्रकट करने लगते हैं। इस समय आप इसे देख रहे हैं। वस्तुतः आपने एतदर्थ प्रयत्न किया है, तब ये साधन और ज्ञान हमें उपलब्ध हो रहे हैं। आप सर्वव्यापक होने से अन्यत्र भी विद्यमान हैं तथा उसी व्यापकता के कारण दूर होते हुए भी हमारे पास हैं। आप सबके अन्दर-बाहर विद्यमान हैं। परन्तु मैं अकिंचन होकर भी आपकी ओर दृष्टिपात नहीं कर रहा हूँ, अपितु इन साधनों की

ओर ही ताक रहा हूँ। हमारा यह दुर्भाग्य व दोष है। आपको आपके ये साधन हमें समर्पित करना तथा अपने वास्तविक स्वरूप को स्वीकार करना चहिए। यही आपके प्रति सच्चा समर्पण होगा और तत्पश्चात् आपका सान्निध्य हमें प्राप्त हो जाएगा ॥

भावान्तर ९

हे प्रभो ! आप हमारी आत्मा में स्थिर रहते हुए हमको प्रेरित करने वाले हैं। आप दूर-दूर तक होते हुए भी हमारे पास भी हैं। आप समस्त चराचर जगत् के अन्दर-बाहर विद्यमान हैं ॥

पदार्थ

हे मनुष्यो! (तत्) वह ब्रह्म (एजति) मूर्खों की दृष्टि से चलायमान होता (तत्) (न, एजति) अपने स्वरूप से न चलायमान और न चलाया जाता (तत्) वह (दूरे) अधर्मात्मा अविद्वान् अयोगियों से दूर अर्थात् क्रोड़ों वर्ष में भी नहीं प्राप्त होता (तत्) वह (उ) ही (अन्तिके) धर्मात्मा विद्वान् योगियों के समीप (तत्) वह (अस्य) इस (सर्वस्य) सब जगत् वा जीवों के (अन्तः) भीतर (उ) और (तत्) वह (अस्य, सर्वस्य) इस प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जगत् के (बाह्यतः) बाहर भी वर्त्तमान है।।५।।

२१

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः ।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ताऽआपः स प्रजापतिः ॥

यजु . ३२/१ ।

भावार्थ

आप ही ज्ञाननिधि हैं, आप ही कालों के विभाजक हैं, आप ही सर्वोत्तम बल हैं, आप ही सबके आह्लादक है, आप ही सब जीवों के कर्मों के संचायक व फलदाता हैं, आप ही सबसे महान् हैं, आप ही सर्वत्र प्राप्त हैं, आप ही सृष्टिकर्त्ता हैं ॥

पदार्थ

हे मनुष्यो! (तत्) वह सर्वज्ञ, सर्वव्यापि, सनातन, अनादि, सच्चिदानन्दस्वरूप, नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्तस्वभाव, न्यायकारी, दयालु, जगत् का

स्रष्टा, धारणकर्ता और सबका अन्तर्यामी (एव) ही (अग्नि:) ज्ञानस्वरूप और स्वयंप्रकाशित होने से अग्नि (तत्) वह (आदित्य:) प्रलय समय सबको ग्रहण करने से आदित्य (तत्) वह (वायु:) अनन्त बलवान् और सबका धर्त्ता होने से वायु (तत्) वह (चन्द्रमा:) आनन्दस्वरूप और आनन्दकारक होने से चन्द्रमा (तत्, एव) वही (शुक्रम्) शीघ्रकारी वा शुद्ध भाव से शुक्र (तत्) वह (ब्रह्म) महान् होने से ब्रह्म (ता:) वह (आप:) सर्वत्र व्यापक होने से आप (उ) और (स:) वह (प्रजापति:) सब प्रजा का स्वामी होने से प्रजापति है ऐसा तुम लोग जानो ।।१।।

२२

तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते।
विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥ ऋ. १/२२/२१।

भावान्तर १

हे सर्वव्यापक परमेश्वर ! शास्त्रानुशीलन करने में समर्थ, साधना और आपकी आज्ञानुसार आचरण में समर्थ, आपकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना में तत्पर और आपकी प्राप्ति में सचेत विद्वान् लोग आपके आनन्दस्वरूप की प्राप्ति का मार्ग जानकर आपको प्राप्त कर लेते हैं। मैं भी एतदर्थ उत्सुक हूँ। कृपाकर मेरी कामना को भी सफल करें॥

भावान्तर २

हे सर्वव्यापक परमेश्वर ! शास्त्रानुशीलन, साधना और आपकी आज्ञानुसार आचरण में समर्थ, आपकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करने तथा आपकी प्राप्ति में तत्पर विद्वान् आपके आनन्दस्वरूप की प्राप्ति का मार्ग जानकर उसे प्राप्त कर लेते हैं। मैं भी एतदर्थ उत्सुक हूँ। कृपाकर मेरी कामना को सफल करें॥

भावान्तर ३

हे ईश्वर ! प्रत्यक्ष व शास्त्र के आधार पर तर्क व अनुमान से अर्थ को सिद्ध करने में समर्थ विद्वान् आपकी प्राप्ति के लिए अपने व आपके स्वरूप को जानने में तत्पर रहते हुए आपके व्यापक आनन्दमय मोक्ष पद को प्राप्त कर ही लेते हैं॥

पदार्थ

(तद्) उस (विप्रासः) शास्त्र अनुशीलन में समर्थ विद्वान् (विपपन्यवः) साधना और आपकी आज्ञा पालन में तत्पर (जागृवांसः) सचेत् (समिन्धते) प्राप्त कर लेते हैं। (विष्णोः)सर्वव्यापक ईश्वर के (यत्) जो (परमम्) सर्वोत्कृष्ट (पदम्) स्वरूप को।

२३ **तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।**
दिवीव चक्षुराततम्॥ऋ. १/२२/२०।

भावान्तर १

हे ईश्वर ! विद्वान् सदैव आपके महान् आनन्दस्वरूप का ध्यान करते रहते हैं, जो कि सूर्य की किरणों के समान सर्वत्र व्याप्त है। कृपया अपने उस स्वरूप की अनुभूति कराइए॥

भावान्तर २

हे सर्वव्यापक परमेश्वर ! ध्यानी विद्वान् लोग आपके जिस आनन्दस्वरूप का अनुभव करते रहते हैं, मैं भी उसको पाने के लिए उत्सुक हूँ। जैसे सूर्य की किरणें द्युलोक में भरी रहती हैं और चक्षु उसको ग्रहण करता रहता है, उसी प्रकार मैं भी सदैव आपसे अनुप्राणित रहूँ। यह जो अन्दर उच्चारण हो रहा है, यह उसी के कारण हो रहा है। यह उच्चारण अपने यन्त्रकर्त्ता को ही तो बता रहा है॥

भावान्तर ३

प्रभो ! विद्वान् योगी भक्तजन आपके व्यापक आनन्दस्वरूप को सदा अनुभव करते रहते हैं। जैसे कि सूर्य की सर्वत्र व्याप्त किरणों का सम्बन्ध उसके ग्राहक चक्षु से बना रहता है। वैसे ही मैं भी सतत आपके स्वरूप को अनुभव करना चाह रहा हूँ, पर नहीं हो रहा है। कृपया सहायता कीजिए !!

भावान्तर ४

हे सर्वव्यापक परमेश्वर ! ध्यानी विद्वान् लोग आपके जिस आनन्दस्वरूप का सदैव अनुभव करते रहते हैं, मैं भी उसी की अनुभूति के लिए समुत्सुक हूँ। जैसे

सूर्य की किरणें द्युलोक में भरी रहती हैं और चक्षु उसको ग्रहण करता रहता है, उसी प्रकार मैं भी सदैव आपसे अनुप्राणित रहूँ। अतः ऐसी कृपा कीजिए ॥

भावान्तर ५

हे ईश्वर ! विद्वान् सदैव आपके जिस नित्य सुखस्वरूप को स्पष्टतया अनुभव करते रहते हैं। जैसे आँखों की व्याप्ति में सर्वत्र प्रकाश दिखाई देता रहता है। इस समय मैं भी वैसा ही अनुभव कर रहा हूँ। प्रभो ! आपका महान् धन्यवाद !

भावान्तर ६

हे ईश्वर ! विद्वान् सदैव आपके नित्य सुखस्वरूप को स्पष्टतया अनुभव करते रहते हैं। जैसे आँखों की व्याप्ति में सर्वत्र प्रकाश दिखाई देता रहता है। अतः मुझे भी इस अवस्था से सम्पन्न करें !

भावान्तर ७

विद्वान् सदैव ईश्वर के नित्य सुखस्वरूप को ही स्पष्टतया अनुभव करते रहते हैं। जैसे आँखों की व्याप्ति में सर्वत्र प्रकाश दिखाई देता रहता है। पर तुम मूर्ख हो कि लौकिक सुख को दिनभर देखते रहते हो ॥

पदार्थ

(सूरयः) धार्मिक बुद्धिमान् पुरुषार्थी विद्वान् लोग (दिवि) सूर्य आदि के प्रकाश में (आततम्) फैले हुए (चक्षुरिव) नेत्रों के समान जो (विष्णोः) व्यापक आनंदस्वरूप परमेश्वर का विस्तृत (परमम्) उत्तम से उत्तम (पदम्) चाहने जानने और प्राप्त होने योग्य उक्त वा वद्यमाण पद है (तत्) उस को (सदा) सब काल में विमल शुद्ध ज्ञान के द्वारा अपने आत्मा में (पश्यन्ति) देखते हैं।।२०।।

२४

तम आसीत्तमसा गूढमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिनाजायतैकम्॥
ऋ. १०/१२९/३।

भावान्तर १

हे ईश्वर ! मैं तो थोड़े से अन्धकार से घबरा जाता हूँ, परन्तु पहले तो

अन्धकार ही अन्धकार था। यह सारा संसार अन्धकार में डूबा हुआ था। इसके होने के कोई लक्षण नहीं थे। इसका मूल जो प्रकृति है, वह भी उसी तुच्छ तम से ढकी थी। पुनः आपके ज्ञान और पुरुषार्थ से प्रकृति से सर्वप्रथम महत्तत्त्व उत्पन्न हुआ। आगे आपने यह सारा संसार बनाया ॥

भावान्तर २

हे प्रभो ! वस्तुतः यह सारा संसार प्रकृति ही तो है। जैसा कि पहले था अन्धेरा मात्र, सब चारों ओर से अन्धकार से ढका था। कुछ भी जानने योग्य नहीं था। जो तुच्छ अन्धकार से आभु नामक पदार्थ सत्तामात्र प्रकृति थी, वह आपके ज्ञान-प्रयत्न से संसार का मूल महत्तत्त्व के रूप में प्रथम आरम्भ हुआ। पुनः आपने आगे समस्त संसार को वर्त्तमान रूप दिया ॥

पदार्थ

(तमः) अंधकार (आसीत) था (तमसा) अंधकार से (गूढ़म्) ढका हुआ (अग्रे) पहले (अप्रकेतम्) लक्ष्य रहित (सलिलं) डूबा हुआ (सर्वम्) सारा (आ) सब ओर से (इदम्) ये (तुच्छेन) नाम मात्र के (आभू)प्रकृति (अपिहितम्) ढकी हुई (यद्) जो (आसीत्) थी (तपस्) ईश्वर के ज्ञान से (प्रेरणा से) (तत्) वह महतत्व (महिना) नाम से।

२५

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
ऋ. ७/५९/१२।

भावान्तर १

हे ईश्वर ! आप मेरे, संसार एवं प्रकृति के रक्षक तथा पोषक हैं। अतः हमें इन बाधाओं से शीघ्र छुड़ाकर ज्ञान, बल आदि सामर्थ्य देकर इस जीवन से सरलता से पृथक् कर स्वयं से युक्त कीजिए ॥

भावान्तर २

हे मुझ आत्मा, शरीर और संसार के रक्षक प्रभो ! मैं आपकी श्रेष्ठता का आदर करता हूँ। आप सद्गुणों के दाता तथा पोषक-वर्द्धक हैं। कृपया मुझे समुचित विज्ञान दीजिए, जिससे सरलता से इस अनित्य सांसारिक अवस्था को छोड़कर आपकी नित्य आश्रित अवस्था को प्राप्त कर सकूँ। एतदर्थ हम आपकी उपासना कर रहे हैं ॥

भावान्तर ३

हे मुझ आत्मा, शरीर और संसार के रक्षक प्रभो ! आप ज्ञान तथा कर्म के पोषक-वर्धक हैं। कृपया आप वह समुचित विज्ञान दीजिए, जिससे हम सरलता से इस अनित्य आश्रित जीवन को छोड़ सकें और अपनी तथा आपकी नित्य आश्रित अवस्था को प्राप्त कर सकें। एतदर्थ हम आपकी उपासना कर रहे हैं ॥

भावान्तर ४

हे मुझ आत्मा, शरीर और संसार के रक्षक प्रभो! आप ज्ञान तथा कर्म के पोषक-वर्धक हैं। कृपया भावी जन्म-मरण के बन्धन से हटाइए किन्तु समुचित विज्ञान देकर, जिससे हम सरलता से बिना डर के इस जीवन को छोड़ सकें और आपके नित्य ज्ञान-आनन्द को प्राप्त कर सकें। एतदर्थ हम आपकी उपासना कर रहे हैं ॥

भावान्तर ५

हे मेरे, शरीर और संसार के रक्षक और प्रकृति के रक्षक प्रभो ! हम आपकी उपासना कर रहे हैं। ज्ञान देकर मेरे इस मृत्यु रूप दुःख को दूर कीजिए ॥

भावान्तर ६

हे मेरे, शरीर और संसार के रक्षक प्रभो ! हम आपकी उपासना कर रहे हैं। इस मृत्यु रूप बन्धन से ज्ञान देकर दूर कीजिए ॥

भावान्तर ७

हे मेरे, शरीर और संसार के रक्षक प्रभो ! हम आपकी उपासना कर रहे हैं।

हमें इस संसार को छोड़ने में बहुत कष्ट हो रहा है। कृपया आप समुचित विज्ञान दें, जिससे हम सरलतापूर्वक इसको छोड़कर आपको प्राप्त कर लें ॥

भावान्तर ८

हे मेरे, शरीर और संसार के रक्षक प्रभो ! हम आपकी उपासना कर रहे हैं। हमें अपने दोषों को छोड़ने में बहुत कष्ट हो रहा है। कृपया आप समुचित विज्ञान देकर सुख पूर्वक हमें इनसे दूर कर दें, जिससे हम आपको सरलता से प्राप्त कर लें ॥

भावान्तर ९

हे मेरे, शरीर, प्रकृति, और संसार के रक्षक प्रभो ! हम आपकी उपासना कर रहे हैं। आप हमको मेरे तथा अपने स्वरूप का ज्ञान तथा उसके अनुसार आचरण की सामर्थ्य दीजिए ॥

भावान्तर १०

हे प्रभो ! आप मुझ आत्मा, शरीर और संसार व प्रकृति के रक्षक हैं। मैं आपकी श्रेष्ठता का आदर करता हूँ। आप सद्गुणों के दाता तथा पोषक-वर्धक हैं। कृपया विविध बाधाओं से मेरी रक्षा करें तथा मुझे समुचित विज्ञान दें, जिससे सरलता से आपको प्राप्त कर सकूँ। एतदर्थ हम आपकी उपासना कर रहे हैं ॥

भावान्तर ११

हे प्रभो ! आप मुझ आत्मा, शरीर और संसार व प्रकृति के रक्षक हैं। मैं आपकी श्रेष्ठता का आदर करता हूँ। आप सद्गुणों के दाता, पोषक और वर्धक हैं। कृपया इस संसार को मैं निर्बाध होकर त्यागकर आपको सरलता से प्राप्त कर सकूँ,एतदर्थ मुझे समुचित विज्ञान दें ॥

पदार्थ

(सुगन्धिम्) (१/१) सुगन्धयुक्त (पुष्टिवर्धनम्) (१/१) बलवर्धक (त्र्यम्बकम्) (१/१) प्रकृति, जीवात्माओं और सृष्टि के स्वामी (आपको) (यजामहे) (लट्.उ.पु/३) हम सब स्तुति करते हैं। (उर्वारुक) (१/१) खरबूजा (इव) (अ.प.) जैसे (बन्धनात्) (५/१) लता से छूट जाता है वैसे (मृत्योः) (५/१) शरीर के वियोगरूप दुःख से

(मुक्षीय) (विधु.उ.पु/१) छूट जावें। (अमृतात्) (५/१) मोक्ष सुख से (मा) (अ.प.) कदापि नहीं।

२६ त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे ॥ ऋ. ८/९८/११।

भावान्तर १

हे सर्वरक्षक प्रभो ! अज्ञान से हटाकर बहुविध दुःखों से बचाने के कारण तथा साधनों को उपलब्ध कराकर सुख देने के कारण आप हमारे पिता हैं। सुरक्षा और बुद्धि, शरीर, पृथ्वी आदि के माध्यम से आश्रय देकर हमको एक अवस्था विशेष में स्थिर रखते हैं तथा निज सान्निध्य, स्नेह और अपना नित्य सुख देने से आप हमारी माता हैं। हे अनन्त कर्मों को एक साथ करने वाले ! मैं आपके उस नित्य सुख को प्राप्त करना चाहता हूँ। कृपया अनुगृहीत करें !!

भावान्तर २

हे अनन्त पराक्रम प्रभो ! मेरा कोई आश्रय नहीं, अस्तित्व नहीं। अतः आप मुझे स्वीकार करें। आप ही मेरे माता-पिता हैं। मैं आपके उत्तम सुख की कामना करता हूँ ॥

भावान्तर ३

हे सर्वरक्षक प्रभो ! आप हमारे माता और पिता हैं। बहुविध साधनों को उपलब्ध कराकर सुख, सुरक्षा और आश्रय देने के कारण आप हमारे पिता हैं। निज सान्निध्य, स्नेह और अपना नित्य सुख देने से आप हमारी माता हैं। हे अनन्त कर्मों को एक साथ करने वाले! मैं आपके उस नित्य सुख को प्राप्त करना चाहता हूँ ॥

भावान्तर ४

हे अनन्त कर्मों को एक साथ करने वाले सर्वरक्षक प्रभो ! आपके विविध गुणों से अनुगृहीत होने के कारण आपसे हमारे अनेक सम्बन्ध बन जाते हैं। जैसे कि मन, बुद्धि, शरीर आदि देकर तथा विविध रूप संसार बनाकर आप हमारे

अस्तित्वानुभव तथा सुखों की रक्षा, आश्रय देने से पिता हैं और निज सान्निध्य, स्नेह और अपना नित्य सुख देने से आप हमारी माता हैं। मैं आपके उस नित्य सुख को प्राप्त करना चाहता हूँ ॥

भावान्तर ५

हे अनन्त कर्मों को एक साथ करने वाले परमेश्वर ! आप हमारे पिता हैं क्योंकि संसार में विविध साधनों का निर्माण, सन्तुलन और व्यावहारिक ज्ञान तथा मुक्ति का आनन्द देकर आप हमारी रक्षा करते हैं। जन्म, आनन्द और स्नेह देने से आप हमारी माता हैं। मैं आपके नित्य सुख को प्राप्त करना चाहता हूँ ॥

भावान्तर ६

हे ईश्वर ! मेरे इतने जटिल जीवन की व्यवस्था, सुरक्षा करने से आप पिता हैं। अपने अन्दर धारणकर विविध सुख, स्नेह देने से माता हैं। आप अनन्त कर्मों को एक साथ कर रहे हैं। मैं आपके नित्य सुख को प्राप्त करना चाहता हूँ ॥

भावान्तर ७

हे ईश्वर ! मेरे जीवन के लिए बड़ी-बड़ी व्यवस्था करने से आप पिता हैं। अपने अन्दर धारण करने से माता हैं। आप अनन्त कर्मों को एक साथ कर रहे हैं। मैं आपके नित्य सुख को प्राप्त करना चाहता हूँ ॥

भावान्तर ८

हे ईश्वर ! मैं उस स्थान में वर्षों से रह रहा हूँ, जहाँ के एक कण का, तिनके का पता नहीं है। एक कण खिसक जाऊँ, कभी वापस नहीं आ सकता। ऐसे भीषण स्थान में भी आज तक सुरक्षित हूँ, यह आपके पालन की महत्ता है। मेरे जीवन के लिए इतनी बड़ी व्यवस्था करने से आप पिता हैं। अपने अन्दर धारण कर विविध सुख, स्नेह देने से माता हैं। आप अनन्त कर्मों को एक साथ कर रहे हैं। मैं आपके नित्य सुख को प्राप्त करना चाहता हूँ ॥

भावान्तर ९

प्रभो ! आप मेरे पिता हैं, हमारी सब प्रकार से सुरक्षा करते हैं। आप हमारी माता हैं, हमको स्नेह करते हैं। आप हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए

विविध प्रकार की व्यवस्थाएँ करते हैं। अतः अब मैं आपके सर्वोत्तम नित्य सुख-सान्निध्य की कामना करता हूँ ॥

भावान्तर १०

अच्छा ! आप मेरे पिता हैं, हमारी सब प्रकार से सुरक्षा करते हैं। आप हमारी माता हैं, हमको स्नेह करते हैं। आप हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विविध प्रकार की व्यवस्थाएँ करते हैं। तब तो मैं आपके सुख से भिन्न सुख की कामना क्यों रखूँ ?

भावान्तर ११

हे प्रभो ! मेरे तो माता-पिता सदैव मेरे साथ हैं और वे आप ही हैं। आप सब प्रकार के साधनों का निर्माण और व्यवस्था द्वारा हमारी रक्षा करने से हमारे पिता हैं ! विविध पुरुषार्थ पूर्वक स्नेह, सुख और ज्ञान देकर हमारा निर्माण करने से हमारी माता हैं। हम आपके नित्य शुद्धस्वरूप को प्राप्त करना चाहते हैं ॥

भावान्तर १२

हे प्रभो ! मैं असहाय, एकाकी लग रहा हूँ, जबकि मेरे माता-पिता के रूप में आप सदैव मेरे साथ हैं। मैं आपका प्रिय पुत्र हूँ और आपकी आज्ञा में तत्पर रहूँगा। क्योंकि आप सब प्रकार के साधनों का निर्माण और व्यवस्था द्वारा हमारी रक्षा करने से हमारे पिता हैं ! विविध पुरुषार्थ पूर्वक स्नेह, सुख और ज्ञान देकर हमारा निर्माण करने से हमारी माता हैं। हम आपके नित्य शुद्धस्वरूप को प्राप्त करना चाहते हैं। अतः अपना सान्निध्य प्रदान करें !

भावान्तर १३

हे प्रभो ! मैं असहाय, एकाकी नहीं हूँ। मैं तो कुटुम्ब-परिवार के साथ हूँ। मेरे तो माता-पिता सदैव मेरे साथ हैं और वे आप ही हैं। मैं आपका प्रिय पुत्र हूँ और आपकी आज्ञा में तत्पर रहूँगा। आप सब प्रकार के साधनों का निर्माण और व्यवस्था द्वारा हमारी रक्षा करने से हमारे पिता हैं ! विविध पुरुषार्थ पूर्वक स्नेह, सुख और ज्ञान देकर हमारा निर्माण करने से हमारी माता हैं। हम आपके नित्य शुद्धस्वरूप को प्राप्त करना चाहते हैं ॥

भावान्तर १४

हे प्रभो ! मैं स्वयं को असहाय, एकाकी अनाथ मानकर घूम रहा हूँ, जबकि ऐसा नहीं है। आप अनन्त प्रकार से मेरी रक्षा कर रहे हैं। आप सब प्रकार के साधनों का निर्माण और व्यवस्था द्वारा हमारी रक्षा करने से हमारे पिता हैं ! विविध पुरुषार्थ पूर्वक स्नेह, सुख और ज्ञान देकर हमारा निर्माण करने से हमारी माता हैं। हम आपके नित्य शुद्धस्वरूप को प्राप्त करना चाहते हैं ॥

भावान्तर १५

हे प्रभो ! आप एक ही मेरे आश्रय हैं। सब प्रकार के साधनों का निर्माण और व्यवस्था द्वारा हमारी रक्षा करने से हमारे पिता हैं ! विविध पुरुषार्थ पूर्वक स्नेह, सुख और ज्ञान देकर हमारा निर्माण करने से हमारी माता हैं। आप अनन्त पुरुषार्थ सदा करते रहते हैं। हम आपके नित्य शुद्धस्वरूप को प्राप्त करना चाहते हैं ॥

भावान्तर १६

हे प्रभो ! आप ही मेरे माता-पिता और रक्षक हैं। मैं आपका प्रिय पुत्र हूँ और आपकी आज्ञा में तत्पर रहूँगा। आप सब प्रकार के साधनों का निर्माण और व्यवस्था द्वारा हमारी रक्षा करने से हमारे पिता हैं ! विविध पुरुषार्थ पूर्वक स्नेह, सुख और ज्ञान देकर हमारा निर्माण करने से हमारी माता हैं। मैं आपके नित्य शुद्धस्वरूप को प्राप्त करना चाहता हूँ। कृपया अनुगृहीत करें ॥

भावान्तर १७

हे ईश्वर ! हमारा और कोई नहीं है, केवल आपके ऊपर आश्रित हैं। आप हमारे पिता हैं। आप हमारी माता हैं। आप अनन्त कर्मों को एक साथ कर रहे हैं। मैं आपके नित्य सुख को प्राप्त करना चाहता हूँ ॥

मैं उसका पुत्र हूँ, जिसके भय से प्रतिदिन सूर्य समय पर उदित होकर समय पर अस्त होता है।

मैं उसका पुत्र हूँ, जिसके भय से प्रतिदिन पृथ्वी असंख्य प्राणियों को जन्म देती है और उनके रहने को स्थान देती है।

मैं उसका पुत्र हूँ, जिसके भय से चन्द्रमा दिन-रात पृथ्वी का चक्कर लगाता रहता है ॥

पदार्थ

(त्वं) (१/१) आप (हि) (अ.प.) ही (नः) (६/३) हमारे (वसो) (सम्बो०/१) वसानेहारे (पिता) (१/१) पिता है (त्वं) (१/१) आप (शतक्रतो) (सम्बो०/१) अनन्त कर्मों को एक साथ करने वाले (माता) (१/१) माता भी (बभूविय) (लिट्.म.पु./१) हैं। (अधा) (अ.प.) इसलिए (ते) (५/३) आप से ही (सुम्नम्) (२/१) लौकिक एवं परलौकिक नित्य सुख को (ईमहे) (लट्.उ.पु/३) चाहते हैं। कामना करते हैं।

२७ त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि। अप नः शोशुचदघम् ॥ऋ. १/९७/६।

भावान्तर १

आप सब ओर से समर्थ होते हुए सबको सदा ज्ञान देते रहते हैं। मैं आपको क्यों नहीं जान पा रहा हूँ, कृपया मेरे इन दोषों से सम्बद्ध लक्षणों और उनके निराकरण का ज्ञान दें, जिससे मैं उनको दूर कर सकूँ ॥

भावान्तर २

आप सब ओर से सब को ज्ञान देते हैं और सर्वथा समर्थ हैं। मेरी बाधा को दूर कर दें। किन्तु ज्ञान न उठ पाने के कारण अर्थ का कोई आभास नहीं रहा ॥

भावान्तर ३

हे प्रभो ! आप ज्ञानस्वरूप हैं। आप सदा सबको सब प्रकार से उनके हित के लिए सचेत करते रहते हैं। आप सर्वोपरि हैं। आपकी प्राप्ति में अज्ञान की जो बाधा हमारे सामने है, उसको नष्ट करने का मुझे समुचित विज्ञान दीजिए, जिससे सरलता से आपके नित्य आनन्द को प्राप्त कर सकूँ ॥

भावान्तर ४

आप सब ओर से समर्थ होते हुए सबको सदा ज्ञान देते रहते हैं। मेरी इस शारीरिक बाधा पीड़ा से सम्बद्ध कारणों और उनके निराकरण का ज्ञान दें, जिससे मैं उनको दूर कर सकूँ ॥

भावान्तर ५

आप सब ओर से सब को ज्ञान देते हैं और सर्वथा समर्थ हैं। मैं आपका सान्निध्य पाने को उत्सुक हूँ, परन्तु अज्ञान और व्याधि से बाधित हूँ। प्रभो ! मेरी बाधा को दूर कर अपना शरणागत स्वीकार करें ॥

भावान्तर ६

हे सर्वरक्षक प्रभो ! आप सब ओर से मुझे देख-सुन-जान रहे हैं और सब प्रकार ज्ञान देने व रक्षा करने में सतत यत्नशील हैं। अतः मेरी व्याधि और अज्ञान को शीघ्र दूर कर दें, जिससे आपका सान्निध्य लाभ हो ॥

भावान्तर ७

हे ईश्वर ! आप सब ओर से समर्थ और सब बाधाओं को दूर करने वाले हैं। मेरी इस पीड़ा-बाधा को दूर कर दें, जिससे मैं आपका सान्निध्य सहजतया प्राप्त कर सकूँ ॥

भावान्तर ८

हे ईश्वर ! आप सब ओर से सबको सतत ज्ञान देते रहते हैं और सब प्रकार से सबके ऊपर प्रतिष्ठित हैं। कृपाकर हमारी व्याधि के उन कारणों को दूर करें, जिससे आपका सान्निध्य और दर्शन शीघ्र सम्भव होवे ॥

भावान्तर ९

हे ईश्वर ! आप सब ओर सबको सतत ज्ञान देते रहते हैं और सब प्रकार सब के ऊपर प्रतिष्ठित हैं। कृपाकर हमारी इस अज्ञानता को दूर करें, जिससे हम संसार का पूर्णतः परित्याग करने में भयभीत हो रहे हैं ॥

भावान्तर १०

हे ईश्वर ! आप सब ओर सबको सतत ज्ञान देते रहते हैं और सब प्रकार सब के ऊपर प्रतिष्ठित हैं। कृपाकर हमारी इस व्याधि के उन कारणों को दूर करें, जिससे हमारा उच्चारण बाधित होने से ज्ञानोत्पत्ति में कठिनाई आ रही है और आपका सान्निध्य सम्भव नहीं हो रहा है ॥

भावान्तर ११

हे ईश्वर ! आप सब ओर सबको सतत ज्ञान देते रहते हैं और सब प्रकार सब के ऊपर प्रतिष्ठित हैं। कृपाकर हमारी व्याधि के उन कारणों को दूर करें, जिससे आपके प्रति हमारी आपकी उपासना या निकटता बाधित हो रही है ॥

भावान्तर १२

हे प्रभो ! आप सब प्रकार से सबको ज्ञान देते हैं ! आप सब ओर से सबके ऊपर विराजमान हैं। कृपा करके हमारे अवैराग्य सम्बन्धी सारे दोषों को दूर कर हमको भी पूर्ण समर्थ तथा मन-वचन-कर्म से सर्वथा पवित्र कीजिए ॥

भावान्तर १३

हे प्रभो ! आप ज्ञानस्वरूप हैं। आप सदा सबको सब प्रकार से उनके हित के लिए सचेत करते रहते हैं। आप सर्वोपरि हैं। आपकी प्राप्ति में संसार दिखते रहने की अज्ञान की जो बाधा हमारे सामने है, उसको नष्ट कर दीजिए, जिससे सरलता से आपका सान्निध्य प्राप्त कर सकूँ !!

भावान्तर १४

आप सब ओर से समर्थ और सब बाधाओं को दूर करने वाले हैं। मेरी इस पीड़ा-बाधा को दूर कर दें, जिससे मैं आपकी उपासना अच्छी प्रकार से कर सकूँ ॥

भावान्तर १५

आप सब ओर से समर्थ और सबको ज्ञान देने वाले हैं। मुझे अविरति के कारण तथा निवारण का ज्ञान दें। मैं उन्हें मूल से उखाड़ना चाहता हूँ ॥

भावान्तर १६

आप सब ओर से समर्थ और सबको ज्ञान देने वाले हैं। मेरे दोषों को मूलतः दूर करने का ज्ञान दें ॥

भावान्तर १७

हे ईश्वर ! आप सब ओर से समर्थ और सब बाधाओं को दूर करने वाले हैं। मेरी इस पीड़ा-बाधा को दूर कर दें, जिससे मैं आपकी उपासना अच्छी प्रकार से कर सकूँ ॥

भावान्तर १८

हे सर्वज्ञ परमेश्वर ! आप सब प्रकार यथायोग्य सबको उनकी उन्नति हेतु ज्ञान देने में सदैव तत्पर रहते हैं। आपका पूरे विश्व में आधिपत्य है। आपको मैं प्राप्त करना चाह रहा हूँ। अतः इसमें जो भी साधन हैं, उसे उपलब्ध करायें तथा मेरे समस्त बाधकों को दूर करें ॥

पदार्थ

(त्वं) (१/१) तू (हि) (अ.प.) ही (विश्वतः) (५/१) सब ओर से (परिभूः) (१/१) सबके ऊपर विराजमान (असि) (लट्.म.पु./१) है। (हे) (विश्वतोमुख) (सम्बो०/१) हे सर्वतोमुख अग्ने! (नः) (६/३) हम लोगों के (अधम्) (२/१) पापों को (अप) (अ.प.) दूर (शोशुचत्) (प्र.पु./१) कीजिए।

२८

त्वमस्य पारे रजसो व्योमनः स्वभूत्योजा
अवसे धृषन्मनः। चकृषे भूमिं प्रतिमानमोजसोऽपः
स्वः परिभूरेष्या दिवम् ॥ ऋ .१/५२/१२।

भावार्थ

हे परमैश्वर्यवान् परमात्मन् ! आप इस आकाश से भी पार और अन्दर मन-आत्मा में भी अपने बल व ऐश्वर्य के साथ विराजमान होकर हमारी रक्षा के लिए बाहर के दुष्टों तथा हमारी आन्तरिक अविद्या का तिरस्कार करने में तत्पर रहते हैं।

आप विविध परिमाणों के साथ इस भूमि, जल आदि की रचना कर उनको धारण कर रहे हैं तथा उनके साथ सुख-विशेष, अन्तरिक्ष एवं द्युलोक को भी धारण कर रहे हैं। आप सर्वत्र विद्यमान हैं, अपरिमेय हैं, सर्वज्ञ हैं। हमें इस सृष्टि तथा विशेषकर अपने स्वरूप का ज्ञान कराइए ॥

पदार्थ

हे (घृषन्मनः) अनन्त प्रगल्भ विज्ञानयुक्त जगदीश्वर जो (परिभूः) सब प्रकार होने (स्वभूत्योजाः) अपने ऐश्वर्य वा पराक्रम युक्त से (त्वम्) आप (अवसे) रक्षा आदि के लिये (अस्य) इस संसार के (रजसः) पृथिवी आदि लोकों तथा (व्योमनः) आकाश के (पारे) अपरभाग में भी (एषि) प्राप्त हैं और आप (ओजसः) पराक्रम आदि के (प्रतिमानम्) अवधि (स्वः) सुख (दिवम्) शुद्ध विज्ञान के प्रकाश (भूमिम्) भूमि और (अपः) जलों को (आचकृषे) अच्छे प्रकार किया है उन आपकी हम सब लोग उपासना करते हैं।।१२।।

२९

दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा
सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

भावार्थ

हे ईश्वर! मेरे विषयसुख, स्वार्थ आदि दोषों को नष्ट कर मुझे निर्दोष कर दीजिए, जिससे अन्य मुझे प्रीतिभाव से देखें तथा मैं भी उन सबको प्रीतिभाव से देखूँ, उनके प्रति अनिष्ट या उपेक्षा का भाव न रखूँ। सब का व्यवहार मित्रवत् हो ॥

पदार्थ

हे (दृते) अविद्यारूपी अन्धकार के निवारक जगदीश्वर वा विद्वन्! जिससे (सर्वाणि) सब (भूतानि) प्राणी (मित्रस्य) मित्र की (चक्षुषा) दृष्टि से (मा) मुझको (सम्, ईक्षन्ताम्) सम्यक् देखें (अहम्) मैं (मित्रस्य) मित्र की (चक्षुषा) दृष्टि से

(सर्वाणि, भूतानि) सब प्राणियों को (समीक्षे) सम्यक् देखूं इस प्रकार सब हम लोग परस्पर (मित्रस्य) मित्र की (चक्षुषा) दृष्टि से (समीक्षामहे) देखें इस विषय में हमको (दृंह) दृढ़ कीजिये । ।१८ । ।

३० द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते । तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति ॥

भावान्तर १

हे ईश्वर ! ज्ञानस्वरूप मैं और आप दोनों ही इस शरीर में साथ-साथ विद्यमान हैं, किन्तु मैं अज्ञानता के कारण इसके दुःखद भोग को भी छोड़ नहीं रहा परन्तु आप इससे सर्वथा पृथक् हैं । मुझे भी अनुकूल ज्ञान देकर इससे बाहर रहने योग्य तैयार कीजिए ॥

भावान्तर २

हे ईश्वर ! ज्ञानस्वरूप मैं और आप दोनों ही इस शरीर में साथ-साथ विद्यमान हैं, किन्तु अज्ञानता के कारण मैं इस शरीर से लौकिक सुख को ग्रहण करता रहता हूँ तथा छोड़ना कठिन हो रहा है, परन्तु आप इनसे सर्वथा निर्लिप्त हैं । मुझे भी इससे पृथक् कीजिए ॥

भावान्तर ३

हे ईश्वर ! ज्ञानस्वरूप मैं और आप दोनों ही इस शरीर में साथ-साथ विद्यमान हैं, किन्तु इतना लुट-पिटकर भी मुझे इसको छोड़ना कठिन हो रहा है और आप इसकी ओर देख भी नहीं रहे हैं । मुझे भी इससे बाहर रहने योग्य तैयार कीजिए ॥

भावान्तर ४

हे ईश्वर ! ज्ञानस्वरूप मैं और आप दोनों ही इस शरीर में साथ-साथ विद्यमान हैं । मैं तो इस संसार को सुखद मानकर उसका सुख-दुःख भोगता रहता हूँ और आप केवल साक्षीभाव से मुझे देख रहे हैं । प्रभो ! मुझे तत्त्वज्ञान दीजिए, जिससे कि मैं इस संसार से पृथक् होकर आपका वास्तविक सान्निध्य प्राप्त कर सकूँ ॥

भावान्तर ५

हे ईश्वर ! ज्ञानस्वरूप मैं और आप दोनों ही इस शरीर में साथ-साथ विद्यमान हैं। क्योंकि मैं इस शरीर से अपना कार्य करता हूँ, परन्तु आप इसका निर्माण कर मुझे इसमें स्थापित कर मेरी गतिविधियों को देख रहे हैं। अज्ञानता के कारण मैं इस प्रकृति में उलझा हुआ हूँ, परन्तु आप इसमें रहते हुए भी इससे अनाक्रान्त, विमुख हैं ॥

भावान्तर ६

हे उपासक ! मैं और तुम दोनों ही ज्ञानस्वरूप इस शरीर में साथ-साथ विद्यमान हैं किन्तु तुम्हें इसको छोड़ना कठिन हो रहा है, क्योंकि इसी को सर्वस्व मान रहे हो। मुझे देखो ! मैं इसकी चाह नहीं करता और निश्चिन्त हूँ। अतः तत्त्वज्ञान पाकर मुझ पर विश्वास कर मेरा आश्रय ग्रहण करो। पुनः दुःख से सर्वथा बच जाओगे !!

भावान्तर ७

हे ईश्वर ! ज्ञान और कर्म इन दो समानताओं को रखने वाले मैं और आप इस शरीर में साथ-साथ विद्यमान हैं। परन्तु आप तो इस शरीर से निर्लेप होकर अपने आनन्द में ही मग्न रहते हैं। इस शरीर से न तो प्रभावित होते हैं, न इसका उपभोग करते हैं। मैं इससे बंधकर इसके द्वारा सांसारिक सुख के लिए प्रयत्नशील रहता हुआ दुःख भोगता रहता हूँ। पर अब मैं आप की तरह इससे विमुख होना चाहता हूँ। आप मेरी सहायता करें। मुझे भी इससे बाहर रहने योग्य तैयार कीजिए ॥

भावान्तर ८

हे ईश्वर! मैं और आप दोनों एक ही शरीर व मन से सम्बद्ध हैं, किन्तु आपकी और मेरी स्थिति में महान् अन्तर है। आप तो इससे सर्वथा निर्लिप्त हैं और अपने आनन्द में मग्न हैं। जबकि मैं कभी स्वयं को और कभी आपको जानने का प्रयास करता हूँ तो कभी शारीरिक पीड़ा से ग्रस्त हो जाता हूँ और कभी उससे बचने के लिए वृत्तियाँ उठाकर संसार का सुख लेने लगता हूँ। प्रभो! आप कृपाकर अपना सान्निध्य प्रदान करें, जिससे मैं आपकी महिमा में अपने-आप को विलीन कर सकूँ ॥

पदार्थ

हे मनुष्यो! (सुपर्णा) सुन्दर पंखों वाले (सयुजा) समान सम्बन्ध रखनेवाले (सखाया) मित्रों के समान वर्त्तमान (द्वा) दो पखेरू (समानम्) एक (वृक्षम्) जो काटा जाता उस वृक्ष का (परि, षस्वजाते) आश्रय करते हैं (तयोः) उनमें से (अन्यः) एक (पिप्पलम्) उस वृक्ष के पके हुए फल को (स्वादु) स्वादुपन से (अत्ति) खाता है और (अन्यः) दूसरा (अनश्नत्) न खाता हुआ (अभि, चाकशीति) सब ओर से देखता है अर्थात् सुन्दर चलने-फिरने वा क्रियाजन्य काम को जाननेवाले व्याप्यव्यापकभाव से साथ ही सम्बन्ध रखते हुए मित्रों के समान वर्त्तमान जीव और ईश- जीवात्मा..... समाज कार्यकारणरूप ब्रह्माण्ड देह का आश्रय करते हैं। उन दोनों अनादि जीव ब्रह्म में जो जीव है वह पाप-पुण्य से उत्पन्न सुख-दुःखात्मक भोग को स्वादुपन से भोगता है और दूसरा ब्रह्मात्मा कर्मफल को न भोगता हुआ उस भोगते हुए जीव का सब ओर से देखता अर्थात् साक्षी है यह तुम जानो।।२०।।

३१

न तं विदाथ यऽइमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृपऽउक्थशासश्चरन्ति॥
यजु. १७/३१।

भावान्तर १

इस शरीर को जानता हूँ पर आपको नहीं जानता, जबकि आपने इस शरीर सहित संसार को बनाया है। आप हमारे अन्दर विद्यमान हैं, पर हमसे पृथक् हैं। अब मैं आपको जानना चाहता हूँ, क्योंकि अपने अन्दर विद्यमान कीं न विरोधी बनकर उपेक्षा कर सकते हैं और न आत्मीय मानकर। परन्तु अब तक मिथ्याज्ञान से आवृत्त होने, केवल आपसे सम्बद्ध बातें करने, उसे वास्तविक रूप में स्वीकार नहीं करने तथा अपने शरीर के ही पोषण में तत्पर रहने तथा अन्यों के समक्ष उसका खण्डन न करके केवल वाचनिक प्रशंसा करते रहने या वेदों के पठन-पाठन से अपने कर्त्तव्य की इति श्री समझते रहने आदि जिन दोषों से आपको नहीं जान पा रहा हूँ, उन्हें शीघ्र दूर कर दीजिए॥

भावान्तर २

इस शरीर को जानते हो पर उसको नहीं जानते, जिसने इस शरीर सहित संसार को बनाया है। तो सुनो ! वह इसी शरीर और तुम्हारे अन्दर विद्यमान है, पर तुमसे पृथक् है। अब तो तुन्हें जानना ही पड़ेगा, क्योंकि अपने अन्दर विद्यमान से कब तक बच सकोगे, कब तक उसकी उपेक्षा कर पाओगे ? न विरोधी बनकर उसकी उपेक्षा कर सकते हो और न आत्मीय मानकर उपेक्षा कर सकते हो। आत्मीय मानकर उपेक्षा करना तो घोर अपराध या विडम्बना होगी। अतः उसको जानना आवश्यक मानकर जान लो। वैसे उसे इसलिए नहीं जान पा रहे हो कि मिथ्याज्ञान से आवृत्त हो, केवल उससे सम्बद्ध बातें करके रह जाते हो, उसे वास्तविक रूप में स्वीकार करना नहीं चाहते, अपने शरीर के ही पोषण में तत्पर रहते हो तथा अन्यों के समक्ष उसका खण्डन न करके केवल वाचनिक प्रशंसा कर देते हो या वेदों के पठन-पाठन से अपने कर्त्तव्य की इति श्री समझते हो॥

भावान्तर ३

हे ईश्वर ! मैं आपको यथार्थतया नहीं जानता, यद्यपि आपने इस शरीर सहित संसार को बनाया है। आप हमारे इस शरीर और मेरी आत्मा में विद्यमान हैं, पर मुझसे पृथक् हैं। अब मैं आपको जानना चाहता हूँ परन्तु किस मिथ्याज्ञान से आवृत्त हूँ, यह वस्तुतः नहीं जान पा रहा हूँ। केवल आपसे सम्बद्ध बातें करके रह जाता हूँ, आपको वास्तविक रूप में स्वीकार करना नहीं समझ पा रहा हूँ। अपने शरीर के ही पोषण में तत्पर होते हुए आत्मा तथा आपके निमित्त अपनी ओर से प्रयासरत हूँ। जैसे अन्यों के समक्ष आपका खण्डन न करके केवल वाचनिक प्रशंसा करता हूँ, वैसे स्वयं में भी आपका आदर करता हूँ। वेदों के पठन-पाठन मात्र से अपने कर्त्तव्य की इति श्री नहीं समझता हूँ, किन्तु उसे शब्द-प्रमाण के रूप में रखने हेतु तत्पर हूँ। प्रभु ! मेरी इन सारी बाधाओं को दूर कर अपने दर्शन से शीघ्रातिशीघ्र कृतार्थ करें॥

भावान्तर ४

प्रभो ! आपने ही इस संसार और मेरे शरीर को उत्पन्न कर मुझे जीवन दिया परन्तु मैं आपको जान नहीं पा रहा हूँ। आप मुझमें विद्यमान होते हुए मुझसे पृथक् हैं, स्वरूपभेद के कारण, पुनरपि आपसे अपिरिचित हूँ। कारण है कि अज्ञान से पूरित हूँ, अन्य बातों में विशेष बल लगता हूँ, मन्त्रों के शब्दार्थ-सम्बन्ध तक रह जाता हूँ। अर्थ को पाने का पुरुषार्थ नहीं करता हूँ। सो प्रभु मेरी अज्ञानता को दूर कर दें तो अन्य कार्यों में भी समर्थ होकर आपको जान लूँ॥

भावान्तर ५

हे प्रभो ! यह संसार आपने ही बनाया है, परन्तु मैं ऐसा नहीं जान पा रहा हूँ। आप मेरे शरीर व मुझमें विद्यमान हैं, परन्तु अपने स्वरूप से भिन्न होकर रह रहे हैं। आपको न जानने का कारण अविद्या व तमोगुण से आवृत्त मेरा चित्त है, मौन के कारण बातें तो नहीं करता, पर शरीर पोषण लोभ का सर्वथा त्याग किया या नहीं, पता नहीं चल रहा। केवल शास्त्रों की व्याख्या अब नहीं कर रहा हूँ पर वेद को समझ भी नहीं पा रहा हूँ, पूर्ण अध्ययन न होने से। किन्तु यह किस प्रकार बाधक बना है, यह भी नहीं पता॥

पदार्थ

हे मनुष्यो! जैसे ब्रह्म के न जानने वाले पुरुष (नीहारेण) धूम के प्रकार कोहरे के समान अज्ञानरूप अन्धकार से (प्रावृता:) अच्छे प्रकार ढके हुए (जल्प्या) थोड़े सत्य असत्य वादानुवाद में स्थिर रहने वाले (असुतृप:) प्राणपोषक (च) और (उक्थशास:) योगाभ्यास को छोड़ शब्द अर्थ सम्बन्ध के खण्डन मण्डन में रमण करते हुए (चरन्ति) विचरते हैं वैसे हुए तुम लोग (तम्) उस परमात्मा को (न) नहीं (विदाथ) जानते हो (य:) जो (इमा) इन प्रजाओं को (जजान) उत्पन्न करता और जो ब्रह्म (युष्माकम्) तुम अधर्मी अज्ञानियों के सकाश से (अन्यत्) अर्थात् कार्यकारण रूप जगत् और जीवों से भिन्न (अन्तरम्) तथा सबों में स्थित भी दूरस्थ (बभूव) होता है, उस अतिसूक्ष्म आत्मा परमात्मा को नहीं जानते हो।।३१।।

३२

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च
नमः शङ्कराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ यजु.१६/४१।

भावार्थ

हे प्रभो ! आप स्वयं सुखस्वरूप और हमको सुख देने वाले हैं। आप शुभ कर्मों को करने वाले और मुक्तिप्राप्तिरूप अत्यन्त शुभ कर्म हेतु प्रेरित करने वाले हैं। आप स्वयं कल्याणस्वरूप तथा हम सबके लिए अत्यन्त कल्याणकारी हैं ॥

पदार्थ

जो मनुष्य (शभ्मवाय) सुख को प्राप्त कराने हारे परमेश्वर (च) और (मयोभवाय) सुखप्राप्ति के हेतु विद्वान् (च) का भी (नमः) सत्कार (शङ्कराय) कल्याण करने (च) और (मयस्कराय) सब प्राणियों को सुख पहुँचाने वाले का (च) भी (नमः) सत्कार (शिवाय) मङ्गलकारी (च) और (शिवतराय) अत्यन्त पुरुष का (च) भी (नमः) सत्कार करते हैं वे कल्याण को प्राप्त होते हैं।।४१।।

३३

परि माग्ने दुश्चरिताद् बाधस्वा मा सुचरिते भज।
उदायुषा स्वायुषोदस्थाममृताँ२ऽअनु ॥यजु. ४/२८।

भावान्तर १

हे शुद्धस्वरूप परमेश्वर ! मुझे किसी भी प्रकार से अनुपासना सम्बन्धित अभद्र आचरणों से अवरुद्ध कर उपासनीय आचरणों में समर्थ कीजिए। हमें उन्नति की ओर जाने वाली आयु दीजिए, स्वस्थ आयु दीजिए, जीवनमुक्त महानुभावों के सदृश आयु दीजिए ॥

भावान्तर २

हे शुद्धस्वरूप परमेश्वर ! मुझे किसी भी प्रकार से इन विषय सुखादि निमित्तक अभद्र आचरणों से मानसिक, शारीरिक, ऐन्द्रिक बाधाओं से मुक्त कर

अपनी भक्ति आदि शोभनीय आचरणों से युक्त कीजिए। हमें उन्नत्ति की ओर जाने वाली आयु दीजिए, स्वस्थ आयु दीजिए, जीवनमुक्त महानुभावों के सदृश आयु दीजिए ॥

भावान्तर ३

हे शुद्धस्वरूप परमेश्वर ! मुझे किसी भी प्रकार से इन विषय सुखादि क्लेशमूलक अभद्र आचरणों से विशेषकर भोजन लोभ से अवरुद्ध कर अपनी भक्ति आदि शोभनीय आचरणों से युक्त कीजिए। हमें उन्नत्ति की ओर जाने वाली आयु दीजिए, स्वस्थ आयु दीजिए, आदर्शमय व जीवनमुक्त महानुभावों के सदृश आयु दीजिए ॥

भावांन्तर ४

हे शुद्धस्वरूप परमेश्वर ! मन, वाणी, शरीर से आपकी प्राप्ति के विरुद्ध आचरण, विशेषकर लौकिक सुखनिमित्तक प्रवृत्ति से हटाकर अपनी भक्ति आदि शोभनीय आचरणों से युक्त कीजिए। हमें उन्नत्ति की ओर जाने वाली आयु दीजिए, स्वस्थ आयु दीजिए, जीवनमुक्त महानुभावों के सदृश आयु दीजिए ॥

भावान्तर ५

हे शुद्धस्वरूप परमेश्वर ! मन, वाणी, शरीर से आपकी प्राप्ति के विरुद्ध या अनुचित विषय सुखादि निमित्तक अभद्र आचरणों को अनवधान से कर रहा हूँ। कृपया उससे हटाकर मुक्ति आदि निमित्तक शोभनीय आचरणों से युक्त कीजिए। हमें उन्नत्ति की ओर जाने वाली आयु दीजिए, स्वस्थ आयु दीजिए, जीवनमुक्त महानुभावों के सदृश आयु दीजिए ॥

भावान्तर ६

हे शुद्धस्वरूप परमेश्वर ! मन, वाणी, शरीर से आपकी प्राप्ति के विरुद्ध या अनुचित विषय सुखादि निमित्तक अभद्र आचरणों को कर रहा हूँ, उससे हटाकर, विशेषकर विषय सुख के संस्कारों को नष्ट करके अपनी भक्ति आदि शोभनीय आचरणों से युक्त कीजिए। हमें उन्नत्ति की ओर जाने वाली आयु दीजिए, स्वस्थ आयु दीजिए, जीवनमुक्त महानुभावों के सदृश आयु दीजिए ॥

भावान्तर ७

हे शुद्धस्वरूप परमेश्वर ! इन राग, द्वेष, अज्ञान निमित्तक अभद्र आचरणों से मानसिक, शारीरिक, ऐन्द्रिक बाधाओं से मुक्त कर ज्ञानात्मक अवस्था से युक्त कर अपनी भक्ति आदि शोभनीय आचरणों से युक्त कीजिए। हमें उन्नत्ति की ओर जाने वाली आयु दीजिए, स्वस्थ आयु दीजिए, जीवनमुक्त महानुभावों के सदृश आयु दीजिए ॥

पदार्थ

हे (अग्ने) (सम्बो०/१) ज्ञानस्वरूप जगदीश्वर! (स्वायुषा) (३/१) प्राण धारण करने वाले (आयुषा) (३/१) जीवन से (अमृतान्) (२/३) मोक्षरूपी आनन्द को (उदस्थाम्) (लोट्.उ.पु/१) अच्छी प्रकार प्राप्त होऊं (मा) (२/१) मुझको (दुश्चरितात्) (५/१) दुष्टाचरण से (उद् बाधस्व) (लोट्.म.पु/१) पृथक् कीजिए (मा) (२/१) मुझको (सुचरिते) (७/१) धर्मयुक्त व्यवहार में (अन्वाभज) (लोट्.म.पु./१) अच्छे प्रकार स्थापन कीजिए।

३४

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तस्तत्समाशत ॥

ऋग्वेद ९/८३/१।

भावान्तर १

हे ब्रह्माण्ड के सर्वसमर्थ स्वामिन् ! आपका पवित्र स्वरूप सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के कण-कण में व्याप्त होने से हमारे शरीर में भी व्यापक है। विद्या-ब्रह्मचर्य, साधना के अभाव में आपको प्राप्त नहीं किया जा सकता, अपितु इन सम्पत्तियों से युक्त होकर ही आपको प्राप्त कर सकते हैं। अतः हमको भी पूर्णसमर्थ तथा मन-वचन-कर्म से सर्वथा पवित्र कीजिए ॥

भावान्तर २

हे ब्रह्माण्ड के स्वामिन्! आपका जो पवित्र स्वरूप सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के कण-कण में व्याप्त है, वही हमारे शरीर में भी व्यापक है। विद्या-ब्रह्मचर्य, साधना

के अभाव में असमर्थ होने से आपके उस शुद्धस्वरूप को प्राप्त नहीं किया जा सकता, परन्तु इन सम्पत्तियों से युक्त होकर प्राप्त किया जा सकता है। अतः हमको भी इन गुणों से पूरित कर पूर्ण समर्थ तथा मन-वचन-कर्म से सर्वथा पवित्र कर अपना सान्निध्य प्रदान करें ॥

भावान्तर ३

हे ब्रह्माण्ड के स्वामिन् ! आपका जो पवित्र स्वरूप सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के कण-कण में व्याप्त है, वही हमारे शरीर में भी व्यापक है। स्वास्थ्य, विद्या-ब्रह्मचर्य, साधना के अभाव में असमर्थ होने से आपके उस शुद्धस्वरूप को प्राप्त नहीं किया जा सकता, परन्तु इन सम्पत्तियों से युक्त होकर प्राप्त किया जा सकता है। अतः हमको भी शरीरेन्द्रिय, मन-वचन-कर्म से सर्वथा स्वस्थ, पवित्र कर अपना स्वरूप अधिगत कराइए ॥

भावान्तर ४

हे ब्रह्माण्ड के सर्वसमर्थ स्वामिन् ! आपका पवित्र स्वरूप ब्रह्माण्ड के कण-कण में व्याप्त होने के साथ मुझमें भी व्यापक है। विद्या-ब्रह्मचर्य, साधना करने में शरीर से असमर्थ आपको प्राप्त नहीं कर सकते, अपितु इन सम्पत्तियों से युक्त ही आपको प्राप्त कर सकते हैं। अतः हमको भी विद्या-ब्रह्मचर्य आदि से पूर्ण समर्थ तथा मन-वचन-कर्म से सर्वथा पवित्र कीजिए, जिससे आपको प्राप्त कर कृतकृत्य हो जाऊँ !!

पदार्थ

(पवित्रं) पवित्र (तं) आपका (विततं) सर्वत्र व्यापक (ब्रह्मणस्पते) ब्रह्माण्ड के स्वामी (प्रभो) सर्वथा समर्थ (गात्राणि) समस्त शरीरों को प्राप्त होते हो (विश्वतः) सब ओर से (आमतनु) तप रहित शरीर वाले (ना) नहीं (तत्) वे (आम) असमर्थ (अश्नुते) प्राप्त कर पाते हैं (शृतास) तप समापन शरीर वाले (इत्) ही (वहन्तः) समय से परिपूर्ण होकर (तत्) आपको (समाशते) अच्छी प्रकार प्राप्त करते हैं ।

३५ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ।
यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥ ऋ. १/३/१० ।

भावार्थ

हे श्रेष्ठता की कामना रखने वाले, ज्ञान के माध्यम से आश्रय देने वाले ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! आप अपने सकल सामर्थ्य से हमें सर्वथा पवित्र करें ॥

पदार्थ

(वाजेभिः) जो सब विद्या की प्राप्ति के निमित्त अन्न आदि पदार्थ हैं, और जो उनके साथ (वाजिनीवती) विद्या से सिद्ध की हुई क्रियाओं से युक्त (धियावसुः) शुद्ध कर्म के साथ वास देने और (पावका) पवित्र करनेवाले व्यवहारों को चितानेवाली (सरस्वती) जिस में प्रशंसा योग्य ज्ञान आदि गुण हों ऐसी उत्तम सब विद्याओं को देनेवाली वाणी है, वह हम लोगों के (यज्ञम्) शिल्पविद्या के महिमा और कर्मरूप यज्ञ को (वष्टु) प्रकाश करनेवाली हो । ।१० । ।

३६ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥ यजु. १९/३९ ।

भावान्तर १

हे परम पवित्र परमेश्वर ! जैसे दिव्य आध्यात्मिक ज्ञानसम्पन्न विद्वान् लोग या उनके शास्त्रों से मुझे अज्ञान आदि पापों से बचने का उपदेश और सहायता प्राप्त होती है, वैसे ही आप भी साक्षात् उपदेश और सहायता करें । आप मुझे मन, बुद्धि और शरीर से सब प्रकार से निष्पाप करें । आपके बनाए हुए सब जड़ पदार्थ हमको पवित्र बनने में सहायक हों । परन्तु प्रभो ! आप अपनी कृपा से ही मुख्य रूप से हमें पवित्र कर दें ॥

भावान्तर २

हे ईश्वर ! हमको विद्वान् जन अपने उत्तम मार्गदर्शन करें, मुझे पवित्र आचरण की ओर प्रेरित करें । बुद्धिमान् लोग अपने चिंतन से मेरे संकल्पों को निर्दोष

करें। सारे प्राणी आत्मीयता से अनुकूल व्यवहार करें तथा सबको पवित्र करने वाली आपकी वेदवाणी अपने संदेश से मुझे पवित्र करें ॥

पदार्थ

(हे जातवेदः) (१/१) उत्पन्न मात्र को जाने वाले परमात्मा! आप (जैसे) (देवजनाः) (१/३) विद्वान् लोग (मा) (२/१) मुझ को (मनसा) (३/१) मन से (धियः) (२/३) बुद्धि को (पुनन्तु) (लोट्.पर.पु/३) पवित्र करें। और (विश्वा) (१/३) सम्पूर्ण (भूतानि) (१/३) प्राणिमात्र (मा) (२/१) मुझ को (पुनन्तु) (लोट्.प्र.पु.३) पवित्र करें वैसे आप मुझे (पुनीहि) (लोट्.म.पु/१) पवित्र कीजिए।

३७

पुरुष एवेदᳪ सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ यजु.३१/२।

भावान्तर १

हे ब्रह्माण्ड के स्वामिन् ! इस समस्त वर्त्तमान और पूर्व तथा आगे उत्पन्न होने वाले चराचर जगत् के आप ही स्वामी हैं तथा मुक्ति सुख भी आपके ही नियन्त्रण में है। क्योंकि आप पृथिवी आदि का भी अतिक्रमण करते हैं ॥

भावान्तर २

हे ईश्वर ! यह जो वर्त्तमान संसार है, यही जो पहले था और आगे होगा, सब के स्वामी आप हैं। इसके अतिरिक्त आप मुक्ति के नित्य आनन्द के भी स्वामी हैं, जिसके कारण इस पृथ्वी आदि से ऊपर उठे हुए हैं ॥

भावान्तर ३

हे ईश्वर ! हमारे आगे जितना यह संसार है, ऐसे ही जो कुछ पहले था और आगे होगा, उन सब के तथा नित्य प्रकृति, आत्मा व मुक्ति के नित्य आनन्द के भी स्वामी आप ही हैं, जिसके कारण इस पृथ्वी आदि से ऊपर उठे हुए हैं ॥

भावान्तर ४

हे ईश्वर ! आप ही सब साधनों व ऐश्वर्यों के स्वामी हैं। हमारा शरीर, ज्ञान तथा हमारे आगे जितना यह संसार है, ऐसे ही जो कुछ पहले था और आगे होगा, उन सब के स्वामी आप हैं। आप मुक्ति के नित्य आनन्द के भी स्वामी हैं, जिसके कारण इस पृथ्वी आदि से ऊपर उठे हुए हैं। अतः मैं आपसे अतिरिक्त क्यों कामना करूँ। पुनरपि आप अपने स्वरूप की अनुभूति करा के अनुगृहीत करें। अन्यथा स्थिति नहीं बना पा रहा हूँ ॥

पदार्थ

(पुरुषः) (१/१) परमात्मा (एव) (अ.प.) ही (यत्) (१/१) उत्पन्न हुआ (च) (अ.प.) और (यत्) (१/१) जो (भाव्यम्) (१/१) उत्पन्न होने वाला है (उत) (अ.प.) और (यत्) (१/१) जो (अन्नेन) (३/१) पृथ्वी आदि के सम्बन्ध से (आधार से) (अतिरोहति) (लट्.प्र.पु/१) अत्यन्त बढ़ता है उस (इदम्) (१/१) इस (सर्वम्) (१/१) समस्त जगत् एवम् (अमृतत्वस्य) (६/१) मोक्ष सुख का स्वामी भी (ईशानः) (१/१) अधिष्ठाता है।

३८

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥

भावान्तर १

हे समस्त संसार के उत्पत्ति कर्त्ता एवं रक्षक प्रभो ! इन उत्पन्नों में कोई भी आपके समान न होने से आपका तिरस्कार या अतिक्रमण नहीं कर सकता। आप से अधिक प्रभावशाली कभी कोई नहीं हो सकता। हमें जो-जो अपेक्षाएँ होती हैं, वे सब आप ही पूर्ण करते हैं। परन्तु उसके लिए पुरुषार्थ तथा आपके प्रति समर्पण करना होता है। पुनः हम अनन्त ऐश्वर्यों के उपभोक्ता बन जाते हैं ॥

भावान्तर २

हे समस्त ब्रह्माण्ड के स्वामिन् ईश्वर ! आपसे बढ़कर कहीं कोई नहीं है। इन उत्पन्नों में से भी कोई आपका अतिक्रमण नहीं कर सकता। अतः आपको

छोड़कर इनसे कुछ पाने की कामना हम नहीं कर सकते और हमें जो अपेक्षित है, प्रथम तदर्थ पुरुषार्थ कर आपको समर्पित करते हैं। पुनः आप हमारी उन कामनाओं को पूर्ण करते हैं। इसी नियम से हम अपनी सभी उपलब्धियों को प्राप्तकर उनका उपभोक्ता स्वामी बनते हैं। सो मैं आपके दर्शन की कामना से ध्यानोपासना रूप में पुरुषार्थ कर आपको समर्पित करता हूँ। आप मेरी यह कामना पूर्ण करें॥

भावान्तर ३

हे सृष्टिकर्त्ता: ईश्वर ! आपसे बढ़कर कहीं कोई नहीं। इस जड़-चेतन संसार में आपका अतिक्रमण कोई नहीं कर सकता है। मैं आपके दर्शन की कामना रखता हूँ और एतदर्थ प्रयास कर रहा हूँ सो उसे आप पूर्ण करें, जिससे मैं आनन्द का स्वामी बनूँ॥

भावान्तर ४

हे ईश्वर ! आप इस संसार के रक्षक और उत्पादक हैं। आप सबसे महान् हैं। इनमें से कोई भी आपकी समानता नहीं रखता। मैं आपके दर्शन की कामना रखता हूँ और तदर्थ आपका ध्यान, उपासना कर रहा हूँ। आप इसे पूर्ण करें, जिससे मैं आनन्द का स्वामी बनूँ॥

भावान्तर ५

हे ईश्वर ! आपने जिस इस संसार को बनाया या इनसे सम्बद्ध जीवों को किया, उनमें से कोई भी आपसे बढ़कर नहीं है। आप ही सर्वोपरि हैं। अतः मैं आपके दर्शन की कामना रखता हूँ, उसे आप पूर्ण करें॥

भावान्तर ६

हे ईश्वर ! आप सम्पूर्ण उत्पन्न ब्रह्माण्ड तथा अनुत्पन्न प्रकृति व जीवात्माओं के स्वामी हैं। आप सबसे बढ़कर हैं, अतः आपका इनमें से कोई भी अतिक्रमण नहीं कर सकता। त्याग और पुरुषार्थ के आधार पर हमारी सम्पूर्ण कामनाओं को आप पूर्ण करने वाले हैं। उसी कारण से हम ज्ञान-विज्ञान और भौतिक साधनों से सम्पन्न होकर आपको प्राप्त कर पाते हैं। सो मैं आपके दर्शन की कामना रखता हूँ, उसे आप पूर्ण करें, जिससे मैं आनन्द का स्वामी बनूँ॥

भावान्तर ७

हे ईश्वर ! आपसे बढ़कर यह संसार तो है नहीं। पुनः आपके स्थान में इनको क्यों स्मरण करूँ। मैं आपके दर्शन की कामना रखता हूँ, उसे आप पूर्ण करें, जिससे मैं आनन्द का स्वामी बनूँ ॥

भावान्तर ८

हे सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर ! आप सबसे महान् हैं। इन उत्पन्न या अनुत्पन्नों में से कोई भी आपकी बराबरी नहीं कर सकता। अतः हमको जिस किसी पदार्थ की कामना होती है, उसके निमित्तक साधनों का अनुष्ठान तथा आपको अपना समर्पण करते हैं। पुनः आप उसे पूर्ण कर देते हैं। इसी से हम अपने अभीष्ट साधनों से सम्पन्न हो जाते हैं। प्रभो ! आपकी प्राप्ति की कामना से मैं योगाभ्यास पूर्वक आपकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना कर रहा हूँ और आपको समर्पित हो रहा हूँ। सो आप हमें अपने साक्षात्कार से स्वरूप में प्रतिष्ठित करें ॥

भावान्तर ९

हे सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर ! आप सबसे महान् हैं। इन उत्पन्नों में से कोई भी आपकी बराबरी नहीं कर सकता है। अतः हमको जिस किसी पदार्थ की कामना होती है, उसके निमित्तक साधनों का अनुष्ठान तथा आपको अपना समर्पण करते हैं। पुनः आप उसे पूर्ण कर देते हैं। इसी से हम अपने अभीष्ट साधनों से सम्पन्न हो जाते हैं। प्रभो ! आपकी प्राप्ति की कामना से मैं योगाभ्यास पूर्वक आपकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना कर रहा हूँ और आपको समर्पित हो रहा हूँ। सो आप हमें अपने साक्षात्कार से सम्पन्न करें ॥

पदार्थ

हे (प्रजापते) (सम्बो०/१) सब प्रजा के स्वामी परमात्मा! (त्वत्) (५/१) आप से (अन्य) (१/१) भिन्न दूसरा कोई पदार्थ (ता) (१/३) उन (एतानि) (१/३) इन (विश्वा) (१/३) सब (जातानि) (१/३) उत्पन्न हुए भूगोलादि जगत् को बनानेहारा और (परिता) (१/१) व्यापक स्वामी (न) (अ.प.) नहीं है।

३९

प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे।
यो भूतः सर्वस्येश्वरो यस्मिन्त्सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥
अथर्व. ११/४/१।

भावान्तर १

हे सर्वान्तर्यामिन् परमेश्वर ! यह ब्रह्माण्ड आपकी सुरक्षा में चलायमान है, क्योंकि आप ही इसके प्राण = आधार हैं तथा हम सब आत्माओं में भी प्रविष्ट होकर सबको प्रेरित करने में समर्थ हैं। आपसे हमारा यह प्राणयुक्त जीवन चल रहा है। अतः आप प्राणों के भी प्राण हैं। समस्त ब्रह्माण्ड आपके नियन्त्रण में है। आप सबके स्वामी होकर सबके ऊपर विराजमान हैं तथा सब आपके अन्दर प्रतिष्ठित हैं ॥

भावान्तर २

हे सर्वशक्तिमान् प्रभो ! आप प्राण के समान सबके आधार तथा सबको अपने नियन्त्रण में रखने वाले हैं। आप सबके स्वामी हैं तथा सभी आप में ही प्रतिष्ठित हैं ॥

भावान्तर ३

हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ! आप समस्त ब्रह्माण्ड में प्रविष्ट होकर सबको प्रेरित करने में समर्थ हैं। यह प्राण जो हमारे शरीर के अन्दर प्रतिष्ठित है, इसको आप ही व्यवस्थित करते हैं। इससे आपकी उच्चतम सत्ता सिद्ध है तथा मेरे प्राण जो अव्यवस्थित हो रहे हैं, इन्हें कृपया व्यवस्थित कर दें, जिससे मैं आपकी प्राप्ति करने में समर्थ हो सकूँ ॥

भावान्तर ४

हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ! आप समस्त ब्रह्माण्ड तथा मेरी आत्मा के प्राण हैं। हम सब में प्रविष्ट होकर सबको प्रेरित करने में समर्थ हैं। आपसे हमारा प्राणयुक्त जीवन चल रहा है। अतः आप प्राणों के भी प्राण हैं। समस्त ब्रह्माण्ड आपके नियन्त्रण में है। आप सबके स्वामी होकर सबके ऊपर विराजमान हैं तथा सब आपके अन्दर प्रतिष्ठित हैं ॥

भावान्तर ५

हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ! आप समस्त ब्रह्माण्ड तथा मेरी आत्मा के धारक होने से प्राण हैं तथा सब में प्रविष्ट होकर सबको प्रेरित करने में समर्थ हैं। समस्त ब्रह्माण्ड आपके नियन्त्रण में है। आप सबके स्वामी होकर सबके ऊपर विराजमान हैं तथा सब आपके अन्दर प्रतिष्ठित हैं ॥

भावान्तर ६

हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ! आप समस्त ब्रह्माण्ड तथा मेरी आत्मा के प्राण हैं। आपसे ही हमारा यह प्राणयुक्त जीवन चल रहा है। समस्त ब्रह्माण्ड आपके अन्दर प्रतिष्ठित है तथा नियन्त्रण में है। आप सबके स्वामी होकर सबके ऊपर विराजमान हैं। प्रभो ! आपसे प्रार्थना है कि आप वर्त्तमान में किस प्रकार से हमारे शरीर, आत्मा या संसार का नियन्त्रण कर रहे हैं; यह दिखाने की कृपा करें !!

भावान्तर ७

हे सर्वजीवनप्रदाता प्राणरूप परमेश्वर ! आप निरन्तर हमारे जीवन को चला रहे हैं। जैसे हमारे शरीर में प्राण वायु निरन्तर गति करती हुई बाहर से अन्दर शक्ति पहुँचाती है तथा अन्दर से धातु मलों को बाहर कर शरीर को चलाती है, वैसे ही आप भी निरन्तर ज्ञान-बल आदि देकर तथा अज्ञान-निराशा आदि को दूर करते हुए सतत हमारा जीवन अग्रसर कर रहे हैं। आपके आधीन यह सारा विश्व सुरक्षित है। आप निश्चय से सबके स्वामी हैं ॥

पदार्थ

(इदम्) (१/१) यह (सर्वम्) (१/१) सब (चराचर जगत्) (यस्य) (६/१) जिसके (वशे) (७/१) नियन्त्रण में है। (यः) (१/१) जो (सर्वस्य) (६/१) सबका (ईश्वरः) (१/१) स्वामी (अद्वितीय राजा) (भूतः) (१/१) है (यस्मिन्) (७/१) जिसमें (सर्वम्) (७/१) सब कुछ (प्रतिष्ठितम्) (१/१) समाहित है (उस) (प्राणाय) (४/१) प्राणाधार परमेश्वर के लिए (नमः) (अ.प.) नमन हो।

४० भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥यजु. ३६/३।

भावान्तर १

हे परमात्मन् ! आप प्राण से भी प्रिय हैं। आप स्वयं सुखस्वरूप तथा हमारे सम्पूर्ण दुःखों को दूर करने वाले हैं। हम आपके तत्त्वज्ञानरूप तेज को ग्रहण करते हैं, एतदर्थ हमारी बुद्धि को अपने मार्ग पर प्रेरित करें॥

भावान्तर २

हे परमात्मन् ! आप प्राण से भी प्रिय हैं, क्योंकि हमारे जीवन के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्राणों की रचना और व्यवस्था आपने की है। आप स्वयं सुखस्वरूप तथा हमारे सम्पूर्ण दुःखों को दूर करने वाले हैं। आप समस्त ब्रह्माण्ड के रचयिता, वरण करने योग्य तथा सब क्लेशों को नष्ट करने वाले हैं। हम आपके तत्त्वज्ञानरूप तेज को ग्रहण करते हैं, एतदर्थ हमारी बुद्धि को अपने मार्ग पर प्रेरित करें॥

पदार्थ

(भूः) (१/१) प्राणों के भी प्राण (भुवः) (१/१) सब दुःखों से छुड़ाने वाला (स्वः) (१/१) स्वयं सुखस्वरूप और अपने उपासकों की सब सुखों की प्राप्ति कराने वाला (सवितुः) (६/१) सब जगत् की उत्पत्ति करने वाले (देवस्य) (६/१) कामना करने योग्य (वरेणस्य) (१/१) अतिश्रेष्ठ ग्रहण व ध्यान करने योग्य (भर्गः) (१/१) सब क्लेशों को भस्म करने वाले पवित्र शुद्धस्वरूप हैं। (तत्) (२/१) उस आपके स्वरूप को (हम लोग) (धीमहि) (लोट्.उ.पु./३) धारण करें। (यः) (१/१) जो परमेश्वर (नः) (६/३) हमारी (धियः) (२/३) बुद्धियों को (उत्तम गुण कर्म स्वभावों में) (प्रचोदयात्) (आशी.प्र.पु/१) प्रेरित करें।

४१

य आत्मदा बलदा यस्य विश्वऽउपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य च्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

भावान्तर १

हे सर्वशक्तिमान् प्रभो ! आप आत्मज्ञान और शरीर आदि साधनों को देकर हमें बल प्रदान करते हैं, जिससे हम बहुविध सुखों को प्राप्त करते तथा दुःखों से बचते हैं। सम्पूर्ण विश्व को आपके आश्रय की अपेक्षा है, क्योंकि आप से यह सुरक्षित है तथा विद्वान् लोग सदैव आपकी स्तुति करते हैं। आपका सान्निध्य ही हमें सुखों से संयुक्त रखता है तथा आपकी उपेक्षा ही दुःखों का कारण बनती है। उपासना, निदिध्यासन आदि के माध्यम से हम आपके प्रत्यक्ष का प्रयास कर रहे हैं, कृपा करके हमको सफल करें॥

भावान्तर २

हे सर्वान्तर्यामिन् परमेश्वर ! आप आत्मज्ञान के देने वाले हैं। मेरे अन्दर विद्यमान हैं। विद्वान् और अन्य सभी लोग आपकी प्रशंसा करते रहते हैं। आप अब अपना आश्रय मुझे प्रदान करें। इसीलिए मैं आपकी उपासना कर रहा हूँ॥

भावान्तर ३

हे ईश्वर ! आप मुझे मेरे आत्मा का ज्ञान दीजिए ! क्योंकि आपने ही इस शरीर में मुझे स्थापित किया है। आप सब पदार्थों का यथार्थ ज्ञान तथा अपना सान्निध्य प्रदान कर आत्मबल तथा शरीर की पुष्टि, वृद्धि आदि के रूप में शारीरिक बल प्रदान करने वाले हैं। आपकी प्राप्ति के निमित्त सब लोग आपकी सुरक्षा को प्राप्त होते हैं तथा विद्वान् सदा आपके गुणों का व्याख्यान करते हैं। आपका सान्निध्य आनन्द है तथा एतदर्थ यत्नशील न रहने वाला मृतक है। अतः आपके सान्निध्य वाला ही वास्तविक रूप में जीवन जीने वाला होता है॥

भावान्तर ४

हे ईश्वर ! आप तो हमारे रक्षक हैं, हमको दुःखों से बचाने वाले हैं। तत्त्वज्ञान रूप आत्मबल देकर हमारी रक्षा कर रहे हैं। शरीर की पुष्टि, वृद्धि आदि के

रूप में शारीरिक बल प्रदान करने वाले हैं। आपके बड़प्पन के कारण सब लोग आपकी उपासना करते हैं तथा विद्वान् सदा आपकी प्रशंसा करते हैं। आपका आश्रय पाकर ही ज्ञान, बल तथा नित्य आनन्द की उपलब्धि होती है तथा इसके विपरीत घोर दुःख हमें भोगने पड़ते हैं। अतः स्वयं को समर्पित करते हुए आपकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना कर रहा हूँ। आप अपना स्वरूप ज्ञान देकर हमें सफल करें ॥

भावान्तर ५

हे ईश्वर ! आप तत्त्वज्ञान के रूप में आत्मबल तथा शरीर की पुष्टि, वृद्धि आदि के रूप में शारीरिक बल प्रदान करने वाले हैं। उसी आपकी प्राप्ति के निमित्त सब लोग उपासना करते हैं तथा विद्वान् सदा आपकी प्रशंसा करते हैं। आपका आश्रय ही ज्ञान, बल तथा नित्य आनन्द का देने वाला है और इसके विपरीत आपसे दूरी, असम्बन्ध मृत्यु आदि दुःखों को देने वाला है। अतः स्वयं को समर्पित करते हुए आपकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना कर रहा हूँ। आप हमें इतना आत्मबल दें कि आपके स्वरूप को जान लूँ ॥

भावान्तर ६

हे ईश्वर ! आप ही यथार्थ ज्ञान देकर हमें मेरे स्वरूप का बोध कराते हैं, शरीर आदि को बलवान् करते हैं। समस्त संसार आपसे उपकृत होना चाहता है। विद्वान् आपकी स्तुति-प्रशंसा सदैव करते हैं। आप का सान्निध्य ही नित्य सुख देने वाला है। आपकी उपेक्षा ही मृत्यु आदि दुःखों का कारण है। अतः हम योगाभ्यास के माध्यम से आपको शीघ्र प्राप्त कर लें; एतदर्थ हमको आत्मबल देकर सफल करें ॥

भावान्तर ७

हे ईश्वर ! आपने ही इस शरीर में मुझे स्थापित करके हमारी सत्ता का आभास कराया। आप सब पदार्थों का यथार्थ ज्ञान तथा अपना सान्निध्य प्रदान कर आत्मबल तथा शरीर की पुष्टि, वृद्धि आदि के रूप में शारीरिक बल प्रदान करने वाले हैं। आपकी प्राप्ति के निमित्त सब लोग आपकी सुरक्षा को प्राप्त होते हैं तथा विद्वान् सदा आपके गुणों का व्याख्यान करते हैं। आपका सान्निध्य आनन्द तथा तदर्थ यत्नशील न रहने वाला मृतक तथा तत्सम्पन्न ही वास्तविक रूप में जीवन जीने

वाला होता है। अतः स्वयं को समर्पित करते हुए आपकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना कर रहा हूँ। आप अपना स्वरूप ज्ञान देकर हमें सफल करें॥

भावान्तर ८

हे सर्वान्तर्यामिन् परमेश्वर ! आप हमें आत्मज्ञान देने वाले हैं। ज्ञान, आनन्द से आत्मा के बल को तथा भोजन आदि से शरीर के बल को बढ़ाते हैं। जिस आपके सान्निध्य को सभी चाहते हैं, विद्वान् लोग भी उसी आपकी प्रशंसा करते हैं। आप का आश्रय सब दुःखों से छुड़ाने वाला तथा आपका परित्याग ही सब दुःखों को प्राप्त कराने में कारण बनता है। अतः हम सम्पूर्ण समर्पण के साथ आपकी उपासना करते हुए आपको प्राप्त करना चाहते हैं॥

पदार्थ

(यः) (१/१) जो (आत्मदा) (१/१) आत्मज्ञान का दाता है (बलदा) (१/१) शरीर आत्मा और समाज के बल का दाता (यस्य) (६/१) जिसकी (विश्वे) (१/३) सब (देवाः) (१/३) विद्वान् लोग (उपासते) (लट्.प्र.पु/१) उपासना करते हैं। और (यस्य) (६/१) जिसका (प्रशिषम्) (१/१) प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं (यस्य) (६/१) जिसकी (छाया) (१/१) आश्रय ही (अमृतम्) (१/१) मोक्ष सुखदायक है (यस्य) (१/१) जिसका न मानना ही (मृत्युः) (१/१) मृत्यु आदि दुःखों का हेतु है। उस (कस्मै) (४/१) सुखस्वरूप (दैवाय) (४/१) सकल ज्ञान दाता परमात्मा की प्राप्ति के लिए (हविषा) (३/१) आत्मा और अन्तःकरण से (विधेम) (विधि.उ.पु./३) भक्ति किया करें अर्थात् उसी की आज्ञाओं का पालन में तत्पर रहें।

४२

यतोयतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ यजुर्वेद ३६/२२।

भावान्तर १

हे ईश्वर! मैं आपका अन्वेषण करते हुए बाधित, भयभीत हो रहा हूँ, भूल से कोई शारीरिक बाधा उपस्थित हो गई। आप जैसे अपनी प्रजाओं व अन्य अज्ञानी पशुओं से हमारी रक्षा करते हैं, वैसे ही सब प्रकार से इस अज्ञान को हटाकर मेरी रक्षा करें॥

भावान्तर २

हे ईश्वर ! मैं आपको जानना चाहता हूँ, परन्तु अज्ञानतावशात् पूर्ण समर्पण से भयभीत हो रहा हूँ। आप जैसे अपनी प्रजाओं व अन्य अज्ञानी पशुओं से हमारी रक्षा करते हैं, वैसे ही अभी इस अज्ञान से भी मेरी रक्षा करें ॥

भावान्तर ३

हे ईश्वर ! मैं आपको जानना चहता हूँ, परन्तु शारीरिक बाधा के कारण समर्थ नहीं हो रहा हूँ। आप जैसे अपनी प्रजाओं व अन्य अज्ञानी पशुओं से हमारी रक्षा करते हैं, वैसे ही अभी इस व्याधि व अज्ञान से भी मेरी रक्षा करें ॥

भावान्तर ४

हे ईश्वर ! मैं आपको जानने हेतु अन्दर सूक्ष्म प्रयत्न करते हुए भूल के कारण बाधित हो जाता हूँ, उससे अन्वेषण करने में भय बना रहता है। यह मेरा शरीर आपका निर्माण है, आपने ने महती चेष्टा करके इसको उत्पन्न किया है। अतः इसका उपयोग करने में मुझे कोई भय न हो, ऐसी कृपा करें। भूल से कभी शारीरिक बाधा उत्पन्न न करूँ, इतना सूक्ष्म विज्ञान दीजिए। आप जैसे अपनी प्रजाओं व अन्य अज्ञानी पशुओं से हमारी रक्षा करते हैं, वैसे ही मेरे इस अज्ञान से भी मेरी रक्षा करें ॥

भावान्तर ५

हे ईश्वर ! मैं अपने स्वरूप सहित आपका अन्वेषण करते हुए भूल से कभी शारीरिक बाधा उपस्थित कर लेता हूँ। अतः आप जैसे अपनी प्रजाओं व अन्य अज्ञानी पशुओं से अन्यत्र हमारी रक्षा करते हैं, वैसे ही इस भय के स्थान से भी मेरी रक्षा करें ॥

पदार्थ

हे भगवन् ईश्वर! आप अपने कृपाकटाक्ष से (यतोयत:) जिस-जिस स्थान से (समीहसे) सम्यक् चेष्टा करते हो (तत:) उस उससे (न:) हमको (अभयम्) भयरहित (कुरु) कीजिये (न:) हमारी (प्रजाभ्य:) प्रजाओं से और (न:) हमारे

(पशुभ्य:) गौ आदि पशुओं से (शम्) सुख और (अभयम्) निर्भय (कुरु) कीजिये।।२।। यजु- ३६/२२

४३ यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम्। स्युष्टे सत्या इहाशिषः ॥ ऋ. ८/४४/२३।

भावान्तर १

हे ईश्वर! मैं आपसे सम्बद्ध होते हुए भी आपके ज्ञान, आनन्द से जुड़ नहीं पा रहा हूँ, इससे ऐसा लगता है, आप मुझसे दूर कहीं देशान्तर में हैं। कृपया इस दूरी को मिटा दें। इससे आपकी आज्ञा के अनुकूल हो जाऊँगा तथा आपने मुझे स्वीकार कर अपने ज्ञान, बल, आनन्द से युक्त कर दिया, यह सिद्ध हो जाएगा। अतः अपनी इच्छा के अनुसार अपना सान्निध्य प्रदान कर अपने अनुकूल बनने का अवसर दें॥

भावान्तर २

हे ईश्वर! मैं आपकी आज्ञा के अनुकूल हो जाऊँ तथा आप मुझे स्वीकार कर अपने ज्ञान, बल, आनन्द से युक्त कर दें। आपकी इच्छा के अनुसार अपना सान्निध्य प्रदान कर अपने अनुकूल बनने का अवसर प्रदान करें॥

भावान्तर ३

हे ईश्वर! आप मेरे समान शरीर धारण करेंगे नहीं। अतः मुझे ही आपके अनुकूल होना होगा। एतदर्थ मैं शरीर से पार्थक्य स्वीकार कर अपने स्वरूप में स्थित होता हूँ, तब मैं आपके समान शरीर रहित होता हूँ। पुनः आप मुझे अपना सान्निध्य प्रदान करते हैं, तब आप मेरे अनुकूल मुझ जैसा हो जाते हैं। सो आपकी इच्छा के अनुसार आप-सा बनने को तैयार हूँ। मुझे आप अपना सान्निध्य प्रदान कर अपने अनुकूल बनने का अवसर दें॥

भावान्तर ४

हे ईश्वर! आपकी इच्छा के अनुसार मैं आपसे मिलने को उत्सुक हूँ। मुझे आप अपना सान्निध्य प्रदान कर अपने अनुकूल बनने का अवसर दें॥

भावान्तर ५

हे ईश्वर ! अब मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। अतः आपके अनुकूल होना चाहता हूँ। यदि आप कृपा कर दें तो आपकी इच्छा के अनुसार मेरा जीवन होकर सफल हो जाएगा ॥

भावान्तर ६

हे ईश्वर ! अब आप मुझे ऐसी सामर्थ्य दीजिए, जिससे मैं आपके अनुकूल हो जाऊँ तथा आप मुझे पूरी तरह स्वीकार कर लें। तब आपकी उदारता सफल हो जाएगी ॥

भावान्तर ७

हे ईश्वर ! अब और देर मत कीजिए। मुझे अपने अनुकूल बनने हेतु ज्ञान, बल, आनन्द दीजिए। सो आपकी इच्छा के अनुसार पुरुषार्थ करने को तैयार हूँ। मुझे आप अपना सान्निध्य प्रदान कर अपने अनुकूल बनने का अवसर दें ॥

भावान्तर ८

हे ईश्वर ! अब और कुछ हो नहीं रहा है। सो आपकी दया चाहिए। आपकी ही आज्ञानुसार आपसे मिलने को तैयार हूँ। मुझे आप अपना आनन्द प्रदान कर अपने अनुकूल बनने का सामर्थ्य दें ॥

भावान्तर ९

हे ईश्वर ! अब और कुछ करने को बचा नहीं, आज सारा कार्य हो गया। सो आपकी इच्छा के अनुसार आपसे मिलने को तैयार हूँ। मुझे आप अपना सान्निध्य प्रदान कर अपने अनुकूल बनने का अवसर दें ॥

भावान्तर १०

हे ईश्वर ! जब आप मुझे अपने आनन्द से ओत-प्रोत करते, देते हैं और मैं आप में तन्मय हो जाता हूँ, तब और कुछ करने को बचा नहीं रहता। जैसे कि अभी लग रहा है। परन्तु पूरा स्पष्ट न होने से, आनन्द मन्द होने से तृप्ति नहीं हो रही है। सो यदि तृप्त कर दें तो आपकी इच्छा के अनुसार आपके अनुकूल बन जाऊँ !!

भावान्तर ११

हे ईश्वर ! मैं आपकी आज्ञा के अनुकूल हो गया और अब मेरी अभिलाषा को आनन्द देकर पूर्ण कर दिया। अतः आपकी दया चरितार्थ हो गई। आगे भी इसी प्रकार ज्ञान, आनन्द देकर समर्थ करते रहें, जिससे आपकी सन्निधि को पूर्णतः प्राप्त कर लूँ ॥

पदार्थ

(अग्ने) हे ईश्वर (यत्) यदि (अहम्) मैं (त्वम्) तुम्हारे अनुकूल (स्याम) हो (त्वं) और यदि आप (वा घ) निश्चय से (त्वं) आप (अहं) मेरे अनुकूल (स्या) हो जाये (स्युः) हो जाये (ते) आपके (सत्या) सत् कामनाएँ (इह) मेरे इसी जन्म में (आशिष) आशीर्वाद।

४४

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः ॥ ऋ.१/१/६।

भावान्तर १

हे स्नेहमूर्ते परमात्मन् ! जो आपको अपना समर्पण कर देता है, आप निश्चय से उसका उद्धार करते हैं। यह आपका स्वभाव है। अतः मेरा समर्पण स्वीकार कर मुझे अपना लीजिए ॥

भावान्तर २

हे स्नेहमूर्ते परमात्मन् ! जो आपको अपना समर्पण कर देता है, आप निश्चय से उसका उद्धार करते हैं। यह आपका स्वभाव है। मेरा भी समर्पण स्वीकार कर मुझ पर प्रसन्न होइए और मुझे कृतार्थ कीजिए !!

भावान्तर ३

हे दयालु परमात्मन् ! जो आपको अपना जितना समर्पण करता है, आप निश्चय से उसका उतना उद्धार करते हैं। यह आपका स्वभाव है। अतः मुझ पर प्रसन्न होइए ॥

पदार्थ

हे (अंगिर:) ब्रह्मांड के अंग पृथिवी आदि पदार्थों को प्राणरूप और शरीर के अंगों को अन्तर्यामीरूप से रसरूप होकर रक्षा करनेवाले होने से यहां प्राण शब्द से ईश्वर लिया है। (अंग) हे सब के मित्र (अग्ने) परमेश्वर! (यत्) जिस हेतु से आप (दाशुषे) निर्लोभता से उत्तम २ पदार्थों के दान करने वाले मनुष्य के लिये (भद्रम्) कल्याण, जो कि शिष्ट विद्वानों के योग्य है, उसको (करिष्यसि) करते हैं, सो यह (तवेत्) आप ही का (सत्यम्) सत्य (व्रतम्) शील है।।६।।

४५

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो
वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु।
शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ॥यजु.३६/२।

भावान्तर १

हे परमेश्वर ! जो मेरे शारीरिक दोष हैं, जो मन में कुसंस्कार रूप तथा विचार में अज्ञानता से मिथ्या निर्णय के दोष हैं, उन सब दोषों को आप कुचलकर नष्ट कर दीजिए तथा उनके स्थान में सद्गुणों को भर दीजिए। हे ब्रह्माण्ड के स्वामिन् ! आप मेरे लिए सदैव कल्याणकारी रहें ॥

भावान्तर २

हे ब्रह्माण्ड के सर्वसमर्थ स्वामिन् ! हमारी आँख के छिद्र अनुचित देखना रूप दोष, हृदय के छिद्र उनसे सम्बन्धित संस्कार और मन के जो छिद्र तत्सम्बन्धी अज्ञान; जिनके कारण एकाग्रता नहीं बना पा रहा, बहिर्मुखता हो रही है। इनको नष्ट करके उचित दर्शन, स्मरण व निर्णय रूप गुणों से भर दीजिए ॥

भावान्तर ३

हे शुद्धस्वरूप परमेश्वर ! जो मेरे बाह्य दृष्टिगत आचरण के दोष हैं, जो मन में कुसंस्कार तथा विचार से कुप्रवृत्ति और विशेषकर शरीर में रस-करण-वैषम्य हैं, उन सबको आप कुचलकर नष्ट कर दीजिए तथा उनके स्थान में सद्गुणों तथा पुष्टकणों को भर दीजिए। हे ब्रह्माण्ड के स्वामी ! आप मेरे लिए सदैव कल्याणकारी रहें ॥

भावान्तर ४

हे शुद्धस्वरूप परमेश्वर ! जो मेरे बाह्य दृष्टिगत आचरण के दोष हैं, विशेषकर जो मन में कुसंस्कार तथा विचार से कुप्रवृत्ति होती है, उन सबको आप कुचलकर नष्ट करके उचित दर्शन, स्मरण व निर्णय रूप गुणों से भर दीजिए ॥

भावान्तर ५

हे शुद्धस्वरूप परमेश्वर! जो मेरे विशेषकर मन के दोष हैं - अज्ञान, कुसंस्कार, विपरीत मान्यताएँ तथा उनसे उत्पन्न कुप्रवृत्तियाँ, बाह्य आचरण के दोष हैं, उन सबको आप कुचलकर नष्ट कर दीजिए तथा उनके स्थान में सद्गुणों को भर दीजिए। हे ब्रह्माण्ड के स्वामिन् ! आप मेरे लिए सदैव कल्याणकारी रहें ॥

पदार्थ

(यत्) जो (मे) मेरे (चक्षुषः) नेत्र की वा (हृदयस्य) अन्तःकरण की (छिद्रम्) न्यूनता (वा) वा (मनसः) मन की (अतिृण्णम्) व्याकुलता है (तत्) उसको (बृहस्पतिः) बड़े आकाशादि का पालक परमेश्वर (मे) मेरे लिये (दधातु) पुष्ट वा पूर्ण करे (यः) जो (भुवनस्य) सब संसार का (पतिः) रक्षक है वह (नः) हमारे लिये (शम्) कल्याणकारी (भवतु) होवे। ।२। ।

४६

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न वि चिकित्सति ॥यजु. ४०/६।

भावान्तर १

जो सब पदार्थों सहित स्वयं को ईश्वर में और सब पदार्थों सहित स्वयं में ईश्वर को देखता है, वही निःसन्देह मुक्ति को प्राप्त होता है। क्योंकि जैसे शरीर को आत्मा मानकर देखकर उसमें रागद्वेष आदि अवश्य उत्पन्न होते हैं तथा आत्मा को पृथक् देखने पर अस्थि-मांस आदि दिखने से क्लेश प्रभावी नहीं होते हैं। उसी प्रकार संसार को ईश्वर में तथा ईश्वर को संसार में देखने पर संसार के प्रति राग-द्वेष आदि अवश्य उत्पन्न नहीं होते हैं ॥

भावान्तर २

हे प्रभो ! इन सारे पदार्थों सहित मैं आपमें विद्यमान हूँ और सब पदार्थों में होते हुए आप मुझमें हैं। परन्तु ऐसा लग नहीं रहा है। अतः आप पर संशय और अपने अन्य व्यवहारों पर संशय होता रहता है। कृपया यथार्थता का प्रत्यक्ष कराकर मुझे निःसन्देह कर मुक्त कीजिए ॥

भावान्तर ३

जो संसार की सभी आत्माओं को ईश्वर में तथा ईश्वर को संसार की सभी आत्माओं में ओत-प्रोत देखता है, वह कभी किसी प्रकार से विचलित नहीं होता है। वह अपने सहित सबको ईश्वर के सम्बन्ध से परिवारिक सदस्य के रूप में देखता है। उसे कभी ऐसा नहीं लगता कि मैं अकेला हूँ। मैं या कोई अनाथ है, मैं कौन हूँ, कहाँ हूँ। सब इधर-उधर क्यों बिखरे पड़े हैं आदि ॥

भावान्तर ४

जो सभी पदार्थों को ईश्वर में देखता है और ईश्वर को सभी पदार्थों में देखते हुए स्वयं में देखता है। वही सन्देह रहित उपासक होता है ॥

भावान्तर ५

हे प्रभो ! जो तत्त्ववेत्ता समस्त चराचर को आप सर्वव्यापक में स्थित देखता है और सब में आपको व्यापक देखता है। उसे आपके होने में कभी कोई संशय नहीं होता है ॥

पदार्थ

हे मनुष्यो! (यः) जो विद्वान् जन (आत्मन्) परमात्मा के भीतर (एव) ही (सर्वाणि) सब (भूतानि) प्राणी-अप्राणियों को (अनुपश्यति) विद्या, धर्म और योगाभ्यास करने के पश्चात् ध्यानदृष्टि से देखता है (तु) और जो (सर्वभूतेषु) सब प्रकृत्यादि पदार्थों में (आत्मानम्) आत्मा को (च) भी देखता है वह विद्वान् (ततः) तिस पीछे (न) नहीं (वि चिकित्सति) संशय को प्राप्त होता ऐसा तुम जानो।।६।।

४७ यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः। तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः। यजु. ४०/७।

भावान्तर १

हे ईश्वर ! आपको जान लेने पर सारे प्राणी अपने दिखाई देने लगते हैं। पुनः हमारे सारे शोक और क्लेश समाप्त हो जाते हैं, क्योंकि तब हम न तो किसी का कुछ छीनना चाहते हैं, न उपेक्षा तिरस्कार करते हैं। क्योंकि सबको हमारे जैसा सुख मिले और सबके दुःख दूर हो जाएँ, यही हमारी भावना रहती है तथा हम यथायोग्य उनका सहयोग करते हैं तथा अनिष्ट गुणों के रखने वाले से आवश्यक दूरी भी बनाकर रख लेते हैं ॥

भावान्तर २

हे प्रभो ! आपका सान्निध्य मिल जाने पर यह सम्भव है कि सभी आत्माएँ हमें ऐसी दिखने लगें कि वे भी आपको पाकर ही कृतकृत्य होने योग्य हैं। क्योंकि जब आप प्राप्त हो जाते हैं तब लौकिक सुख पाने का न कोई मोह रहता है, न छोड़ने का शोक। क्योंकि सब का निदान आप एक से ही होना है ॥

भावान्तर ३

हे आनन्दस्वरूप परमेश्वर ! आपको जाने बिना हम अन्य सभी आत्माओं के सुख-दुःख को अपने सुख-दुःख के समान नहीं मान सकते, क्योंकि आपके आनन्द के अभाव में हमको उपलब्ध लौकिक सुख सीमित तथा अत्यल्प होता है। अतः हम उस सुख से सन्तुष्ट न होने के कारण परस्पर के सुख पर अधिकार करना चाहते हैं, उससे हमारा विरोध बना रहता है। इस स्थिति में हम एक नहीं हो सकते हैं। अतः आपकी उपलब्धि हो जाने पर स्वतन्त्र रूप से आपसे प्राप्त आनन्द से सन्तुष्टि हो जाने से हमारा पारस्परिक विरोध समाप्त हो जाता है और इस अवस्था में हमारा न कोई मोह रहता है, न कोई शोक का अवसर और हम सबको अपने समान मान लेते हैं। अतः आप अपनी अनुभूति शीघ्र कराएँ ॥

भावान्तर ४

हे आनन्दस्वरूप परमेश्वर ! जिस आपको जान लेने से सब प्राणी अपनी आत्मा के तुल्य हो जाते हैं। उस आप में स्थित होकर हम भी आनन्द से सन्तुष्ट हो जाते हैं। तब हमारे अन्दर न कोई मोह रहता है, न कोई शोक। तब हम सबको अपने समान मान लेते हैं। अतः आप अपनी अनुभूति शीघ्र कराएँ ॥

पदार्थ

हे मनुष्यो! (यस्मिन्) जिस परमात्मा, ज्ञान, विज्ञान वा धर्म में (विजानतः) विशेषकर ध्यानदृष्टि से देखते हुए को (सर्वाणि) सब (भूतानि) प्राणीमात्र (आत्मा, एव) अपने तुल्य ही सुख-दुःखवाले (अभूत्) होते हैं (तत्र) उस परमात्मा आदि में (एकत्वम्) अद्वितीय भाव को (अनुपश्यतः) अनुकूल योगाभ्यास से साक्षात् देखते हुए योगिजन को (कः) कौन (मोहः) मूढावस्था और (कः) कौन (शोकः) शोक वा क्लेश होता है अर्थात् कुछ भी नहीं।।७।।

४८

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥ यजु.३२/१४।

भावार्थ

जिस निर्णीत बुद्धि को विद्वत्समूह धारण करता है और पदार्थ के व्यावहारिक ज्ञान को ग्रहण कराने वाली जिस बुद्धि से अनुभवी लोग पदार्थ विज्ञान को धारण करते हैं अथवा जिस बुद्धि से आपके स्वरूप को पू. स्वामी सत्यपति जी धारण किए हुए हैं और महर्षि दयानन्द जी ने धारण किया। आपके आनन्द-ज्ञान और प्रयत्न स्वरूप को मैं जिससे धारण कर सकूँ, वही बुद्धि आप मुझे भी प्रदान करें ॥

पदार्थ

हे (अग्ने) स्वयं प्रकाशरूप होने से विद्या के जनानेहारे ईश्वर! वा अध्यापक विद्वन्! (देवगणः) अनेक विद्वान् (च) और (पितरः) रक्षा करनेहारे ज्ञानी लोग (याम्) जिस (मेधाम्) बुद्धि वा धन को (उपासते) प्राप्त होके सेवन करते हैं (तया)

उस (मेधया) बुद्धि वा धन से (माम्) मुझको (अद्य) आज (स्वाहा) सत्यवाणी से (मेधाविनम्) प्रशंसित बुद्धि वा धनवाला (कुरु) कीजिये ।।१४।।

४९

युञ्जते मनऽउत युञ्जते धियो विप्रा
विप्रस्य बृहतो विपश्चितः । वि होत्रा दधे
वयुनाविदेकऽइन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः ॥

भावार्थ

हे ईश्वर! मैं उपासक विप्र आपके महान् ज्ञानस्वरूप में अपने मन और बुद्धि को लगा रखा हूँ। आप सृष्टि की रचना, धारण और संहार करने वाले हैं, सर्वज्ञ हैं, एक ही हैं। आप सर्वप्रेरक देव की प्रशंसा बहुत बड़ी है ॥

पदार्थ

हे मनुष्यो जी (वयानवित्) (१/१) उत्कृष्ट ज्ञानों में प्रवीण (एकः) (१/१) अकेला (वि दधे) (लट्.प्र.पु/१) (सबको) रचता है। (सवितुः) (६/१) सर्वान्तर्यामी (देवस्य) (६/१) प्रकाशक परमात्मा की (मही) (१/१) बड़ी (परिष्टुतिः) (१/१) स्तुति है (होत्राः) (१/३) गुणग्रहिता (विप्राः) (१/३) मेधावी योगी जन (बृहतः) (६/१) सबसे बड़े (विपश्चितः) (६/१) परमेश्वर के बीच (मनः) (२/१) मन को (युञ्जते) (लट्.प्र.पु/१) समाहित करते हैं। (उत) (अ.प.) और (धियः) (२/३) –बुद्धि वा कर्मों को (युञ्जते) (लट्.प्र.पु/१) युक्त करते हैं। (इत्) (अ.प.) उसी की तुम उपासना करो।

५०

येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा ।
तेन सहस्रधारेण पावमानीः पुनन्तु नः ॥ साम. १३०२ ।

भावान्तर १

जिस अनेक प्रकार के मन, विषय आदि ज्ञानस्रोतों से विद्वान् लोग स्वयं को अज्ञान से रहित और ज्ञान से युक्त करते हैं, उन सब स्रोतों से हे पवित्रकारि प्रभो! हमको भी पवित्र करें ॥

भावान्तर २

हे ईश्वर! जिस तत्त्वज्ञान या आपके पवित्र शुद्धस्वरूप से विद्वान् स्वयं को सदा अज्ञान रहित करते हैं। उसी तत्त्वज्ञान का प्रवाह या आपका पवित्र शुद्धस्वरूप मुझे पवित्र करें ॥

पदार्थ

(देवाः) (१/३) विद्वान् लोग (येन) (३/१) जिस (पवित्रेण) (३/१) ज्ञानस्रोतों से (सदा) (अ.प) सदा (आत्मानम्) (२/१) अपने आप को (पुनते) (लट् प्र पु/ १) पवित्र करते हैं, ज्ञानयुक्त करते हैं। (पावमानी) (२/१) हे पवित्रकारी प्रभो (तेन) (३/१) उस (सहस्रधारेण) (३/१) विविध प्रकार के ज्ञानस्रोतों से (नः) (२/३) हमको भी (पुनन्तु) (लट् पर् पु /३) पवित्र करें।

५१

येनं द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः।
योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

यजु.३२/६।

भावान्तर १

हे सर्वव्यापक परमेश्वर ! आप अत्यन्त महान् हैं, क्योंकि आपने सूर्यादि तीक्ष्ण प्रकाश वाले लोक-लोकान्तरों को रचा है तथा अन्तरिक्ष में पूरे माप-तोल से भार-आकार-आकर्षण आदि युक्त ग्रह-उपग्रहों को बनाकर विविध प्रकार से संचालित कर रहे हैं। आपने संसार में सुख-दुःख को मर्यादित किया है और दुःख-रहित मोक्ष आपके ही आधीन है। प्रभो ! हमें अपनी प्राप्ति हेतु समर्थ कीजिए, जिसके लिए हम समर्पित होकर आपकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करते हैं ॥

भावान्तर २

हे आनन्दस्वरूप, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, सृष्टिकर्ता ईश्वर ! आप तीव्र प्रकाशयुक्त सूर्य तथा कोमल स्वभावयुक्त चन्द्र, पृथिवी आदि को धारण किए हुए हैं। आपने अनेक सुख साधनों को धारण करते हुए सर्वथा दुःख रहित मोक्ष को

धारण कर रखा है। आप अनन्त अन्तरिक्ष में विशेष माप-तोल-भार आदि प्रमाण से युक्त अनेक लोक-लोकान्तरों को रचकर उन्हें अपनी-अपनी कक्षा में भ्रमण कराते हुए हम जीवों के निमित्त इस संसार को चला रहे हैं। कृपाकर मुझे आप अपना स्वरूप दिखा दें ॥

भावान्तर ३

हे ईश्वर ! आप तीव्र प्रकाशयुक्त सूर्य तथा कोमल स्वभावयुक्त चन्द्र, पृथिवी आदि को धारण किए हुए हैं। आपने अनेक सुख साधनों को धारण करते हुए सर्वथा दुःख रहित मोक्ष को धारण कर रखा है। आप अनन्त अन्तरिक्ष में विशेष माप-तोल-भार आदि प्रमाण से युक्त अनेक लोक-लोकान्तरों को रचकर उन्हें अपनी-अपनी कक्षा में भ्रमण कराते हुए हम जीवों के निमित्त इस संसार को चला रहे हैं। ये सब आपके सान्निध्य में सुरक्षित है, कृपाकर मुझे भी अपना सान्निध्य प्रदान करें ॥

भावान्तर ४

हे ईश्वर ! एकदेशी जड़ों और जीवात्माओं का एक साथ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड से सम्बन्ध बन नहीं सकता। सर्वव्यापक होने से आपका ही सम्बन्ध बन सकता है। अतः आपने ही तीव्र प्रकाश-युक्त सूर्य तथा कोमल स्वभाव-युक्त चन्द्र, पृथिवी आदि बनाकर धारण किए हुए हैं। आपने अनेक सुख साधनों को धारण करते हुए सर्वथा दुःख रहित मोक्ष को धारण कर रखा है। आप अनन्त अन्तरिक्ष में विशेष माप-तोल-भार आदि प्रमाण से युक्त अनेक लोक-लोकान्तरों को रचकर उन्हें अपनी-अपनी कक्षा में भ्रमण कराते हुए हम जीवों के निमित्त इस संसार को चला रहे हैं। कृपाकर मेरे लिए आप अपना यह स्वरूप प्रकट करें ॥

पदार्थ

हे मनुष्यो! (येन) जिस जगदीश्वर ने (उग्रा) तीव्र तेजवाले (द्यौः) प्रकाशयुक्त सूर्यादि पदार्थ (च) और (पृथिवी) भूमि (दृढा) दृढ़ की है, (येन) जिसने (स्वः) सुख को (स्तभितम्) धारण किया, (येन) जिसने (नाकः) सब दुःखों से रहित मोक्ष धारण किया, (यः) जो (अन्तरिक्षे) मध्यवर्ती आकाश में वर्त्तमान

(रजसः) लोकसमूह का (विमानः) विविध मान करनेवाला है उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) स्वयं प्रकाशमान, सकल सुखदाता ईश्वर के लिये हम लोग (हविषा) प्रेम भक्ति से (विधेम) सेवा करें वा प्राप्त होवें ।।६।।

५२

यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यो देवानां नामधाऽएकऽएव तꣳ सम्प्रश्नं भुवना यन्त्यन्या ॥

भावार्थ

हे ईश्वर ! आप निश्चय से हमारे सब प्रकार से रक्षक हैं। आपने ही हमको इस संसार में शरीर से सम्बद्ध किया है। आप ही सब ज्ञानों, सुखों एवं धर्मों को धारण करते हैं। आप अपनी सर्वज्ञता से पदार्थ-मात्र को जान रहे हैं। आपने ही इस सृष्टि के सूर्य आदि की रचना करके हमारे व्यवहार की सिद्धि के लिए इन सब का नामकरण किया है, अन्यथा हम मनुष्यों के द्वारा तो असम्भव ही था। वेदों में जितने शब्द हैं नाम और क्रिया के रूप, वे किसी मनुष्य के द्वारा उत्पन्न करने असम्भव हैं, भाषा के अभाव में परस्पर ज्ञान-विज्ञान का सम्प्रेषण न हो पाने से। इसलिए आपकी ही रचनाओं को पूछने = जानने में आज तक सभी बुद्धिमान् लगे हुए हैं। परन्तु उन सब में आप ही सर्वोपरि ज्ञेय हैं, क्योंकि आप को जान लेने पर सम्पूर्ण अभीष्टों की प्राप्ति हो पाती है ॥

पदार्थ

(यः) (१/१) जो (नः) (00) हमारा (पिता) (१/१) पालक रक्षक (जनिता) (१/१) उत्पादक तथा (यः) (१/१) जो (विधाता) (१/१) कर्मानुसार फल देने वाला (विश्वा) (२/३) समस्त (भवनानि) (२/३) लोकों को (धामानि) (२/३) जन्म स्थान वा मान को (वेद) (लट् प्र पु /१) जानता है (यः) (१/१) जो (देवानाम्) (६/३) देवों का (नामधाः) (१/१) अपनी विद्या से नाम धरने वाला (एकः) (१/१) अकेला (एव) (अ.प.) ही है (जिसको जानने पर) अन्या (१/१) अन्य (भुवना) (१/१) लोकस्थ पदार्थ (यन्ति) (लट् प्र पु /३) प्राप्त होते हैं (तम्) (२/१) उसको (तुम) (सम्प्रश्न (लोट् म पु /१)) जिज्ञासा करो। जानो।

५३

यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति।
स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥
अथर्व. १०/८/१।

भावान्तर १

हे ईश्वर ! आप मेरे शरीर, मन आदि के नियन्ता हैं, अपितु अतीत, अनागत, विद्यमान जगत् और कारणरूप प्रकृति के भी नियन्ता तथा स्वामी हैं। आपकी दिव्य व्यवस्था में यह संसार तथा हम सब का जीवन सुरक्षित चल रहा है। महान् आनन्द जो आपका स्वरूप है, उसकी हमें अनुभूति कराकर कृतार्थ करें। आपके अनुशासन का उल्लंघन किसी से सम्भव नहीं है। परन्तु आप द्वारा प्रदत्त स्वतन्त्रता में हम स्वयं को सर्वथा समर्थ मानकर उल्लंघन का प्रयास करते रहते हैं और हानि उठाते जाते हैं ॥

भावान्तर २

हे ईश्वर ! आप अतीत, अनागत, विद्यमान जगत् और कारणरूप प्रकृति के नियन्ता हैं। आपकी दिव्य व्यवस्था में यह संसार तथा हम सब का जीवन सुरक्षित चल रहा है। आप मेरे शरीर, मन आदि के भी अन्ततः नियन्ता हैं। उन्हें मेरे अनुकूल कीजिए क्योंकि उन पर अनियन्त्रण के कारण मैं आपकी प्राप्ति में असमर्थ हो रहा हूँ। महान् आनन्द जो आपका स्वरूप है, उसकी हमें अनुभूति कराकर कृतार्थ करें। एतदर्थ मैं आपकी उपासना कर रहा हूँ ॥

भावान्तर ३

हे प्रभो ! आप अतीत, अनागत, विद्यमान जगत् और कारणरूप प्रकृति तथा हम सब नित्य आत्माओं के अधिष्ठाता हैं। अभी भी आपके ही प्रेक्षण और कुशल प्रबन्ध में संसार तथा हम सब का जीवन सुरक्षित चल रहा है। आप आनन्दमय हैं। हमें भी अपने आनन्द से आप्लावित करें। आपको बहुत-बहुत नमस्कार ॥

भावान्तर ४

हे परमेश्वर ! जो विद्यमान संसार है और नष्ट होकर पुनः भविष्य में होने वाला है, उसके तथा अन्य सब जीवों के अधिष्ठाता आप ही हैं। आप से अतिरिक्त इनके ऊपर पूर्ण नियन्त्रण कोई नहीं रख सकता। आनन्द ही आपका स्वरूप है, जिसकी प्राप्ति के लिए मैं तत्पर हूँ। एतदर्थ आपकी उपासना कर रहा हूँ ॥

पदार्थ

वह परमेश्वर (यः) (१/१) जो (भूतम्) (२/१) भूत (च) (अ.प.) और (भव्यम्) (२/१) भविष्यत को (यथावत् जानता है) (च) (.प.) और (यः) (१/१) जो (सर्वम्) (१/१) सब जगत को रचता, पालन व लय (च) (अ.प.) और करता (अधितिष्ठति) (लट् प्र पु /१) सब पदार्थों का स्वामी है (च) (अ.प.) और (स्वर्यस्व) (६/१) मोक्षसुख देने वाला (केवलम्) (१/१) निर्विकार स्वरूप है (तस्मै) (४/१) उसके लिए (ज्येष्ठाय) (४/१) सबसे बड़ा (ब्रह्मणे) (४/१) सब सामर्थ्य से युक्त परमात्मा को (नमः) (अ.प.) नमस्कार हो.

५४

योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे।
सखायऽइन्द्रमूतये ॥ यजु. ११/१४, ऋ. १/३०/७।

भावान्तर १

ज्ञानोत्पत्ति के सभी अवसरों और दोषों के साथ संघर्ष करते समय उन पर विजय तथा अपनी रक्षा और आपके विशेष सान्निध्य हेतु सबके प्रति कल्याण भावना रखते हुए अति-प्रेम-भाव से आपको बुला रहा हूँ, आपकी उपासना कर रहा हूँ ॥

भावान्तर २

इस उपासनाकाल में ज्ञानोत्पत्ति के लिए और दोषों के साथ संघर्ष करते समय उन पर विजय तथा अपनी रक्षा हेतु अपने मित्रों के समान आपको बुला रहा हूँ। अतः विशेष सान्निध्य हेतु आपकी उपासना कर रहा हूँ ॥

भावान्तर ३

हे शुद्धस्वरूप परमेश्वर! आत्मकल्याणकारी अर्थात् आपकी प्राप्ति से सम्बन्ध गुणों को प्राप्त करने में तथा दोषों को छोड़ने में आपकी कृपा अत्यन्त अनिवार्य है। अतः दोनों अवस्थाओं में तथा अपनी रक्षा के लिए आपकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करता हूँ। सो आप मुझ पर अवश्य कृपा करें॥

पदार्थ

हम लोग (सखायः) परस्पर मित्र होकर अपनी (ऊतये) उन्नति वा रक्षा के लिये (योगेयोगे) अति कठिनता से प्राप्त होने वाले पदार्थ २ में वा (वाजेवाजे) युद्ध २ में (तवस्तरम्) जो अच्छे प्रकार वेदों से जाना जाता है उस (इन्द्रम्) सब से विजय देने वाले जगदीश्वर वा दुष्ट शत्रुओं को दूर करने और आत्मा वा शरीर के बल वाले धार्मिक सभाध्यक्ष को (हवामहे) बुलावे अर्थात् बार-बार उसकी विज्ञप्ति करते रहें।।७।।

५५

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽइद्राजा जगतो बभूव।
यऽईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

भावान्तर १

हे ईश्वर ! आप अपने ग्रहण और दान सामर्थ्य से इस जगत् और कारण-रूप प्रकृति तथा हम सब नित्य आत्माओं के राजा हैं। आप ही हम मनुष्य तथा पशु-पक्षी आदि प्राणियों के शरीरों की रचना करते हैं। अतः पूर्ण समर्पित होकर हम आपकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करते हैं। सो अपने आनन्द से आप्लावित करें॥

भावान्तर २

यह जो प्राणी और अप्राणी रूप सम्पूर्ण जगत् है, इसके रचयिता और राजा आप परमात्मा ही हैं। आप इन मनुष्य, पशु-पक्षी आदि विविध प्राणियों की रचना करके इनको अपने अनुशासन में रखते हुए प्रकृति का भोग करा पुनः अपना सुख प्रदान करते हैं॥

पदार्थ

(य:) जो (प्राणत:) प्राणवाले और (निमिषत:) अप्राणिरूप (जगत:) जगत् का (महित्वा) अपने अनन्त महिमा से (एक: इत्) एक ही (राजा) विराजमान राजा (बभूव) है, (य:) जो (अस्य) इस (द्विपद:) मनुष्यादि और (चतुष्पद:) गौ आदि प्राणियों के शरीर की (ईशे) रचना करता है, हम लोग उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) सकलैश्वर्य के देनेहारे परमात्मा के लिये (हविषा) अपनी सकल उत्तम सामग्री से (विधेम) विशेष भक्ति करें। ।४। ।

५६

वायवायाहि दर्शतेमे सोमा अरंकृताः।
तेषां पाहि श्रुधी हवम् ॥ ऋ. १/२/१।

भावान्तर १

हे सर्वज्ञ परमेश्वर ! आप मेरी बुद्धि में अपने स्वरूप को प्रकाशित कीजिए। इसके लिए मैंने आपको जानने के लिए अपने ज्ञान के साधनों आत्मा, शरीर, मन, बुद्धि को अच्छी प्रकार से सुसज्जित कर रखा है। आप इनके सामर्थ्य को जानकर स्वीकार कीजिए तथा कृपया अपना ज्ञान देकर इनको सफल करें॥

भावान्तर २

हे सर्वशक्तिमन् ईश्वर ! आप मेरे हृदय में, ज्ञान में, बुद्धि में, समझ में आइए। यह मेरी आत्मा, मन, समर्पण, जिज्ञासा आदि मेरी ओर से जो आपके देखने योग्य हैं कि ये मुझे आपको दिखा सकते हैं या नहीं। ये सब आपके लिए सुसज्जित समर्पित हैं। आप मुझे अपना स्वरूप दिखाकर इनकी उपयोगिता को सफल कीजिए। प्रभो ! आप मेरी पुकार = प्रार्थना को सुन रहे हैं॥

भावान्तर ३

हे ईश्वर ! अभी मैंने आपको जानने के लिए अपनी आत्मा, शरीर, मन, बुद्धि को अच्छी प्रकार से सुसज्जित कर रखा है। आप कृपया अपना ज्ञान देकर इनके सामर्थ्य तथा मेरे पुरुषार्थ को सफल करें॥

भावान्तर ४

हे सर्वशक्तिमन् परमेश्वर ! आप मेरे ज्ञान में प्रकट होइए। ये शरीर, मन आदि साधन आपकी प्राप्ति के लिए ही उपयोग किए जा रहे हैं। इनके उत्तम गुणों को सार्थक कीजिए !!

पदार्थ

(दर्शत) हे ज्ञान से देखने योग्य (वायो) अनन्त बलयुक्त, सब के प्राणरूप अंतर्यामी परमेश्वर! आप हमारे हृदय में (आयाहि) प्रकाशित हूजिये। कैसे आप हैं कि जिन्होंने (इमे) इन प्रत्यक्ष (सोमा:) संसारी पदार्थों को (अरंकृता:) अलंकृत अर्थात् सुशोभित कर रक्खा है। (तेषाम्) आप ही उन पदार्थों के रक्षक हैं, इससे उनकी (पाहि) रक्षा भी कीजिये, और (हवम्) हमारी स्तुति को (श्रुधि) सुनिये।

५७

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयः सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥यजु.४०/१४।

भावान्तर १

हे ईश्वर ! आपका कथन पूर्ण सत्य है कि जो केवल ज्ञानमात्र की प्राप्ति में लगे रहते हैं, साधनों का उपार्जन नहीं करते, वे घोर अन्धकार को प्राप्त होते हैं। क्योंकि विद्या तथा साधनों के फल स्वतन्त्र-स्वतन्त्र हैं। साधनों से जीवन दुःखरहित निर्बाध व कृतकृत्यता की साधना में समर्थ हो जाता है तथा ज्ञान से साधनज्ञान से कृतकृत्यता की प्राप्ति होती है। अतः साधनों को प्राप्त करने वाले जीवन की बाधाओं को पार कर ज्ञान से तृप्तावस्था को प्राप्त होते हैं॥

भावान्तर २

हे ईश्वर! जो ज्ञान और कर्म या प्रयत्न के स्वरूप को जानता है, वह प्रयत्न से साधनों का निर्माणकर लौकिक दुःखों से बचता हुआ विविध लौकिक सुखों को प्राप्त कर लेता है तथा ज्ञान के स्वरूप को जानकर प्रकृति, अपना और आप का यथार्थ ज्ञान कर लेता है। उससे वह आपके नित्य मोक्ष सुख को प्राप्त हो जाता है॥

पदार्थ

(यः) जो विद्वान् (विद्याम्) पूर्वोक्त विद्या (च) और उसके सम्बन्धी साधन-उपसाधनों (अविद्याम्) पूर्व कही अविद्या (च) और इसके उपयोगी साधनासमूह को और (तत्) उस ध्यानगम्य मर्म (उभयम्) इन दोनों को (सह) साथ ही (वेद) जानता है वह (अविद्या) शरीरादि जड़ पदार्थ समूह से किये पुरुषार्थ से (मृत्युम्) मरणदुःख के भय को (तीर्त्वा) उल्लङ्घ कर (विद्यया) आत्मा और शुद्ध अन्तःकरण के संयोग में जो धर्म उससे उत्पन्न हुए यथार्थ दर्शनरूप विद्या से (अमृतम्) नाशरहित अपने स्वरूप वा परमात्मा को (अश्नुते) प्राप्त होता है ।।१४।।

५८

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे ।
इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ऋ . १/२२/१९ ।

भावान्तर १

हे सर्वव्यापक मित्रवत् सुखप्रदाता प्रभो ! मैं आपके इस विचित्र कर्म को देख रहा हूँ, हमारे शरीर में मन को हमारे साथ कैसे जोड़ दिया । इसके कारण मुझे समस्त ज्ञान-विज्ञान प्राप्त हो रहा है । आप मुझे अपना मित्र स्वीकार कर प्रेम से अपने नित्य आनन्द वाले अनन्त परम धाम में विचरने की छूट दें ॥

भावान्तर २

हे सर्वव्यापक मित्रवत् सुखप्रदाता प्रभो ! मैं जिस शरीर, मन और ज्ञान से अपनी अनुभूति करते हुए सुखपूर्वक आपकी उपासना कर रहा हूँ, सब आपके कर्म हैं । इनका निर्माण कर आपने ही इन्हें मुझसे सम्बद्ध किया है । मैं इनके बिना कुछ भी नहीं कर सकता । सब कुछ इनके माध्यम से ही सम्पादित कर पा रहा हूँ । इसी प्रकार समस्त संसार और प्राणियों की व्यवस्था करने हेतु आप सतत फलस्वरूप देने योग्य सुख-दुःख को ध्यान में रखते हुए सबको सर्वत्र देख रहे हैं । प्रभो ! हमारे ऊपर आपका महान् स्नेह है कि हमको इन साधनों के साथ अपना सान्निध्य भी प्रदान करें और इनसे सुरक्षित बाहर निकाल दें ॥

भावान्तर ३

हे सर्वव्यापक मित्रवत् सुखप्रदाता प्रभो ! मैं जिस शरीर, मन और ज्ञान से अपनी अनुभूति करते हुए सुखपूर्वक आपकी उपासना कर रहा हूँ, तथा यह समस्त संसार आपके कर्म हैं। इनका निर्माण कर आपने ही इन्हें मुझसे सम्बद्ध किया है। मैं इनके बिना कुछ भी नहीं कर सकता। सब कुछ इनके माध्यम से ही सम्पादित कर पा रहा हूँ। प्रभो ! हमारे ऊपर आपका महान् स्नेह है कि हमको इन साधनों के साथ अपना सान्निध्य भी प्रदान करते हैं ॥

भावान्तर ४

हे सर्वव्यापक मित्रवत् सुखप्रदाता प्रभो! बुद्धि से लेकर टिमटिमाते लोक-लोकान्तर पर्यन्त आपके ये विचित्र कर्म हैं। आपने हमको इस शरीर से तथा शरीर में मन को हमारे साथ कैसे जोड़ दिया, जिससे मुझे समस्त ज्ञान-विज्ञान प्राप्त हो रहा है। आप मुझे अपना मित्र मानकर प्रेम से अपना नित्य आनन्द स्वरूप दिखाने की कृपा करें ॥

भावान्तर ५

हे उपासक ! मुझ सर्वव्यापक मित्रवत् सुखप्रदाता के कर्म को देखो, कैसा आनन्द प्रदान करता हूँ। इसके कारण तुम्हारे आगे के स्तर और तत्सम्बन्धित ज्ञान-विज्ञान प्राप्त होंगे। अतः मुझे अपना अत्यन्त विश्वसनीय स्नेहसम्पन्न सहायक मानो और सर्वथा मुझे प्राप्त करो !!

भावान्तर ६

हे सर्वव्यापक ईश्वर ! यह हमारा शरीर आदि समस्त संसार आपके कर्म हैं। इन्हीं से हमारे मोक्ष पर्यन्त सारे अभीष्ट सिद्ध होते हैं। आप हमारे सखा हैं। अतः अपने स्नेह से कृतार्थ करें ॥

भावान्तर ७

हे सर्वव्यापक मित्रवत् सुखप्रदाता प्रभो ! सर्वत्र आप ही आप हैं। आपने इस विश्व की रचना की है और आपके इस विचित्र कर्म को देख रहा हूँ, हमारे शरीर

में मन को हमारे साथ कैसे जोड़ दिया। इसके कारण मुझे समस्त ज्ञान-विज्ञान प्राप्त हो रहा है। आप मुझे अपना मित्र स्वीकार कर प्रेम से अपने नित्य आनन्दस्वरूप वाले अनन्त परम धाम की प्राप्ति कराएँ ॥

भावान्तर ८

हे सर्वव्यापक मित्रवत् सुखप्रदाता प्रभो ! आप इस विशाल ब्रह्माण्ड के निर्माता हैं। आपने हमको इस शरीर में मन के साथ जोड़ दिया, जिससे मुझे समस्त ज्ञान-विज्ञान प्राप्त हो रहा है। आप हमारा सदैव ध्यान रखने वाले परम हितैषी हैं ॥

भावान्तर ९

हे सर्वव्यापक, मित्रवत् सुखप्रदाता प्रभो ! मैं आपके इस विचित्र कर्म को देख रहा हूँ, हमारे शरीर में मन को हमारे साथ जोड़ दिया। इसके कारण मुझे समस्त ज्ञान-विज्ञान प्राप्त हो रहे हैं। आपने मुझे ये अत्युत्तम साधन दिए हैं, इसका अर्थ है आप मेरे परम हितैषी हैं। अतः आप अपने नित्य आनन्द-स्वरूप का बोध भी करा सकेंगे ॥

पदार्थ

हे मनुष्य लोगों! तुम जो (इन्द्रस्य) जीव का (युज्यः) अर्थात् जो अपनी व्याप्ति से पदार्थों में संयोग करने वाले दिशा, काल और आकाश हैं, उनमें व्यापक होके रमने वा (सखा) सर्व सुखों के संपादन करने से मित्र है (यतः) जिससे जीव (व्रतानि) सत्य बोलने और न्याय करने आदि उत्तम कर्मों को (पस्पशे) प्राप्त होता है उस (विष्णो) सर्वत्र व्यापक शुद्ध और स्वभावसिद्ध अनंत सामर्थ्य वाले परमेश्वर के (कर्माणि) जो कि जगत् की रचना पालना न्याय और प्रयत्न करना आदि कर्म हैं, उनको तुम लोग (पश्यत) अच्छे प्रकार विदित करो।।१९।।

५९

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय॥

यजु. ३१/१८।

भावान्तर १

हे ईश्वर ! मैं आप महान् पुरुष, जो अज्ञान से सर्वथा रहित और ज्ञानस्वरूप हैं, को जानना चाहता हूँ। क्योंकि आप को जानकर ही मृत्यु से, दुःख से पार हो सकता हूँ, अन्य कोई मार्ग तो है नहीं॥

भावान्तर २

हे ईश्वर ! आप महान् पुरुष हैं, अज्ञान से सर्वथा रहित और ज्ञानस्वरूप हैं। मैं आपको जानना चाहता हूँ, क्योंकि आप को जानकर ही मृत्यु आदि दुःख से पार हो सकता हूँ, अन्य कोई मार्ग तो है नहीं॥

भावान्तर ३

हे ईश्वर ! आप महान् पुरुष हैं, अज्ञान से सर्वथा रहित और ज्ञानस्वरूप हैं। मैं आपको जैसे शब्दों से जान रहा हूँ, वैसे अर्थतः जानना चाहता हूँ। क्योंकि आप को जानकर ही, आपका सान्निध्य मिल जाने पर संसार से कुछ पाने की आशा नहीं रहती, न सांसारिक कुछ न जानने का शोक रहता है। पुनः मृत्यु से डरने का कोई अवसर नहीं रहता तथा दुःख से बचने का इससे अतिरिक्त कोई मार्ग भी नहीं॥

भावान्तर ४

हे ईश्वर ! मैं आपको जानने हेतु तत्पर हूँ। आप महान् पुरुष, अज्ञान से सर्वथा रहित और ज्ञानस्वरूप हैं। क्योंकि आप को जानकर ही मृत्यु से, दुःख से पार हो सकता हूँ, अन्य कोई मार्ग तो नहीं है॥

भावान्तर ५

हे ईश्वर! आप सबसे महान् हैं। आप अज्ञान से सर्वथा रहित और सर्वज्ञ हैं। मैं आपको ही जानकर इस संसार में सतत प्राप्त दुःख तथा मृत्यु से छूट

सकता हूँ तथा आपके परम सुखदायक सान्निध्य को प्राप्त कर सकता हूँ। इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है। जो आपका महान् चैतन्य स्वरूप है, उसकी मुझे अनुभूति कराकर कृतार्थ करें। एतदर्थ मैं आपकी उपासना कर रहा हूँ॥

पदार्थ

हे जिज्ञासु पुरुष! (अहम्) मैं जिस (एतम्) इस पूर्वोक्त (महान्तम्) बड़े-बड़े गुणों से युक्त (आदित्यवर्णम्) सूर्य के तुल्य प्रकाशस्वरूप (तमसः) अन्धकार वा अज्ञान से (परस्तात्) पृथक् वर्त्तमान (पुरुषम्) स्वस्वरूप से सर्वत्र पूर्ण परमात्मा को (वेद) जानता हूँ (तम्, एव) उसी को (विदित्वा) जान के आप (मृत्युम्) दुःखदायी मरण को (अति, एति) उल्लङ्घन कर जाते हो किन्तु (अन्यः) इससे भिन्न (पन्थाः) मार्ग (अयनाय) अभीष्ट स्थान मोक्ष के लिये (न, विद्यते) नहीं विद्यमान है।।१८।।

६० वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा सद्यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।
तस्मिन्निदꣳ सं च वि चैति
सर्वꣳ सऽओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु॥

भावान्तर १

प्रभो ! आप हैं, क्योंकि उपासक विद्वान् स्वयं में स्थित आप एक तत्त्व को देखते हैं, आप में ही सारा विश्व किसी वृक्ष में घोंसले के समान लटका रहता है। आप में ही यह सम्पूर्ण संसार निर्मित होकर प्रसार को प्राप्त होता है और मिटकर संचित भी हो जाता है। हे प्रभो! आप ही मुझमें व्यापक हैं। अतः मैं आपकी उपासना कर रहा हूँ और आप अपना स्वरूप हमें ज्ञात कराएँ॥

भावान्तर २

प्रभो ! उपासक विद्वान् स्वयं में स्थित आप एक तत्त्व को देखते हैं, आपमें ही सारा विश्व किसी वृक्ष में घोंसले के समान लटका रहता है। आप में ही यह सम्पूर्ण संसार निर्मित होकर प्रसार को प्राप्त होता है और मिटकर संचित भी हो

जाता है। हे प्रभो ! आप ही मुझमें भी व्यापक हैं। अतः मैं आपकी उपासना कर रहा हूँ और इसी प्रकार आप अपना आनन्दस्वरूप हमें अनुभव कराते रहें ॥

भावान्तर ३

मैं उपासक स्वयं में स्थित उस तत्त्व को देखना चाह रहा हूँ, जिसमें सम्पूर्ण विश्व किसी वृक्ष में पक्षियों के घोंसले के समान लटका रहता है। जिस सर्वव्यापक ईश्वर में यह सम्पूर्ण संसार निर्मित होकर विस्तार को प्राप्त होता है और उसी में प्रलय के रूप में मिटकर संचित भी हो जाता है। हे सच्चिदानन्द प्रभो ! वह आप ही हैं और मुझमें व्यापक हैं तथा मैं आपकी ही उपासना कर रहा हूँ। कृपाकर आप हमें अपना स्वरूप ज्ञात कराएँ ॥

भावान्तर ४

हे ईश्वर ! मैं स्वयं में विद्यमान आप अनन्त सर्वव्यापक को देखना चाह रहा हूँ। जिस आपके एक भाग में यह सम्पूर्ण विस्तृत जगत् एक विशाल वृक्ष में तुच्छ घोंसले के समान लटका हुआ है। उसी आप में यह जगत् उत्पन्न होता है और प्रलय को प्राप्त होकर लीन हो जाता है। आप सर्वव्यापक होकर इस जगत् के कण-कण में तथा हम सभी आत्माओं में ओत-प्रोत हैं ॥

भावान्तर ५

हे ईश्वर ! उपासक विद्वान् अपनी आत्मा में सदा विद्यमान आप अनन्त सर्वव्यापक को देखते रहते हैं। जिस आपके एक भाग में यह सम्पूर्ण विस्तृत जगत् एक विशाल वृक्ष में तुच्छ घोंसले के समान लटका हुआ है। उसी आप में यह जगत् उत्पन्न होता है और प्रलय को प्राप्त होकर लीन हो जाता है। अतः जैसे आप सर्वव्यापक होकर इस जगत् के कण-कण में व्यापक हैं, वैसे ही हमारी आत्मा में व्यापक होने से हमारे रक्षक हैं ॥

भावान्तर ६

हे ईश्वर ! जैसे उपासक विद्वान् अपनी आत्मा में विद्यमान आप अनन्त सर्वव्यापक को प्रत्यक्ष जानते रहते हैं, वैसे मैं भी आपको जानना चाह रहा हूँ।

जिस आपके एक भाग में यह सम्पूर्ण विस्तृत जगत् एक विशाल वृक्ष में तुच्छ घोंसले के समान लटका हुआ है। आप में यह मेरा शरीर छिन्न-भिन्न होकर लीन हो जाता है तथा आप पुनः हमें दूसरा शरीर प्राप्त करा देते हैं। इसी प्रकार आप में ही सकल जगत् उत्पन्न होता है और प्रलय को प्राप्त होकर लीन हो जाता है। आप सर्वव्यापक होकर इस जगत् के कण-कण में तथा हम सभी आत्माओं में सदैव ओत-प्रोत हैं॥

भावान्तर ७

हे ईश्वर! जिस आपके एक भाग में यह सम्पूर्ण विस्तृत जगत् एक विशाल वृक्ष में तुच्छ घोंसले के समान लटका हुआ है। उसी आप में यह मेरे शरीर सहित संसार छिन्न-भिन्न होकर लीन हो जाता है तथा सकल जगत् उत्पन्न होता है और प्रलय को प्राप्त होकर लीन हो जाता है। अतः जैसे उसी आप अनन्त सर्वव्यापक को योगी विद्वान् अपनी आत्मा में विद्यमान प्रत्यक्ष जानते रहते हैं, वैसे मैं जानना चाह रहा हूँ। हे सच्चिदानन्द प्रभो! वही आप मुझमें व्यापक हैं तथा मैं आपकी ही उपासना कर रहा हूँ। कृपाकर आप हमें अपना स्वरूप ज्ञात कराएँ॥

भावान्तर ८

हे ईश्वर! आप अनन्त सर्वव्यापक मुझमें विद्यमान हैं और मैं आपको देखना चाह रहा हूँ। जिस आपके एक भाग में यह सम्पूर्ण विस्तृत जगत् एक विशाल वृक्ष में तुच्छ घोंसले के समान लटका हुआ है। उसी आप में यह जगत् उत्पन्न होता है और प्रलय को प्राप्त होकर लीन हो जाता है। आप सर्वव्यापक होकर इस जगत् के कण-कण में तथा हम सभी आत्माओं में ओत-प्रोत हैं। अतः प्रभो! इस संसार से हटने तथा अपने सान्निध्य में स्थित होने की सामर्थ्य प्रदान करें॥

भावान्तर ९

हे ईश्वर! उपासक विद्वान् अपनी आत्मा में सदा विद्यमान आप अनन्त सर्वव्यापक को देखते रहते हैं। जिस आपके एक भाग में यह सम्पूर्ण विस्तृत जगत् एक विशाल वृक्ष में तुच्छ घोंसले के समान लटका हुआ है। उसी आप में यह जगत् उत्पन्न होता है और प्रलय को प्राप्त होकर लीन हो जाता है। अतः जैसे आप

सर्वव्यापक होकर इस जगत् के कण-कण में व्यापक हैं, वैसे ही हमारी आत्मा में व्यापक होकर हमारे रक्षक भी हैं। अतः कृपया अपनी चैतन्यस्वरूप की अनुभूति कराकर कृतार्थ करें॥

भावान्तर १०

हे ईश्वर ! जैसे उपासक विद्वान् अपनी आत्मा में विद्यमान आप अनन्त सर्वव्यापक को प्रत्यक्ष जानते रहते हैं, वैसे मैं भी आपको जानना चाह रहा हूँ। जिस आपके एक भाग में यह सम्पूर्ण विस्तृत जगत् एक विशाल वृक्ष में तुच्छ घोंसले के समान लटका हुआ है। आप में संसार सहित यह मेरा शरीर छिन्न-भिन्न होकर लीन हो जाता है तथा जगत् उत्पन्न होता है और प्रलय को प्राप्त होकर लीन हो जाता है। आप सर्वव्यापक होकर इस जगत् के कण-कण में तथा हम सभी आत्माओं में सदैव ओत-प्रोत हैं। कृपया अपना स्वरूप दिखाएँ॥

भावान्तर ११

हे ईश्वर ! जैसे योगी विद्वान् आपको अपनी आत्मा में सदा अनुभव करते रहते हैं, वैसे ही मैं भी स्वयं में विद्यमान आप अनन्त सर्वव्यापक को अनुभव करना चाह रहा हूँ। जिस आपके एक भाग में यह सम्पूर्ण विस्तृत जगत् एक विशाल वृक्ष में तुच्छ घोंसले के समान लटका हुआ है। उसी आप में यह जगत् उत्पन्न होता है और प्रलय को प्राप्त होकर लीन हो जाता है। आप सर्वव्यापक होकर इस जगत् के कण-कण में तथा हम सभी आत्माओं में ओत-प्रोत हैं। प्रभो ! आप कृपया अपना सान्निध्य प्रदान करें !!

भावान्तर १२

हे ईश्वर ! जैसे योगी विद्वान् आपको अपनी आत्मा में सदा अनुभव करते रहते हैं, वैसे ही मैं भी स्वयं में विद्यमान आप अनन्त सर्वव्यापक को अनुभव करना चाह रहा हूँ। जिस आपके एक भाग में यह सम्पूर्ण विस्तृत जगत् एक विशाल वृक्ष में तुच्छ घोंसले के समान लटका हुआ है। उसी आप में यह जगत् उत्पन्न होता है और प्रलय को प्राप्त होकर लीन हो जाता है। आप सर्वव्यापक होकर इस जगत् के कण-कण में तथा हम सभी आत्माओं में ओत-प्रोत हैं। प्रभो ! आपके समान

हमारा कोई दूसरा हितैषी नहीं है, पुनरपि कष्टों से बचने के लिए आपका आश्रय न लेकर संसार की ओर भाग जाता हूँ। कृपया अपनी उपस्थिति से आश्वस्त करें॥

भावान्तर १३

हे ईश्वर ! जैसे योगी विद्वान् आपको अपनी आत्मा में सदा अनुभव करते रहते हैं, वैसे ही मैं भी स्वयं में विद्यमान आप अनन्त सर्वव्यापक को अनुभव करना चाह रहा हूँ। जिस आपके एक भाग में यह सम्पूर्ण विस्तृत जगत् एक विशाल वृक्ष में तुच्छ घोंसले के समान लटका हुआ है। उसी आप में यह जगत् उत्पन्न होता है और प्रलय को प्राप्त होकर लीन हो जाता है। आप सर्वव्यापक होकर इस जगत् के कण-कण में तथा हम सभी आत्माओं में ओत-प्रोत हैं॥

भावान्तर १४

हे ईश्वर ! जिस आपके एक भाग में यह सम्पूर्ण विस्तृत जगत् एक विशाल वृक्ष में तुच्छ घोंसले के समान लटका हुआ है। जिस आप में यह सम्पूर्ण संसार के साथ छिन्न-भिन्न होकर लीन हो जाता है, उत्पन्न होता है और पुनः प्रलय को प्राप्त होकर लीन हो जाता है। वही आप सर्वव्यापक होकर इस जगत् के कण-कण में तथा हम सभी आत्माओं में सदैव ओत-प्रोत हैं। सो उसी आप अनन्त सर्वव्यापक को उपासक विद्वान् जैसे इस रूप में अपनी आत्मा में देखते रहते हैं। मैं भी स्वयं में विद्यमान उसी प्रकार आपको देखना चाह रहा हूँ॥

पदार्थ

(यत्र) (अ.प.) जिस में (विस्वम्) (१/१) सब जगत् (एकनीड़म्) (१/१) एक घोंसले के समान (भवति) (लट् प्र पु/१) है (तत्) (२/१) उस (गुहानिहितम्) (२/१) नित्य चेतन ब्रह्म को (वेनः) (१/१) विद्वान् जन (पश्यत्) (लट् प्र पु/१) ज्ञान दृष्टि से देखता है। (तस्मिन्) (६/१) उसमें (इदम्) (१/१) यह (सर्वम्) (१/१) सब जगत् (सम्, एति) (लट् प्र पु/१) प्रलय में सङ्गत होता है (च) (अ.प.) और (वि) (अ.प.) सृष्टिरूप में पृथक् स्थूलरूप (च) (अ.प.) भी होता है। (सः) (१/१) वह (प्रजासु) (६/३) प्रजाओं में (ओतः प्रोतः) (१/१) कण कण में (विभुः) (१/१) व्याप्त है।

६१

शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा ।
शन्नऽइन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरु रु क्रमः ॥
यजु. ३६/९, ऋ .१/९०/९।

भावान्तर १

हे ईश्वर ! आप हमारे मित्र हैं, सो परम स्नेह से हमें अपनी निकटता प्रदान करें। आप ही हमारे आदर्श हैं, सो मुझे मर्यादा पालन में समर्थ कीजिए। आप न्यायपूर्वक हमारे ऊपर अनुग्रह करें। आप पूर्ण ऐश्वर्यशाली और सूर्य आदि लोकों के स्वामी तथा महान् हैं। हे सर्वव्यापक महापराक्रमिन् प्रभो ! हमें अनन्त सुख प्रदान करें ॥

भावान्तर २

हे ईश्वर ! आप हमारे मित्र हैं, सो परम स्नेह से हमें प्रसन्न कीजिए। आप ही हमारे आदर्श हैं, सो मुझे मर्यादा पालन में समर्थ कीजिए। आप न्यायपूर्वक हमारे ऊपर अनुग्रह करें। आप पूर्ण ऐश्वर्यशाली और बड़े-बड़े सूर्य आदि लोकों तथा महान् मोक्ष-सुख के स्वामी महान् हैं, सो हमें अपना सान्निध्य प्रदान कर कृतार्थ करें ॥

भावान्तर ३

हे ईश्वर ! आप परम स्नेहसागर हैं, कृपाकर हमें अपने स्नेह से परितृप्त कीजिए। आप ही हमारे आदर्श हैं, सो मुझे मर्यादा पालन में समर्थ कीजिए। आप न्यायपूर्वक हमारे ऊपर अनुग्रह करें। आप पूर्ण ऐश्वर्यशाली और महान् ज्ञानों एवं लोकों के स्वामी हैं। हे सर्वव्यापक, महापराक्रमिन् प्रभो ! आपको मैं इसी रूप में जान जाऊँ, ऐसी कृपा कीजिए ॥

भावान्तर ४

हे ईश्वर ! आप स्नेह से परिपूर्ण हैं। सबसे उत्तम होने से आप ही स्वीकार करने योग्य हैं। आप न्यायकारी हैं। आप अत्यन्त ऐश्वर्य सम्पन्न तथा महान् ज्ञानों एवं लोकों के स्वामी हैं। आप अतिपराक्रम के साथ सर्वत्र व्यापक हैं। आपको मैं इसी रूप में जान जाऊँ, ऐसी कृपा कीजिए ॥

भावान्तर ५

हे ईश्वर ! परम स्नेह के भण्डार हैं। कृपया मुझे अपने स्नेह से पूर्ण करें। आप ही हमारे आदर्श हैं, सो मुझे मर्यादा पालन में समर्थ कीजिए। आप न्यायपूर्वक हमारे ऊपर अनुग्रह करें। आप पूर्ण ऐश्वर्यशाली और महान् हैं, सो हमें भी महान् सुख से युक्त करें। हे सर्वव्यापक महापराक्रमिन् प्रभो ! हमें अनन्त सुख प्रदान करें॥

पदार्थ

(नः) (६/३) हमारे लिए (उरुक्रमः) (१/१) बहुत पराक्रम वाला (मित्रः) (१/१) सबके निश्चित मित्र (शम्) (१/१) सुखकारी (हो) (वरुणः) (१/१) सर्वोत्कृष्ट ईश्वर (नः) (६/३) हम लोगों के लिए (शम्) (१/१) शान्ति देने वाला (हो) (अर्यमा) (१/१) पक्षपात रहित धर्म न्यायकारी ईश्वर (नः) (६/३) हमारे लिए (शम्) (१/१) आरोग्य सुख देने वाला (हो) (बृहस्पति) (१/१) वेदविद्या का पालन करने वाले (इन्द्रः) (१/१) परमैश्वर्य देने वाला ईश्वर (नः) (६/३) हमारे लिए (शम्) (१/१) ऐश्वर्य को देने वाला हो। (विष्णुः) (१/१) सर्वव्यापक ईश्वर (नः) (६/३) हमारे लिए (शम्) (१/१) अनन्त सुख देने वाला हो।

६२ **स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवाऽअमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त॥ यजु. ३२/१०।**

भावान्तर १

हे ईश्वर ! आप साथ-साथ रहने बन्धु के समान सदा मुझे सुख देने वाले हैं, आप ही जन्म देने वाले हैं और आप ही यथायोग्य अवस्थाओं में पहुँचने वाले हैं। सारे पदार्थों और नामों को आप जानते हैं। सो प्रभो ! मैं आपकी उस अवस्था को प्राप्त करना चहता हूँ, जिसमें जीवन्मुक्त विद्वान् सब ओर आनन्दपूर्वक विचरते हैं॥

भावान्तर २

हे ईश्वर ! आप ही मुझे सुख देने वाले हैं, आप ही जन्म देने वाले है और आप ही यथायोग्य अवस्थाओं में पहुँचने वाले हैं । सारे पदार्थों और नामों को आप जानते हैं । सो प्रभो ! आप मुझे अपने सान्निध्य में सदा वर्त्तमान रखें ॥

भावान्तर ३

हे ईश्वर ! जो सुख, सुरक्षा आदि हमको अपेक्षित है, वह सब आप से मुझे प्राप्त है । अतः आप मुझे सुख से जोड़ने वाले हैं, आप ही शरीर से जोड़ने वाले हैं और आप ही यथायोग्य अन्यान्य अवस्थाओं में पहुँचाने वाले हैं। क्योंकि सारे पदार्थों और नामों को आप जानते हैं । सो प्रभो ! आप मुझे अपने सान्निध्य में सदा वर्त्तमान रखें ॥

भावान्तर ४

हे ईश्वर ! मुझे सुख और आपके सतत सान्निध्य की अपेक्षा है तथा आप हमारे लिए भाई के समान सुख देने वाले, सर्वत्र रक्षा करने वाले पिता और मार्गदर्शक हैं । आप सारे नाम, स्थान, जन्म और जहाँ मुक्ति में विद्वान् लोग रहते हैं उनको जानते हैं । अतः हमें मुक्ति का स्वरूप और वहाँ पहुंचने का साधन बताएँ ॥

भावान्तर ५

हे ईश्वर ! आप हमारे लिए भाई के समान सुख देने वाले हैं, सर्वरक्षक पिता हैं और आप ही हमारे मार्गदर्शक हैं । आप सारे नाम, स्थान, जन्म और जहाँ मुक्ति में विद्वान् लोग रहते हैं, उनको भी जानते हैं । अतः हमें मुक्ति की प्राप्ति का परिज्ञान कराएँ ॥

भावान्तर ६

हे ईश्वर ! आप हमारे लिए भाई के समान सुख देने वाले हैं, सर्वरक्षक पिता हैं और आप ही हमारे मार्गदर्शक हैं । आप सारे नाम, स्थान, जन्म और जहाँ मुक्ति में विद्वान् लोग रहते हैं, उनको भी जानते हैं । अतः हमें मुक्ति का पता और वहाँ पहुँचे का साधन स्वरूप व उपाय बताएँ ॥

भावान्तर ७

हे ईश्वर ! आप हमको भाई के समान सुख देने वाले हैं, सर्वरक्षक पिता हैं और आप ही हमारे मार्गदर्शक हैं। आप सारे नाम, स्थान, जन्म और जहाँ मुक्ति में विद्वान् लोग रहते हैं उनको भी जानते हैं। अतः आप चेतन स्वरूप हैं। कृपया अपना यह स्वरूप दिखाने की कृपा करें ॥

भावान्तर ८

हे ईश्वर ! आप ही हमारे भाई हैं, आपने ही हमको इस शरीर से जोड़कर रख रखा है। आप सारे नाम, स्थान, जन्म और योगी विद्वान् आत्माओं को जहाँ आपके सान्निध्य में मुक्ति सुख की अनुभूति होती है, उस अवस्था को भी जानते हैं। अतः हमें उस में पहुँचाने की कृपा करें ॥

भावान्तर ९

हे ईश्वर ! आप ही हमारे भाई के समान सुख से सम्बद्ध करने वाले हैं। आपने ही हमको इस शरीर से जोड़कर रख रखा है। आप सारे नाम, स्थान, जन्म और योगी विद्वान् आत्माओं को जहाँ आपके सान्निध्य में मुक्ति सुख की अनुभूति होती है, उस अवस्था को भी जानते हैं। अतः हमें वहाँ तक पहुँचने योग्य करें ॥

पदार्थ

हे मनुष्यो! (यः) जो (नः) हमारा (पिता) पालन और (जनिता) सब पदार्थों का उत्पादन करने हारा तथा (यः) जो (विधाता) कर्मों के अनुसार फल देने तथा जगत् का निर्माण करने वाला (विश्वा) समस्त (भुवनानि) लोकों और (धामानि) जन्म, स्थान वा नाम को (वेद) जानता (यः) जो (देवानाम्) विद्वानों वा पृथिवी आदि पदार्थों का (नामधाः) अपनी विद्या से नाम धरने वाला (एकः) एक अर्थात् असहाय (एव) ही है जिसको (अन्या) और (भुवना) लोकस्थ पदार्थ (यन्ति) प्राप्त होते जाते हैं (संप्रश्नम्) जिसके निमित्त अच्छे पूछना हो (तम्) उस को तुम लोग जानो।।२७।।

६३

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये ॥ ऋ. १/१/९।

भावान्तर १

हे ईश्वर ! आप हमारे लौकिक पिता के समान हमारे पालक, रक्षक हैं। अतः हमारी उन्नति के लिए हमें समर्थ और अपने ज्ञानों से हमें प्रेरित करें ॥

भावान्तर २

हे सर्वरक्षक परमेश्वर ! जैसे कोई पिता अपने पुत्र का सदा हितैषी होता है, वैसे ही आप मेरे हितैषी हैं। आप हमारे कल्याण के लिए सरलता से उपयोग करने योग्य उपायों व ज्ञानों को प्रदान कीजिए तथा मेरे सब दोषों, न्यूनताओं को दूर कर दीजिए, जिससे मैं कोई ऐसा अकृत न करूँ, जिससे आपकी निन्दा हो। एतदर्थ मैं आपकी भूरिशः स्तुति-प्रार्थना-उपासना करता रहूँ ॥

पदार्थ

हे (सः) उक्त गुणयुक्त (अग्ने) ज्ञानस्वरुप परमेश्वर! (पितेव) जैसे पिता (सूनवे) अपने पुत्र के लिये उत्तम ज्ञान का देनेवाला होता है, वैसे ही आप (नः) हम लोगों के लिये (सूपायनः) शोभन ज्ञान, जो कि सब सुखों का साधक और उत्तम उत्तम पदार्थों का प्राप्त करनेवाला है, उसके देनेवाले होकर (नः) हम लोगों को (स्वस्तये) सब सुख के लिये (सचस्व) संयुक्त कीजिये।।९।।

६४

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ
शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः
स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥

भावान्तर १

हे अनन्त परमेश्वर ! आप सर्वत्र विद्यमान एक सत्तात्मक पदार्थ हैं। आप अत्यन्त शीघ्रकारी, तीनों शरीरों, शरीरगत व्रणादि न्यूनताओं, नाड़ी आदि बन्धनों से

रहित हैं। विशुद्ध तत्त्व हैं, निष्पाप हैं, विद्वान् हैं, सबके मन को जानने वाले तथा सबके ऊपर अधिष्ठित, स्वयं प्रसिद्ध और पदार्थों को यथार्थ रूप में अपनी नित्य प्रजाओं को बताने के लिए वेद-ज्ञान को देने वाले हैं ॥

भावान्तर २

प्रभो ! आप चेतन होने से हमारी तरह ज्ञानवान् हैं तथा हम सबको जान रहे हैं, ऐसा मानकर मैं आपकी उपासना कर रहा हूँ। सर्वत्र विद्यमान होने से मुझमें भी विद्यमान हैं। आप शरीर आदि रहित, सभी के अन्तर्भावों को जानने वाले, बुद्धिपूर्वक सब कार्यों को करने वाले, सर्वसमर्थ, स्वाधीन और हम सब जीवों को वेदों का ज्ञान देने वाले हैं। सो कृपया मुझे मेरे व अपने स्वरूप की अनुभूति कराएँ। स्वरूप में स्थित करें ॥

भावान्तर ३

आप आकाश के समान सर्वत्र विद्यमान निष्क्रिय नहीं है, किन्तु चैतन्य आदि सर्वगुणसम्पन्न सक्रिय हैं। आप शरीर आदि रहित, सभी के अन्तर्भावों को जानने वाले, बुद्धिपूर्वक सब कार्यों को करने वाले, सर्वथा समर्थ, स्वाधीन और हम सब जीवों को वेदों का ज्ञान देने वाले हैं। सो कृपया मुझे मेरे व अपने स्वरूप की अनुभूति कराएँ ॥

भावान्तर ४

आप एक तत्त्व हैं और सर्वत्र विद्यमान हैं। आप शरीर आदि रहित, सभी के अन्तर्भावों को जानने वाले, बुद्धिपूर्वक सब कार्यों को करने वाले, सर्वसमर्थ, स्वाधीन और हम सब जीवों को वेदों का ज्ञान देने वाले हैं। सो कृपया मुझे मेरे व अपने स्वरूप की अनुभूति कराएँ। स्वयं से सम्बद्ध करें ॥

भावान्तर ५

आप हैं और सर्वत्र विद्यमान होने से मुझमें भी विद्यमान हैं। आप शरीर आदि रहित, सभी के अन्तर्भावों को जानने वाले, बुद्धिपूर्वक सब कार्यों को करने वाले, सर्व-समर्थ, स्वाधीन और हम सब जीवों को वेदों का ज्ञान देने वाले हैं। सो कृपया मुझे मेरे व अपने स्वरूप की अनुभूति कराएँ ॥

भावान्तर ६

हे प्रभो ! आप हैं और सर्वत्र विद्यमान हैं तथा सर्वत्र विद्यमान होने से मुझमें भी विद्यमान हैं। आप शरीर आदि रहित, सभी के अन्तर्भावों को जानने वाले, बुद्धिपूर्वक सब कार्यों को करने वाले, सर्वसमर्थ, स्वाधीन और हम सब जीवों को वेदों का ज्ञान देने वाले हैं। सो कृपया मुझे अपने स्वरूप की अनुभूति कराएँ॥

भावान्तर ७

आप सर्वत्र विद्यमान होने से मुझमें भी विद्यमान हैं। आप शरीर आदि रहित, सभी के अन्तर्भावों को जानने वाले, बुद्धिपूर्वक सब कार्यों को करने वाले, सर्वसमर्थ, स्वाधीन और हम सब जीवों को वेदों का ज्ञान देने वाले हैं। सो कृपया मुझे मेरे व अपने स्वरूप की अनुभूति कराएँ। अपने में ज्ञान रूप में भी स्थित करें॥

भावान्तर ८

आप आकाश के समान सर्वत्र विद्यमान हैं, किन्तु निष्क्रिय नहीं है अपितु सक्रिय चैतन्य आदि स्वरूप में। आप शरीर आदि रहित, सभी के अन्तर्भावों को जानने वाले, बुद्धिपूर्वक सब कार्यों को करने वाले, सर्वथा समर्थ, स्वाधीन और हम सब जीवों को वेदों का ज्ञान देने वाले हैं। सो कृपया मुझे मेरे व अपने स्वरूप की अनुभूति कराएँ॥

भावान्तर ९

हे प्रभो ! आप सर्वत्र विद्यमान होने से मुझमें भी विद्यमान हैं। आप शरीर आदि रहित, सभी के अन्तर्भावों को जानने वाले, बुद्धिपूर्वक सब कार्यों को करने वाले, सर्वसमर्थ, स्वाधीन और हम सब जीवों को वेदों का ज्ञान देने वाले हैं। सो कृपया मुझे मेरे व अपने स्वरूप की अनुभूति कराएँ॥

पदार्थ

(सः) (१/१) वह परमात्मा (पर्यगात्) (१/१) सर्वत्र परिपूर्ण (शुक्रम्) (१/१) शीघ्रकारी (अकायम्) (१/१) तीनों शरीर से रहित (अव्रणम्) (१/१) छिद्र रहित नहीं छेद करने योग्य, व्रणादि न्यूनताओं से रहित (अस्नाविरम्) (१/१) नाड़ी आदि बन्धनों

से रहित (शुद्धम्) (१/१) अविद्यादि दोषों से रहित सदा पवित्र (अपापविद्धम्) (१/१) निष्पाप (कविः) (१/१) सर्वज्ञ (मनीषी) (१/१) सबके मन को जानने वाला (परिभूः) (१/१) दुष्टों का तिरस्कार कर सबके ऊपर अधिष्ठित (स्वयम्भूः) (१/१) स्वयं प्रसिद्ध (शाश्वतीभ्यः) (१/१) सनातन अनादि स्वरूप (समाभ्यः) (४/३) प्रजाओं के लिए (यथातथ्यतः) (अ.प.) यथार्थ भाव से (अर्थान्) (२/३) सब पदार्थों को वेद द्वारा (व्यदधात्) (१/१) विशेष रूप से बताने वाला है।

६५

सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते।
त्वामभि प्र णोनुमो जेतारमपराजितम्॥ ऋक्. १/११/२।

भावान्तर १

हे परमैश्वर्यवान् प्रभो ! आप में मिल जाने में अब भय की कोई बात नहीं है क्योंकि संसार के कण-कण से जुड़े रहना सम्भव नहीं। आप सर्वत्र विजयी का मन से निरन्तर ध्यान कर रहा हूँ कि हमें भी विजय प्रदान कराएँ॥

भावान्तर २

हे सर्वैश्वर्यवान् परमेश्वर ! मैं आपके सान्निध्य को प्राप्त करना चाहता हूँ। आप किसी से पराजित नहीं होते, मैं भी अपने दोषों से पराजित न होऊँ, ऐसा समर्थ मुझे करें ! एतदर्थ आपकी उपासना कर रहा हूँ॥

भावान्तर ३

हे परमेश्वर ! आप सर्वत्र विजेता हैं और मुझसे स्नेह रखते हैं, परन्तु मेरे पास आप से मैत्री रखने योग्य न बल है, न सूक्ष्म बुद्धि। अतः आप कृपाकर मुझे योग्य बनाकर आपकी मित्रता प्राप्त कराएँ। इससे आगे मुझे कोई भय नहीं लगेगा तथा एतदर्थ आपकी उपासना कर रहा हूँ॥

भावान्तर ४

हे परमेश्वर ! आप सर्वत्र विजेता हैं और मुझसे स्नेह रखते हैं। अतः संसार से पृथक् होकर मुझे आप अपने साथ रहने योग्य बनाएँ ! इससे आगे मुझे कोई भय नहीं लगेगा तथा एतदर्थ आपकी उपासना कर रहा हूँ॥

भावान्तर ५

हे परमेश्वर ! आप सर्वत्र विजेता हैं। मैं आपसे मैत्री चाहता हूँ, किन्तु इसके योग्य मेरे पास न बल है, न सूक्ष्म बुद्धि। अतः आप स्वयं इतनी कृपा अवश्य कर दीजिए कि सब कुछ का परित्याग करके भी आपकी मित्रता को प्राप्त करने में मुझे कोई भय नहीं लगे। एतदर्थ आपकी उपासना कर रहा हूँ॥

भावान्तर ६

हे परमेश्वर ! आप सर्वत्र विजेता हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे परम वीर ! मैं आपके सान्निध्य रूप मित्रता को चाहता हूँ। एतदर्थ आप मुझे सूक्ष्म बुद्धि, बल, उत्साह देने की कृपा करें, जिससे सब कुछ का परित्याग करके भी आपका सान्निध्य पाने में मैं भयभीत नहीं होऊँ॥

भावान्तर ७

हे परमेश्वर ! आप सर्वत्र विजेता हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे परम वीर ! मैं आपके साथ सम्मिलित होने रूप मित्रता को चाहता हूँ। क्योंकि आपके स्नेहपूर्ण सान्निध्य में ही हम सर्वथा निर्भय, निर्द्वन्द्व हो सकते हैं, एतदर्थ आप मुझे सूक्ष्म बुद्धि, बल, उत्साह देने की कृपा करें॥

भावान्तर ८

हे परमेश्वर ! आप सर्वत्र विजेता हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे परम वीर ! मैं आपका सान्निध्य चाह रहा हूँ। अब मुझे कोई भय नहीं है। एतदर्थ आप मुझे सूक्ष्म बुद्धि, बल, उत्साह देने की कृपा करें, जिससे शीघ्र सफलता प्राप्त हो॥

भावान्तर ९

हे परमेश्वर ! आप सर्वत्र विजेता हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे परम वीर महाबलिन् ! सम्पूर्ण संसार तथा शरीर का त्याग कर अपने नित्य स्वरूप में जाने हेतु आपकी शरण रूप मित्रता चाहता हूँ। किन्तु भय लगता है। अतः आप स्वयं मुझे सूक्ष्म बुद्धि, बल, उत्साह देने की कृपा कर सफल करें॥

भावान्तर १०

हे परमेश्वर! आप सर्वत्र विजेता हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे परम वीर महाबली ! मैं आपसे मित्रता करने में भयभीत न होऊँ। अतः आप स्वयं मुझे सूक्ष्म बुद्धि, बल, उत्साह देने की कृपा करें, जिससे मैं समर्थ हो सकूँ ॥

भावान्तर ११

हे परमेश्वर ! आप सर्वत्र विजेता हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे परम वीर महाबली! आप सम्पूर्ण संसार के रचयिता और विनाशक हैं। अतः आप ही हमारी शरण हैं। आप अपने स्नेह से कृतार्थ करें ॥

भावान्तर १२

हे परमेश्वर ! आप सर्वत्र विजेता हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे परम वीर महाबली ! आप सम्पूर्ण संसार के रचयता और विनाशक हैं। अतः आपका स्नेहसान्निध्य पाने हेतु त्याग-तपस्या से हमको भय नहीं हो ॥

भावान्तर १३

हे परमेश्वर ! आप सर्वत्र विजेता हैं। क्योंकि लोकस्थ बलवान् से बलवान्, प्रभावकारी समर्थ को आपने ही शरीर आदि साधन दिया है तथा सबका अन्तिम न्याय करते हैं। अतः कोई भी आपकी उपेक्षा करके सेवन योग्य नहीं हो सकता। आप अत्यन्त ऐश्वर्यसम्पन्न हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे परम वीर ! मैं आपकी मित्रता को समर्थ होऊँ, एतदर्थ आप मुझे सूक्ष्म बुद्धि, बल, उत्साह देकर व्यवहार में सफल करें ॥

भावान्तर १४

हे परमेश्वर ! आप सर्वत्र विजेता हैं, मैं आपको नमस्कार करता हूँ और मैं आपका सान्निध्य चाहता हूँ, तदर्थ आपका स्नेह चाहता हूँ। अब इसमें मुझे कोई भय नहीं लग रहा है। एतदर्थ आपकी उपासना कर रहा हूँ, कृतार्थ करें ॥

भावान्तर १५

हे परमेश्वर ! आप परम वीर महाबली सर्वत्र विजेता हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आप ब्रह्माण्ड के रचयिता व विनाशक हैं। अब आपका स्नेहसान्निध्य पाने हेतु त्याग-तपस्या और लौकिक बाधाओं से भयभीत नहीं होऊँगा ॥

भावान्तर १६

हे परमेश्वर ! आपके स्नेहपूर्ण सान्निध्य में ही हम सर्वथा निर्भय, निर्द्वन्द्व हो सकते हैं, क्योंकि आप सर्वत्र विजेता हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे परम वीर ! मैं आपके साथ सम्मिलित होने रूप मित्रता को चाहता हूँ। एतदर्थ आप मुझे सूक्ष्म बुद्धि, बल, उत्साह देने की कृपा करें ॥

भावान्तर १७

हे परमेश्वर ! आपके स्नेहपूर्ण सान्निध्य को चाहता हूँ जिसमें हम सर्वथा निर्भय, निर्द्वन्द्व हो सकते हैं, क्योंकि आप सर्वत्र विजेता हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे परम वीर ! मैं आपके साथ सम्मिलित होने रूप मित्रता को चाहता हूँ। एतदर्थ आप मुझे सूक्ष्म बुद्धि, बल, उत्साह देने की कृपा करें ॥

भावान्तर १८

हे परमेश्वर ! यद्यपि आपके सान्निध्य को प्राप्त करना हमारे लिए बहुत कठिन हो रहा है, पुनरपि अनिवार्य रूप से उसे प्राप्त करने का प्रयास कर रहा हूँ। अतः आप इसमें जो भय लगता है उसे दूर कर मेरी रक्षा करें। आप सबसे बलवान् तथा सर्वत्र विजेता हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ ॥

भावान्तर १९

हे सर्वैश्वर्यवान् परमेश्वर ! हम आपके सान्निध्य को पाकर अभय हो जाएँ। आप किसी से पराजित नहीं होते, मैं भी अपने दोषों से पराजित न होऊँ, एतदर्थ आपकी उपासना कर रहा हूँ ॥

भावान्तर २०

हे परमेश्वर ! आप सर्वत्र विजेता हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे परम वीर ! मैं आपके साथ सम्मिलित होने रूप मित्रता को चाहता हूँ। एतदर्थ आप मुझे सूक्ष्म बुद्धि, बल, उत्साह देने की कृपा करें, जिससे सब कुछ का परित्याग करके भी आपका सान्निध्य पाने में मैं भयभीत नहीं होऊँ ॥

भावान्तर २१

हे परमेश्वर ! आप सर्वत्र विजेता हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे परम वीर महाबलिन् ! मैं आपसे मित्रता करना चाहता हूँ किन्तु भय लगता है। अतः आप स्वयं मुझे सूक्ष्म बुद्धि, बल, उत्साह देने की कृपा करें, जिससे सब कुछ का परित्याग करके भी मैं भयभीत नहीं होऊँ ॥

भावान्तर २२

हे परमेश्वर ! आप सर्वत्र विजेता हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे परम वीर महाबलिन् ! सम्पूर्ण संसार तथा शरीर का त्याग कर अपने नित्य स्वरूप में मैं आपके साथ सम्मिलित हो जाने रूप मित्रता करना चाहता हूँ, किन्तु भय लगता है। अतः आप स्वयं मुझे सूक्ष्म बुद्धि, बल, उत्साह देने की कृपा करें, जिससे सब कुछ का परित्याग करके भी मैं भयभीत नहीं होऊँ ॥

भावान्तर २३

हे परमेश्वर ! जो आपके सखीत्व को प्राप्त कर लेता या जो आपके सखीत्व में विद्यमान होता है, वह कभी मृत्यु दुःखों से भयभीत नहीं होता है। आप सर्वत्र विजेता हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ ॥

पदार्थ

हे (शवसः) अनन्तबल वा सेनाबल के (पते) पालन करनेहारे ईश्वर वा अध्यक्ष! (अभिजेतारम्) प्रत्यक्ष शत्रुओं को जिताने वा जीतनेवाले (अपराजितम्) जिस का पराजय कोई भी न कर सके (त्वा) उस आप को (वाजिनः) उत्तम विद्या वा बल से अपने शरीर के उत्तम बल वा समुदाय को जानते हुए हम लोग

(प्रणोनमः) अच्छी प्रकार आप की वार २ स्तुति करते हैं, जिससे (इन्द्र) हे सब प्रजा वा सेना के स्वामी! (ते) आप जगदीश्वर वा सभाध्यक्ष के साथ (सख्ये) हम लोग मित्र भाव करके शत्रुओं वा दुष्टों से कभी (मा भेम) भय न करें।।२।।

६६ सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म ॥ तैतिरीय. ब्रह्मा. प्रथम अनु.।

भावान्तर १

हे सर्वव्यापक प्रभो ! आप हमारी तरह एक सत्तात्मक विद्यमान पदार्थ हैं। आप हमारी तरह चेतन किन्तु सर्वज्ञ हम सबको सब प्रकार से सदा जानने वाले हैं। आप अनन्त हैं। सबसे महान् हैं ॥

भावान्तर २

हे ईश्वर! आप यहीं मुझमें विद्यमान हैं। अतः मुझे अपना साक्षाद् बोध कराइए। आप सब कुछ जान रहे हैं, सो हमारी न्यूनताओं को दूर कीजिए। आप मुझे अपने अनन्त ज्ञान, बल आदि गुणों सहित सर्वत्र व्यापक स्वरूप की अनुभूति करा के अनुगृहीत करें ॥

भावान्तर ३

हे ईश्वर ! आप यहीं मुझमें विद्यमान हैं। अतः मुझे अपना साक्षाद् बोध कराइए। आप सब कुछ जान रहे हैं, सो हमारी न्यूनताओं को दूर कीजिए। आप मुझे अपने अनन्त ज्ञानानन्दस्वरूप की अनुभूति करा के अनुगृहीत करें ॥

भावान्तर ४

हे ईश्वर आप यहीं विद्यमान हैं। अतः मुझे अपना बोध कराइए। आप सब कुछ जान रहे हैं, सो न्यूनताओं को पूर्ण कीजिए। आप अनन्त ज्ञान, बल आदि गुणों सहित सर्वत्र व्यापक हैं ॥

भावान्तर ५

आप अभी वर्त्तमान हैं, हमको जान रहे हैं तथा अनन्त देश में, अनन्त प्राणियों, सूर्यादि पदार्थों की व्यवस्था कर रहे हैं ॥

भावान्तर ६

हे ईश्वर ! मैं देख रहा हूँ कि आप यहीं वर्त्तमान हैं। आप ज्ञानस्वरूप हैं। हमको, स्वयं को व अन्यों को जान रहे हैं। आप यहाँ विद्यमान हैं व अन्यत्र भी हैं, अनन्त देश में जहाँ से मेरा कोई सम्बन्ध भी नहीं। आप सबसे बड़े हैं॥

६७ ओं सर्वाधार इति मन्त्रः

भावार्थ

हे ईश्वर ! आप सर्वव्यापक होते हुए सबका आधार हैं, क्योंकि समस्त लोकों का सन्तुलन तथा हमारे कर्मादि की अध्यक्षता और माता-पिता आदि से समुचित सम्बन्ध कराने वाले हैं॥

ओं सर्वरक्षक इति मन्त्रः।

भावान्तर १

हे परमेश्वर ! आप सबके रक्षक हैं। अतः मेरी भी रक्षा करें॥

भावान्तर २

हे ईश्वर ! आप सबके पूर्ण रक्षक हैं। मेरी इस बाधितावस्था को दूर कर निर्बाध अवस्था में अवस्थित करें॥

६८ ओं सच्चिदानन्द इति मन्त्रः।

भावान्तर १

हे ईश्वर ! आप सदा सर्वत्र विद्यमान सबके ज्ञाता और आनन्दस्वरूप हैं। कृपया अपनी अनुभूति करा अनुगृहीत करें !!

भावान्तर २

हे ईश्वर ! आप यहीं मुझमें विद्यमान हैं। आप हमें जान रहे हैं। आप आनन्दस्वरूप हैं। अतः मुझे अपना साक्षात् बोध कराइए॥

भावान्तर ३

हे प्रभो ! आप एक सत्तात्मक शक्ति हैं। अभी हम सबके अन्दर-बाहर विद्यमान हैं। हम सब को जान रहे हैं और आनन्दस्वरूप आदि अनन्त गुणवान् हैं॥

भावान्तर ४

आप विद्यमान होकर मुझे देख रहे हैं। मेरे समान चेतन हैं, किन्तु आप आनन्दस्वरूप और मैं आनन्दरहित हूँ। सो मुझे अपना आनन्द देकर कृतार्थ करें॥

भावान्तर ५

हे ईश्वर ! आप सदा से विद्यमान हैं। आप सर्वज्ञ तथा आनन्दस्वरुप हैं। कृपया हमें अपने स्वरूप का बोध कराएँ॥

६९

सहस्त्रशीर्षा पुरु षः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिः सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥यजु. ३१/१।

भावार्थ

हे अनन्त परमेश्वर ! आपके अन्दर अन्य प्राणियों के अनेक शिर विद्यमान हैं। आप हमसे अनन्त गुण ज्ञान रखने वाले हैं। आप अनन्त सामर्थ्य से हम सबको सदा जानते रहते हैं। आप सदा अत्यन्त गतिशीलों का भी अतिक्रमण करके सर्वत्र विद्यमान रहते हैं। आप इस भूमि सहित समस्त ब्रह्माण्ड को सदा छुए हुए हैं। कहीं से भी कोई आपके नियन्त्रण का उल्लंघन नहीं कर सकता है॥

पदार्थ

(सः) (१/१) वह (सहस्त्रशीर्षा) (१/१) हजारों (असंख्य) शीर (सहस्राक्षः) (१/१) हजारों नेत्र और (सहस्रपात्) (१/१) असंख्य पैर वाला (पुरुषः) (१/१) सर्वत्र परिपूर्ण व्यापक ईश्वर है (वह)(सर्वतः)(अ.प.) सब देशों में (भूमिम्) (२/१) भूगोल में (स्पृत्वा)(अ.प.) व्याप्त हो के (दशाङ्गुलम्) (२/१) पू स्थूल तथा पू सूक्ष्म भूत अवयव वाला जगत् को (अति, अतिष्ठत्) (लट् प्र पु/१) उलङ्घ कर स्थित है।

७० सुमित्रिया नऽआपऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं च व यं द्विष्मः ॥ यजु. ३६/२३।

भावार्थ

हे सर्वव्यापक सर्वशक्तिमन् ईश्वर ! मेरी व्याधि को दूर कर दें। एतदर्थ अन्न-पान आदि जिन ओषधियों को ले रहा हूँ, वे मेरे लिए हितकारी हों। अहितकारी तो उनके लिए हों, जो मुझे अच्छा नहीं मानते और जिनको मैं भी अच्छा नहीं मानता हूँ अर्थात् जो सब प्रकार विरुद्ध आहार-विहार हैं, वे सदैव अहितकर ही होते हैं ॥

पदार्थ

(आपः)[१/३] प्राण वा जल (ओषधयः)[१/३] जो, व्रीहि आदि ओषधियाँ (नः)[६/३] हमारे लिए (सुमित्रियाः)[१/३] सुन्दर मित्र के समान (सन्तु)[लोट् प्र पु /३] होवें। वे ही (यः)[१/१] जो (अधर्मी)(अस्मान्)[२/३] हम धर्मात्माओं के प्रति द्वेष्टि द्वेष करता है (च)(अ.प.) [लट् प्र पु /१] और (यम्)[२/१] जिससे (वयम्)[१/३] द्विष्मः [लट् उ.पु./३] द्वेष करते हैं (तस्मै)[४/१] उसके लिए (दुर्मित्रियाः)[१/३] शत्रु के तुल्य विरुद्ध (सन्तु)[लोट् प्र पु /३] होवे।

७१ सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा। मर्य्यइव स्व ओक्ये ॥ ऋ. १/९१/१३।

भावार्थ

हे सच्चिानन्दस्वरूप ईश्वर ! आप हमारे ज्ञान में सदा उपलब्ध हैं तथा हमसे प्रसन्न हैं, ऐसी हमें अनुभूति कराइए। जैसे गौएँ अपने घ्रास को पाकर प्रसन्न होती है तथा व्यक्ति अपने निवास में रहकर आनन्दित होता है, वैसे ही हमारे सम्बन्धों में अनुकूल होइए ॥

पदार्थ

हे (सोम) परमेश्वर! जिस कारण आप (नः) हम लोगों के (हृदि) हृदय में (न) जैसे (यवसेषु) खाने योग्य घास आदि पदार्थों में (गावः) गौ रमती हैं वैसे वा

जैसे (स्वे) अपने (ओक्ये) घर में (मर्यइव) मनुष्य विरमता है वैसे (आ) अच्छे प्रकार (रारन्धि) रमिये वा ओषधिसमूह उक्त प्रकार से रमे, इससे सबके सेवने योग्य आप वा यह है।।१३।।

७२

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्। ओ३म् खं ब्रह्म॥
यजु. ४०/१७।

भावान्तर १

ज्ञानस्वरूप सर्वरक्षक पिता! आप सर्वत्र व्यापक हैं। आपने पूरे विश्व में प्रकृति का सार रूप सुखस्वरूप उद्घाटित कर रखा है। आप सूर्य में विद्यमान हैं तथा मेरे अन्दर भी विद्यमान हैं। ओम् आपका प्रिय नाम है तथा आप सर्वव्यापक और महान् हैं॥

भावान्तर २

हे ज्ञानस्वरूप सर्वरक्षक पितः! आप निश्चय से हैं और सर्वत्र व्यापक हैं। क्योंकि आपने पूरे विश्व में प्रकृति का सार रूप सुखस्वरूप उद्घाटित कर रखा है। आप सूर्य में विद्यमान हैं तथा मेरे अन्दर भी विद्यमान हैं। ओम् आपका प्रिय नाम है तथा आप सर्वव्यापक और महान् हैं॥

भावान्तर ३

हे ज्ञानस्वरूप सर्वरक्षक पितः! आपने हमको जनाने के लिए पूरे विश्व में प्रकृति का सार रूप सुखस्वरूप उद्घाटित कर रखा है। आप उस सूर्य में विद्यमान हैं तथा मेरे अन्दर भी विद्यमान हैं। ओम् आपका प्रिय नाम है तथा आप सर्वव्यापक और महान् हैं। प्रकृति से सम्बन्धित मेरा ज्ञान परिपक्व करें॥

भावान्तर ४

हे ज्ञानस्वरूप सर्वरक्षक प्रभो! आप सर्वत्र व्यापक हैं। आपने पूरे विश्व में प्रकृति का सार रूप सुखस्वरूप उद्घाटित कर रखा है। जो आप उस सूर्य में

विद्यमान हैं, वही मेरे अन्दर भी विद्यमान हैं। ओम् आपका प्रिय नाम है तथा आप सर्वव्यापक और महान् हैं। अतः शीघ्र ही अपनी अनुभूति कराइए॥

भावान्तर ५

हे ज्ञानस्वरूप ईश्वर ! आपने ही प्रकृति के सारभूत रूप-रस, आनन्द आदि अभिभूत गुणों को संसार के रूप में अभिव्यक्त किया है। जो आप सूर्य आदि में विद्यमान हैं, वही आप मेरे अन्दर भी विद्यमान हैं। आप आकाश के समान सर्वव्यापक हैं। मैं सदैव आपका अनुभव करता रहूँ मेरी इस आकांक्षा को सफल करें !!

भावान्तर ६

हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! सृष्टि के अन्तर्गत होने वाले असंख्य प्रकाशशील लोक जो आपके अन्तर्गत आभासित हो रहे हैं। उन सबके रचयिता, नियन्त्रक आप ही हैं। आप एक ही उत्पन्न हुए सभी प्राणियों के स्वामी हैं। आप ही समस्त ब्रह्माण्ड को धारण कर रहे हैं। मैं आप सुखस्वरूप के लिए विविध प्रकार से स्तुति कर रहा हूँ॥

पदार्थ

हे मनुष्यो! (हिरण्मयेन)[३/१] ज्योतिः स्वरूप चमकीले (पात्रेण) [३/१] पात्र के द्वारा (सत्यस्य)[६/१] अविनाशी कारण का (मुखम्)[१/१] मुख (अपिहितम्)[१/१] आच्छादित है। (यः)[१/१] जो (असौ)[१/१] वह (आदित्ये)[७/१] सूर्यमण्डल से (पुरुषः)[१/१] पूर्ण परमात्मा है (सः)[१/१] वह (असौ)[१/१] परोक्षरूप (अहम्)[१/१] मैं परमात्मा (खम्) [१/१] आकाशवत् व्यापक (ब्रह्म)[१/१] महान्। (ओ३म्)[१/१] सबके रक्षक हूँ, ओ३म् मेरा नाम जानो।

दर्शन योग महाविद्यालय

योगादेव तु कैवल्यम्

(वैदिक दर्शन अध्यापन एवं योग प्रशिक्षण का आदर्श संस्थान)

संक्षिप्त परिचय

आर्य वन विकास क्षेत्र, रोजड़, पत्रालयः सागपुर, जि. साबरकांठा, गुजरात

स्थापना

दर्शन योग महाविद्यालय, आर्य वन विकास क्षेत्र, रोजड़, पत्रालयः सागपुर, जि. साबरकांठा, गुजरात की स्थापना चैत्र शुक्ला प्रतिपदा विक्रम संवत् २०४३ (१० अप्रैल १९८६) को श्री स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा हुई। इसका प्रारंभिक नाम 'दर्शन एवं योग प्रशिक्षण शिविर' था।

उद्देश्य

(१) महर्षि पतंजलि प्रणीत अष्टाङ्गयोग की पद्धति से उच्च स्तर के योग-प्रशिक्षकों को तैयार करना, जो देश-विदेश में प्रचलित मिथ्यायोग के स्थान पर सत्य योग का प्रशिक्षण दे सकें।

(२) विशिष्ट योग्यता वाले वैदिक-दार्शनिक विद्वानों का निर्माण करना जो सार्वभौमिक, युक्तियुक्त, अकाट्य, वैज्ञानिक, शाश्वत वैदिक सिद्धातों का, बुद्धिजीवी वर्ग के समक्ष प्रभावपूर्ण शैली से प्रतिपादन करके, उनकी नास्तिकता मिटाकर उन्हें वैदिक धर्मानुयायी बना सकें।

(३) निष्काम भावना से युक्त, मनसा-वाचा-कर्मणा एक होकर तन, मन और धन से सम्पूर्ण जीवन की आहुति देनेवाले व्यक्तियों का निर्माण करना, जो अपनी और संसार की अविद्या, अधर्म तथा दुःखों का विनाश करके उसके स्थान पर विद्या, धर्म तथा आनन्द की स्थापना कर सकें।

प्रवेश के लिए योग्यता

(१) प्रवेश केवल ब्रह्मचारियों के लिए। (आजीवन ब्रह्मचारियों का प्राथमिकता)

(२) समर्पित भावना से युक्त होकर पूर्ण अनुशासन में रहना।

(३) वैदिक सिद्धान्तों में निष्ठा होना।

(४) योगाभ्यास तथा दर्शनों के अध्ययन में रुचि होना।

(५) संस्कृत भाषा पढ़ने, लिखने, बोलने में समर्थ होना (व्याकरणाचार्य, शास्त्री या समकक्ष योग्यता वालों को प्राथमिकता)।

(६) यम-नियमों का श्रद्धा पूर्वक पालन करना।
(७) निष्काम भाव से समाज-राष्ट्र की सेवा का संकल्प होना।
(८) त्यागी, तपस्वी, सदाचारी होना।
(९) अध्ययन काल में घर से या स्वजनों से सांसारिक सम्बन्ध न होना।
(१०) अवस्था १८ वर्ष से अधिक होना।

विशेष

प्रवेश लेने वाले ब्रह्मचारियों का तीन मास तक बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा व्यावहारिक परीक्षण किया जाता है। ब्रह्मचारी के योग्य सिद्ध होने पर ही स्थायी प्रवेश दिया जाता है।

संस्थान की विशेषताएँ

(१) प्रत्येक ब्रह्मचारी को पक्षपात रहित (समान रूप से) भोजन, वस्त्र, दूध, घी, फल, पुस्तक, आसन आदि सभी वस्तुएँ निःशुल्क प्राप्त हैं।
(२) प्रतिदिन कम से कम दो घण्टे व्यक्तिगत योगाभ्यास (ध्यान) करना अनिवार्य है।
(३) प्रतिदिन क्रियात्मक योग प्रशिक्षण, (जिसमें विवेक, वैराग्य, अभ्यास, ईश्वरप्रणिधान, मनोनियंत्रण, ध्यान, समाधि तथा स्वस्वामिसम्बन्ध (ममत्व) को हटाना, इत्यादि आध्यात्मिक सूक्ष्म विषयों पर विस्तार से विवेचन किया जाता है।
(४) यम-नियमों का मनसा, वाचा, कर्मणा सूक्ष्मता से पालन कराया जाता है।
(५) दिन में ६ घण्टे का मौन रहता है, (जिसमें ध्यान, स्वाध्याय आदि सम्मिलित है)।
(६) रात्रि में आत्मनिरीक्षण होता है। (जिसमें दिन भर के दोषों का सबके समक्ष ज्ञापन तथा भविष्य में सुधार हेतु प्रयत्न किया जाता है)।
(७) वार्तालाप का माध्यम संस्कृत भाषा है।
(८) प्रतिदिन यज्ञ, वेद पाठ तथा वेदमन्त्र का स्वाध्याय होता है।
(९) सप्ताह में एक बार आसन-प्रशिक्षण तथा पक्ष (= १५ दिन) में एक बार व्याख्यान प्रशिक्षण होता है।
(१०) दर्शनों की लिखित एवं मौखिक परीक्षाएँ ली जाती हैं।
(११) प्रातः काल ४ बजे से रात्रि ९-३० बजे तक आदर्श एवं व्यस्त गुरुकुलीय दिनचर्या है।

उपलब्धियाँ

सन् १९८६ से दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड तथा सन २०१६ से दर्शन योग महाविद्यालय, महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुंदरपुरके स्नातक, स्नातकोत्तर,

व्याकरणाचार्य, शास्त्री स्तर के ब्रह्मचारियों को प्रवेश दिया गया। योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय, वेदान्त तथा मीमांसा, इन षड्दर्शनों का संस्कृत भाष्यों सहित अध्यापन हुआ। ५ दर्शनों की लिखित एवं मौखिक परीक्षाएँ ली गयीं। दर्शनों के अतिरिक्त ईश आदि १० उपनिषदों तथा वेद के चुने हुए अध्यायों का भी अध्यापन किया गया। तथा आंशिक रूप से अष्टाध्यायी व्याकरण का भी अध्यापन किया गया।

उपर्युक्त दर्शनों को पढ़ाने की योग्यता प्राप्त करने वालों को 'दर्शनाचार्य', 'दर्शन विशारद' तथा 'दर्शन प्राज्ञ' उपाधियां प्रदान की गयीं तथा क्रियात्मक योग प्रशिक्षण देने में समर्थों को 'योग विशारद' तथा 'योग प्राज्ञ' उपाधियां प्रदान की गयी।

ब्रह्मचारियों को वैदिक दार्शनिक गम्भीर सिद्धान्तों का ज्ञान कराया गया, जिसके फलस्वरूप अनेक ब्रह्मचारी सूक्ष्म विषयों से सम्बन्धित शंकाओं का समाधान करने, गम्भीर विषयों पर निबन्ध लिखने तथा दार्शनिक व्याख्यान देने में निपुण हुए।

यम-नियमों का सदा व्यवहार में प्रयोग कैसे किया जाये तथा निष्काम कर्म कैसे किये जायें, इस विषयमें भी ब्रह्मचारियों को विशेष प्रशिक्षण दिया गया। ब्रह्मचारियों ने पर्याप्त मात्रा में इन विषयों को समझा और यथाशक्ति जीवन में उतारा।

अब तक जो ब्रह्मचारी महाविद्यालय में अध्ययन कर चुके हैं, उनमें से अधिकांश स्नातक देश के विभिन्न प्रान्तों में गुरुकुलों का संचालन, संस्कृत भाषा, व्याकरण, दर्शन, उपनिषद् आदि का अध्यापन, योग प्रशिक्षण, पुस्तक लेखन, वैदिक धर्म का प्रचार आदि कार्यों में संलग्न हैं। जिस उद्देश्य को समक्ष रखकर इस विद्यालय का संचालन आरम्भ किया गया था, उस में विद्यालय पर्याप्त मात्रा में सफल हुआ है। जिस के सम्पूर्ण संचालन दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट (पं.) द्वारा हो रहा है ।

अन्य प्रवृत्तियाँ

संस्कृत भाषा, व्याकरण, उपनिषद्, दर्शन, वेद के अध्यापन तथा योग प्रशिक्षण के साथ यथा-सामर्थ्य कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य भी दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट के माध्यम से सम्पन्न किये जा रहे हैं, जिनमें से कुछ सक्षेप रूप कार्य निम्न हैं –

१. दर्शन योग महाविद्यालय (मुख्य शाखा), आर्यवन, रोजड (गुजरात) व दर्शन योग महाविद्यालय (द्वितीय शाखा), सुंदरपर, रोहतक (हरयाणा) का संचालन ।
उद्देश्य : (क) वेद, दर्शन, उपनिषद तथा ऋषिकृत वैदिक प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन। (ख) समाज में वैदिक विद्या के प्रचार-प्रसार हेतु युवा वैराग्यवान् योगाभ्यासी धर्माचार्यों का निर्माण करना।

२. दर्शन योग साधना आश्रम, कमोदा, कुरुक्षेत्र का संचालन करना । (योग साधना तथा

योग अनुसंधान व प्रशिक्षण का आदर्श संस्थान ।)

३. दर्शन योग कन्या महाविद्यालय, टोरन, कालका, पंचकुला का निर्माण कार्य करना । (उद्देश्य : विदुषी योगिनियों का निर्माण)

४. वैदिक ध्यान व योग प्रशिक्षण यथा सघन साधना शिविर आदि कार्यक्रमों का संचालन करना ।

५. भारत के विभिन्न प्रान्तों में विशुद्ध वैदिक योग व वेद, दर्शन, उपनिषद आदि वैदिक ग्रंथों का अध्यापन व इनसे संबन्धित प्रवचनमाला तथा आगंतुक महानुभावों का मार्गदर्शन, जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान करना ।

६. विशुद्ध वैदिक ध्यान योग से संबन्धित साहित्य का लेखन, प्रकाशन एवं प्रचार-प्रसार हेतु निःशुल्क साहित्य वितरण करना ।

७. लौकिक-पारलौकिक कार्यों में सफलता हेतु सफलता विज्ञान परियोजना का संचालन करना । (सुविचार, पुस्तक, वीडियो, चित्र, शिविर, मंच आदि द्वारा प्रस्तुति)

८. आदर्श परिवार निर्माण तथा वेद प्रचार समिति की स्थापना से वैदिक-विचारधारा को व्यवहारिक रूप देना ।

९. वैदिक विद्या के प्रचार-प्रसार में समर्पित विद्वानों को आर्थिक सहयोगतथा निवास आदि के रूप में सुरक्षा प्रदान करना ।

१०. वैदिक संस्कार-दीक्षा का आयोजन करना । (संन्यास, वानप्रस्थ, उपनयन, वेदारम्भदीक्षा का आयोजन)

११. अन्य गुरुकुलों में अध्ययन कर रहे ब्रह्मचारियों तथा विद्यार्थियों को आर्थिक सहयोग करना ।

१२. गौ-वंश संवर्धन हेतु प्रचार तथा धन आदि का सहयोग करना ।

१३. निर्धन विकलांग रोगियों की आर्थिक सहायता करना ।

१४. पर्यावरण शुद्धि निमित्त

क. वैज्ञानिक स्तर पर यज्ञ-हवन का क्रियान्वयन करना, अन्यों को प्रशिक्षण देना तथा यज्ञ हेतु घृत, समिधा एवं हवन सामग्री का सहयोग करना ।

ख. औषधि व वनस्पति वृक्षारोपण करना तथा अन्यों को प्रेरित करना ।

१५. वैदिक अंत्येष्टि संस्कार करना तथा उसमें प्रयुक्त सामग्री का सहयोग करना ।

१६. देश के विभिन्न प्रान्तों में प्राकृतिक प्रकोप यथा बाढ़ आदि से पीड़ितों की सहायता करना ।

१७. इन्टरनेट व वेबसाइट के माध्यम से विभिन्न प्रकार से प्रेरणा तथा आध्यात्मिक व व्यावहारिक शंकाओं का समाधान करना ।

दर्शनयोग धाम

ग्राम व डाक :- लाकरोड़ा, ता.: माणसा, जि.: गांधीनगर (गुजरात)-382835

वैदिक संस्कृति की सुरक्षा, आर्ष ज्ञान-विज्ञान का प्रचार-प्रसार, एवं सुसंस्कार निर्माण का आदर्श संस्थान


स्वामी दयानंद जी सरस्वती


स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक


स्वामी विवेकानंद जी परिव्राजक

समादरणीय श्रीमान,

सादर नमस्ते जी!

ईश्वरकृपया सर्वमत्र कुशलं तत्राप्यस्तु!!

''अभ्युदय और निःश्रेयस'' वैदिक भारतीय संस्कृति के आदर्श और सनातन धरोहर हैं। हमारा परम कर्त्तव्य है कि इनकी सुरक्षा व संवर्धन तन-मन-धन से करें, क्योंकि इसी में विश्वकल्याण सन्निहित है, यदि हम इसके स्थायित्व के विषय में योजनाबद्ध होकर पूर्ण पुरुषार्थ नहीं करते अपितु उसे विकृत करते हैं तो हमारा विनाश अवश्यम्भावी है।

इसी उद्देश्य को आत्मसात् करते हुए जैसा कि आपको विदित है कि स्मृतिशेष पूज्य स्वामी सत्यपति जी द्वारा संस्थापित दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़ (गुजरात) वैदिक प्राचीन दर्शन विद्या के अध्यापन के साथ विशुद्ध योगाभ्यास प्रशिक्षण के अनुपम केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित है और यह विगत 35 वर्षों से अहर्निश लोक सेवा में संलग्न है। विद्यालय से पढ़े हुए सुसंस्कृत अनेक विद्वान आज भी समाज में अपना अतुलनीय योगदान अपनी अपनी योग्यता से कर रहे हैं। यह विद्यालय वर्तमान में मुख्यतः केवल ब्रह्मचारियों के लिए ही हितकारी है। अब संस्थान की योजना है कि इस विद्या का लाभ जनसमुदाय तक पहुंचाया जाए।

अतः 'दर्शनयोग धाम' परियोजना का आयोजन किया गया है। निवेदन है कि इस पुनीत धर्म कार्य में तन-मन-धन से सहयोग दें तथा अन्यों को भी इसके लिये प्रेरित करें।

धन्यवाद

समस्त दर्शन योग परिवार



दर्शन योग धाम निर्माण का प्रयोजन

1. वैदिक संस्कृति की रक्षा तथा संवर्धन करने के लिए ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास इन चारों आश्रमों तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि इन वर्णों का एक साथ योजनाबद्ध रूप से एकत्रीकरण करना। जिससे परस्पर सहयोग से सभी धार्मिक कार्य सरल व सफल हो सकें। उक्त सभी की पूर्ण सुरक्षा व व्यवस्था करना तथा योग्यता अनुसार सेवा कार्य=अध्ययन, अध्यापन, साधना, स्वाध्याय आदि के अवसर व साधन प्रदान करना।
2. राष्ट्र के व आध्यात्मिक जगत् के भावी स्तम्भ रूप वैदिक विद्वान बनने के लिए युवकों को प्रेरित करना।
3. वैदिक गुरुकुल परम्परा से पढ़ने की इच्छा रखने वाले विद्यार्थियों को अनेक विद्याओं का ज्ञान एक स्थान में ही उपलब्ध कराना।
4. अपनी सन्तान को ब्रह्मचारी-संन्यासी बना सकें, ऐसा उत्साह माता-पिता के हृदय में भरना।
5. विद्या व धर्म हेतु कार्य करने वाले संन्यासी, आचार्य तथा ब्रह्मचारियों के माता व पिता की सेवा करना।
6. विद्वानों व संन्यासियों के संगठन से देश भर में एक व्यवस्थित क्रम से (1) वैदिक विद्याओं का प्रचार-प्रसार करना, (2) वैदिक वांङ्मय शोध, अनुसंधान आदि कार्य करना।
5. ऋषिकाकुलम् के द्वारा विद्यानुरागी माताओं/बहनों को विद्या-सुरक्षा प्रदान करना व धर्म-प्रचारिका बनाना।
6. देश व विदेश में अनेक वैदिक गुरुकुल, विद्यालय, महाविद्यालय, आश्रम आदि की स्थापना व उनका संचालन करना।
7. वैदिक धर्म के प्रचार केन्द्र तथा प्रचार समिति का संचालन व संवर्धन करना।
8. पर्यावरण प्रदूषण निवारण, शारीरिक-मानसिक-आत्मिक विकास हेतु व वेद की रक्षा आदि के लिए तथा विशेष रोग, विशेष अवस्था, विशेष ऋतु के अनुकूल विशेष यज्ञ साधनों से यज्ञ का अनुष्ठान करना, यज्ञ संबंधी अनुसंधान करना तथा घर-घर में यज्ञ हेतु प्रशिक्षण प्रदान करना।
9. गौवंश की रक्षा व संवृद्धि करना।
10. निर्धनों को योग्यता अनुसार कार्य व साधन, जिज्ञासु/ज्ञान इच्छुकों को ज्ञान व ज्ञानवर्धक साधन, अशक्तों को शक्ति व शक्तिवर्धक साधन, अस्वस्थों को स्वास्थ्य व स्वास्थ्यवर्धक साधन आदि प्रदान करना। आदि-आदि...

इस दर्शनयोग धाम के निदेशक पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक के मार्गदर्शन में उक्त प्रयोजनों को क्रियान्वित करने के लिए यह परियोजना है।

-: स्थान की विशेषता :-

* गांधीनगर जिले में साबरमती नदी के तट पर स्थित लाकरोड़ा ग्राम में सुरम्य स्थान
(महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा प्रारंभिक योगसाधना साबरमती नदी के तट पर की गई थी जिसे दृष्टिगत रखते हुये यह स्थान चयनित किया गया है)
* सुजलाम्-सुफलाम् केनाल के सामने
* लाकरोड़ा डैम के निकट
* गुजरात की राजधानी गांधीनगर से लगभग 38 कि.मी. दूर
* अहमदाबाद-उदयपुर नेशनल हाइवे से मात्र 4 कि.मी. दूर
* गांधीनगर, साबरकांठा, महेसाणा तीन जिलों की सीमा पर स्थित
* रेल्वे स्टेशन (प्रांतीज) से 8 कि.मी. दूर तथा एयरपोर्ट अहमदाबाद से 60 कि.मी. दूर

प्रस्तावित दर्शनयोग धाम

विभाग - क — गुरुकुल व अनुसंधान विभाग



* वेद वेदांग महाविद्यालय (गुरुकुल) :- वैदिक संस्कृति की सुरक्षा व संवर्धन के निमित्त त्यागी, तपस्वी, वैराग्यवान, विद्वान, संन्यासी तथा ब्रह्मचारियों का निर्माण करना। इसमें कुल सात विभाग रहेंगे।

1) वेद विभाग, 2) साहित्य विभाग, 3) व्याकरण विभाग,
4) ज्योतिष विभाग 5) आयुर्वेद विभाग 6) दर्शन विभाग
7) उपदेशक विभाग।

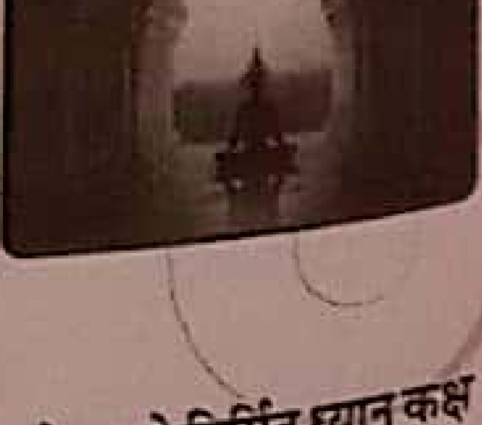
भव्य सामूहिक आकर्षक प्रवेश-द्वार सहित प्रत्येक विभाग में 8 ब्रह्मचारी प्रकोष्ठ, 2 आचार्य प्रकोष्ठ, 1 अध्यापन व साधना कक्ष (Meditation & Class Room), 1 विभागीय वाचनालय तथा सामूहिक व्यायामशाला रहेंगे।



* विश्वविद्यालय/विद्यापीठ व अनुसन्धान केन्द्र - दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़ (गुजरात) व दर्शन योग महाविद्यालय, महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, रोहतक (हरियाणा) तथा अनेक प्रस्तावित महाविद्यालय एवं उपरोक्त वेद वेदांग महाविद्यालय आदि की व्यवस्था, प्रबन्ध तथा विशुद्ध वैदिक योग के क्षेत्र में विशिष्ट अनुसन्धान हेतु रिकॉर्ड रूम, कार्यालय, बैठक प्रकोष्ठ आदि का निर्माण किया जाएगा।

विभाग - ख — संन्यासी/विरक्त आश्रम

* निदेशक कक्ष :- दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट के प्रबन्धक न्यासी तथा समस्त प्रकल्प के निदेशक (वर्तमान में पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक) के लिए सर्वसाधन युक्त प्रकोष्ठ, अध्ययन कक्ष, बैठक गृह आदि सहित आवास व्यवस्था।





* संन्यासी आश्रम तथा स्नातक कुटीर :- पूज्य स्वामी सत्यपति जी की शिष्य परंपरा से शिक्षा प्राप्त स्नातकों तथा अन्य योगाभ्यासी विद्वान, संन्यासी, साधकों के लिए उत्तम साधन व्यवस्था युक्त लगभग 30 निवास गृह।
* ध्यान कक्ष :- व्यक्तिगत ध्यान उपासना के लिए दस बांस और गोमय से निर्मित ध्यान कक्ष का निर्माण करना।

* मौन साधना कुटिया :- कुछ दिन के लिए अदृश्य मौन, काष्ठ मौन आदि साधना के लिए सभी साधन युक्त, वातानुकूलित, ध्वनि प्रतिरोधक आवासी प्रकोष्ठ।
* वीतराग पुस्तकालय :- सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय, लुप्तप्राय प्राचीन प्रकाशित ग्रंथ व अप्रकाशित वैदिक ग्रंथों के संग्रह तथा स्वाध्याय हेतु व्यवस्था।
* विभागीय सेवक प्रकोष्ठ :- साधकों के सेवक हेतु 2 प्रकोष्ठ।

विभाग - ग साधना-स्वाध्याय सेवा विभाग



* वानप्रस्थ साधक आश्रम :- स्वाध्याय-साधना-सेवा तथा तपस्या सहित जीवन यापन करने वाले 70 से 80 वानप्रस्थी व साधकों के लिए उत्तम साधन युक्त 40-50 कक्ष सहित विशिष्ट वानप्रस्थ साधक आश्रम का निर्माण करना।
* पितृ तर्पण आश्रम :- योग्य संन्यासी, आचार्य, ब्रह्मचारियों के माता-पिता की सेवा, सुश्रुषा हेतु अनुकूल वातावरण युक्त आवास व्यवस्था।
* ऋषिकाकुलम् :- 40 वर्ष से अधिक अवस्था वाली माताओं-बहनों के लिए स्वाध्याय-साधना-सेवा हेतु अवसर प्रदान करना। त्यागी, तपस्वी, विदुषी व प्रचारिकाओं का निर्माण करना।
* साधक अतिथि कुटिया :- स्वाध्याय-साधना-सेवा हेतु आने वाले महानुभावों तथा प्रतिष्ठित महानुभावों के आवास हेतु व्यवस्था।



* बैठक गृह (कम्युनिटी हॉल) :- वानप्रस्थी तथा साधकों के लिए चर्चा विमर्श आदि हेतु प्रोजेक्टर, दूरदर्शन सहित व्यवस्था।
* प्राथमिक चिकित्सालय :- दर्शनयोग धाम के सभी निवासियों के लिए चिकित्सा, सेवा की व्यवस्था (24 x 7)।
* व्यायाम शाला :- आधुनिक साधनों से युक्त।
* विभागीय सेवक प्रकोष्ठ :- परिचारक वर्ग तथा सेवक आवास के लिए लगभग 5-6 कुटिया।

विभाग - घ शिविर केन्द्र

* आदर्श सभागृह :- वर्तमान में 300 शिविरार्थियों के आवासीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर, यज्ञ प्रशिक्षण शिविर, चरित्र निर्माण शिविर, आदर्श गृहस्थ निर्माण शिविर, व्यक्तित्व विकास शिविर आदि हेतु वातानुकुलित आदर्श सभागृह आदि का निर्माण करना।
* शिविरार्थी पुरुषों हेतु भवन :- उक्त शिविर के पुरुष शिविरार्थी तथा अध्यापकों के लिए आवास गृह।
* शिविरार्थी माताओं/बहनों हेतु भवन :- उक्त शिविर के महिला शिविरार्थी तथा अध्यापिकाओं के लिए आवास गृह।

विभाग - च यज्ञ प्रचार प्रसार



* यज्ञशाला :- भव्य आकर्षक यज्ञशाला निर्माण।
* यज्ञ प्रशिक्षण केन्द्र:- क्रियात्मक रूप से यज्ञ का प्रशिक्षण देते हुए घर-घर में यज्ञ का प्रचार करना।
* यज्ञ प्रदर्शनी गृह :- यज्ञ के विभिन्न लाभ तथा विभिन्न यज्ञ साधनों की प्रदर्शनी।
* यज्ञ चिकित्सालय :- आधुनिक साधनों से युक्त पुराने व असाध्य रोगों के निवारण के लिए यज्ञ चिकित्सा की व्यवस्था।
* संस्कार केन्द्र :- वैदिक संस्कारों के संपादन हेतु व्यवस्था।

विभाग - छ

अन्नपूर्णा विभाग

* पाकशाला :- भोजन निर्माण के साधन व सुविधा के साथ पाकशाला, भंडार, पाचक आवास आदि की व्यवस्था।
* भोजनालय :- आश्रम के संन्यासी, विद्वान, ब्रह्मचारी तथा वानप्रस्थी आदि अंतेवासी और शिविरार्थी आंगतुक महानुभावों के लिये भोजन, अल्पाहार व दूध आदि की उत्तम व्यवस्था।

विभाग - ज

प्रशासन विभाग



* कार्यालय :- ट्रस्ट के सभी कार्य तथा प्रचार प्रसार व्यवस्था, हिसाब, जन-संपर्क आदि हेतु कार्यालय का निर्माण।
* स्वागत कक्ष :- संस्थान की गतिविधियों के प्रदर्शन एवं अतिथियों की बैठक व्यवस्था।
* पुस्तक प्रकाशन :- वैदिक वाङ्ग्मय के समस्त ग्रन्थों के प्रकाशन हेतु टाईप सेटिंग, डिजाइन आदि कार्य।
* मीडिया सेन्टर :- विडियो शूटिंग स्टुडियो, एडिटिंग तथा सोशल मीडिया से प्रचार की व्यवस्था करना।

✓ जलाशय (पानी टँकी), ✓ सिक्युरिटी प्रकोष्ठ, ✓ जनरेटर तथा विद्युत नियंत्रण प्रकोष्ठ,
✓ सार्वजनिक शौचालय तथा स्नानागार, ✓ कर्मचारी आवास।

विभाग - झ

गौ-कृषि विभाग



* गौशाला :- गौसेवक आवास, गौखाद्य भंडार, गौ उत्पाद निर्माण तथा भंडार आदि के साथ-साथ लगभग 100 गौवंशों की पालन व्यवस्था करने हेतु।
* कृषि विभाग :- जैविक कृषि व्यवस्था।
* सेवा प्रकल्प :- गृह उद्योग निर्माण शाला व भण्डार की व्यवस्था।

विभाग - ट

परिशिष्ट

* वैदिक वस्तु भंडार :- आश्रमवासी तथा देश-विदेश के धर्मप्रेमी महानुभावों के लिए पुस्तक, यज्ञ सामग्री आदि आवश्यक साधनों को उपलब्ध कराना।
* सार्वजनिक अल्पाहार ग्रह तथा भोजनालय
* बाल क्रीडांगण आदि।

➡ जैसे-जैसे धार्मिक सज्जनों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा वैसे-वैसे इन योजनाओं का क्रियान्वयन किया जाएगा।
➡ परियोजना में आवश्यकता अनुसार परिवर्तन किया जा सकता है।
➡ इस पत्रक प्रदर्शित चित्र प्रतिकात्मक है।

बैंक खाता विवरण

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

* खाता का नाम - दर्शनयोग धाम
* बचत खाता क्रमांक - 01790100055023
* बैंक नाम व शाखा - बैंक ऑफ बड़ौदा, धनसुरा, गुजरात
* IFSC - BARB0DHANSU (पाँचवा अक्षर शून्य है)

paytm | G Pay | PhonePe UPI No. : 9306374959

Exemption u/s 80G(5) Order No. DIT(E)/AHD/80G(5)/DYDT/124/2013-14 Dt. 05.04.2013 PAN : AABTD6346B

दर्शन योग परिवार के सदस्य बनने हेतु भावपूर्ण निवेदन

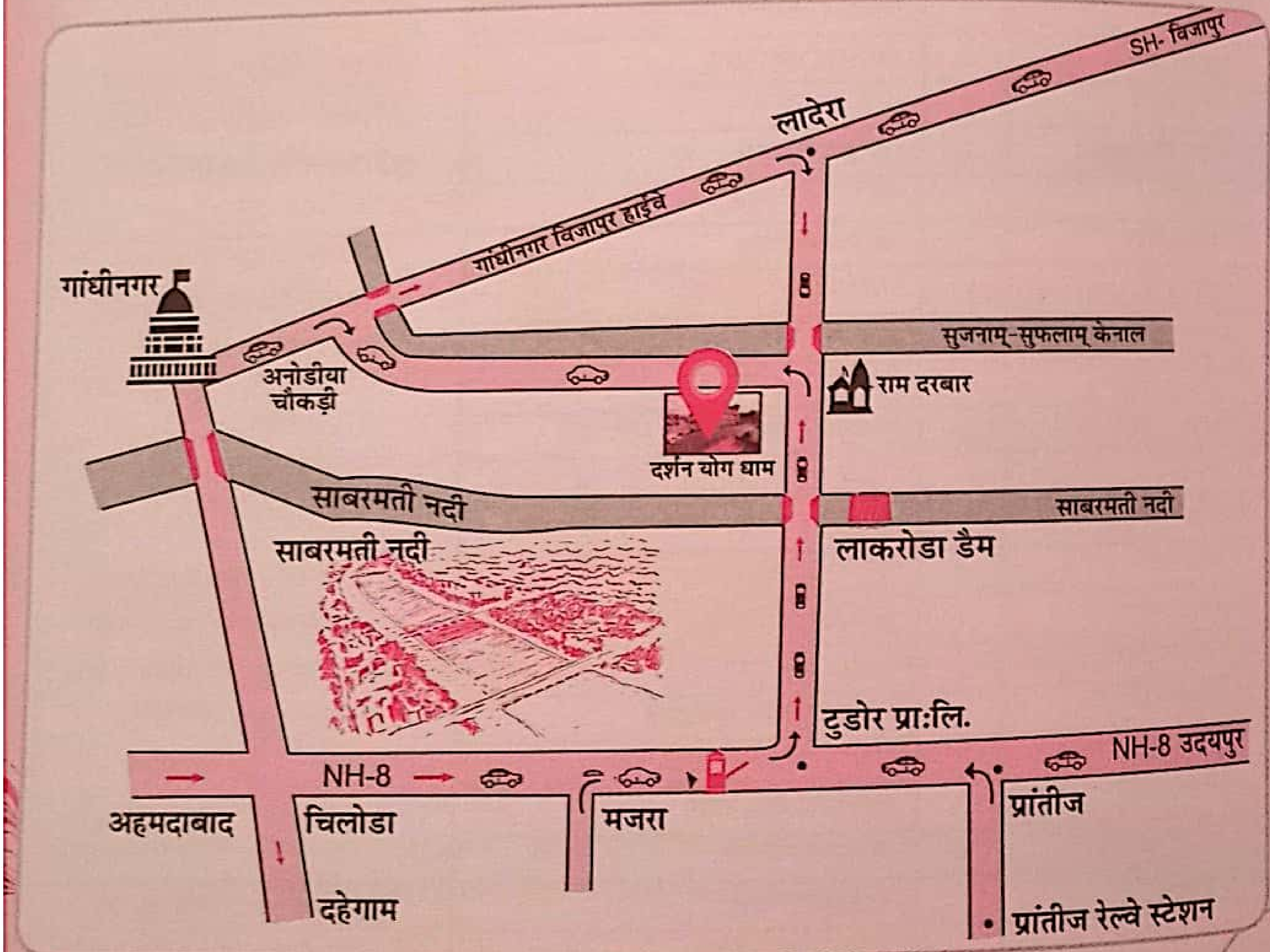


वैदिक संस्कृति तथा वैदिक आश्रम व्यवस्था के प्रति जागरूकता, रक्षा तथा संवृद्धि को लेकर संकल्पबद्ध यह दर्शनयोग धाम परियोजना है। आप सभी धार्मिक महानुभावों से निवेदन है कि इस महान् यज्ञ में तन-मन-धन से यथानुकूल-यथासंभव-यथासामर्थ्य सहयोग रूप आहुति प्रदान करें व अन्यों को भी प्रेरित करें। दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट के द्वारा आप सभी दानी महानुभावों को निम्न प्रकार से सम्मानीय पद व साधन सुविधाएँ प्रदान की जायेगी। ट्रस्ट को दिया गया दान आयकर अधिनियम 80 G के अंतर्गत कटौती के पात्र हैं। ट्रस्ट FCRA तथा CSR के माध्यम से दान ग्रहण करने के लिये पंजीकृत है।

सहयोग राशि	संख्या	निमित्त/पट्ट	सुविधा साधना रूपी सम्मान
51 लाख रुपये	1	संन्यासी आश्रम भूमि दाता	संस्थान के सम्मानीय अधिकारी, पूर्ण कालीन साधना अर्थ आवास कुटिया अगली 2 पीढ़ीयों को भी
51 लाख रुपये	1	वानप्रस्थ आश्रम भूमि दाता	
51 लाख रुपये	1	गौशाला भूमि दाता	
51 लाख रुपये	1	शिविर केन्द्र भूमि दाता	
51 लाख प्रति संकुल	7	गुरुकुल निर्माता	
51 लाख रुपये	1	मीडिया सेंटर दाता	
40 लाख रुपये	1	भोजनालय दाता	संस्थान के सम्मानीय सदस्य, पूर्ण कालीन साधना अर्थ आवास कुटिया अगली 2 पीढ़ीयों को भी
31 लाख रुपये	1	निदेशक कुटीर दाता	
25 लाख रुपये	1	प्राथमिक चिकित्सालय निर्माता	
21 लाख रुपये	1	गुरुकुल (दर्शन विभाग) भूमि दाता	संस्थान के सक्रिय सभासद सदस्य, पूर्ण कालीन साधना अर्थ आवास कुटिया अगली 2 पीढ़ीयों को भी
21 लाख रुपये	1	गुरुकुल (वेद विभाग) भूमि दाता	
21 लाख रुपये	1	गुरुकुल (व्याकरण विभाग) भूमि दाता	
21 लाख रुपये	1	गुरुकुल (साहित्य विभाग) भूमि दाता	
21 लाख रुपये	1	गुरुकुल (ज्योतिष विभाग) भूमि दाता	
21 लाख रुपये	1	गुरुकुल (आयुर्वेद विभाग) भूमि दाता	
21 लाख रुपये	1	गुरुकुल (उपदेशक विभाग) भूमि दाता	
21 लाख रुपये	1	ऋषिकाकुलम् भूमिदाता	
21 लाख रुपये	1	संस्कार केंद्र भूमि दाता	
21 लाख रुपये	1	यज्ञशाला भूमि दाता	
21 लाख प्रति संकुल	5	गौशाला निर्माता	
20 लाख रुपये	1	पाकशाला दाता	संस्थान के सक्रिय सदस्य, पूर्ण कालीन साधना अर्थ आवास कुटिया अगली 2 पीढ़ीयों को भी
15 लाख रुपये	9	पुस्तकालय निर्माता	
15 लाख रुपये	50	प्राथमिक सहयोगी (सदस्य) दाता	
11 लाख रुपये तथा अधिक	-	यज्ञशाला निर्माता (कुल लागत रू. 1 करोड़)	पूर्ण कालीन साधना अर्थ आवास कुटिया
11 लाख रुपये	2	व्यायाम शाला निर्माता	पूर्ण कालीन साधनार्थ आवास कुटिया
7 लाख रुपये	50	कुटिया दानी	साधनार्थ आवास कुटिया उपलब्ध रहेगी
1 लाख से अधिक	-	सभागार निर्माता (कुल लागत रू. 1 करोड़)	निःशुल्क गुरुकुल प्रवास, शिविर, भोजन, पुस्तक आदि की उपलब्धी
1 लाख रुपये तथा अधिक	10	बाँस-गोमय साधना कुटीर	निःशुल्क गुरुकुल प्रवास, शिविर, भोजन, पुस्तक आदि की उपलब्धी

*इससे अतिरिक्त किसी भी महानुभाव का अपनी श्रद्धा व सामर्थ्य अनुसार सहयोग भी सधन्यवाद स्वीकार्य है।
*लगभग 2 वर्षों की निर्माण कार्य की समयावधि के अंतर्गत आप इस पुनीत कार्य में सहयोग राशि सुविधानुसार अंशों में दे सकते हैं।

दर्शनयोग धाम



-: संपर्क सूत्र :-

दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट

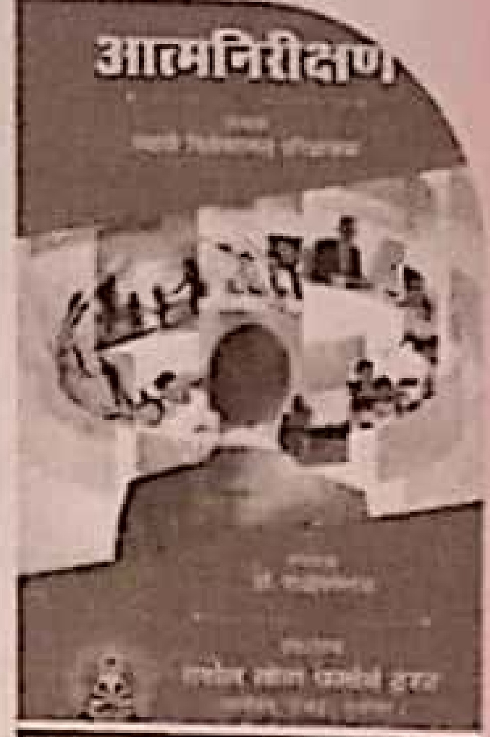
आर्यवन, रोजड़, सागपुर, जिला–साबरकांठा (गुजरात)–383307

दूरभाष – +91-9409415011, 9409615011, 9306374959

Email – darshanyog@gmail.com • Web – https://www.darshanyog.org

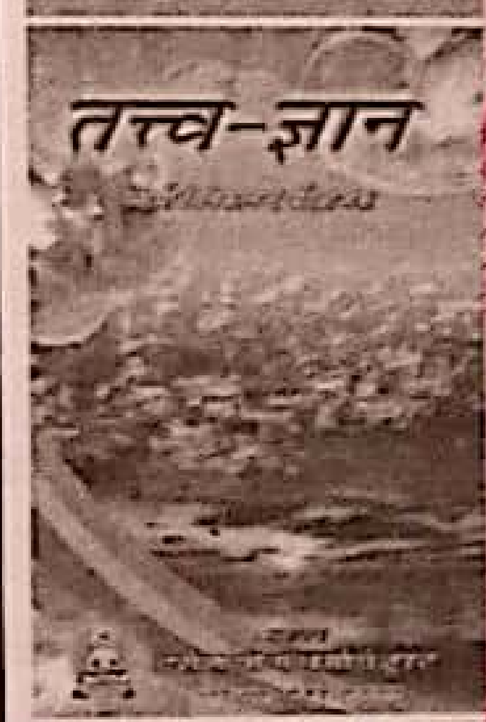
दर्शनयोग महाविद्यालय तथा दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट आर्यवन, रोजड़, द्वारा प्रकाशित व प्रचारित पुस्तकों की सूची

क्र.		मूल्य	प्रति
	स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक		
1.	योगदर्शनम्	250.00	
2.	बृहती ब्रह्ममेधा (भाग 1 से 3)	800.00	
3.	ब्रह्ममेधा सुविचार	75.00	
4.	सरल योग से ईश्वर साक्षात्कार	50.00	
5.	सत्योपदेश भाग-1	15.00	
6.	सत्योपदेश भाग-2	18.00	
7.	प्रेरक वाक्य	10.00	
8.	ब्रह्मविज्ञान	60.00	
9.	योग सुधा	30.00	
10.	ईश्वर प्रणिधान	प्रकाशन आधीन	
11.	ब्रह्ममेधा	अनुपलब्ध	
12.	स्वामी सत्यपति जी का 3D चित्र	अनुपलब्ध	
	स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक		
1.	सत्य की खोज	120.00	
2.	जिज्ञासु प्रेरणा	40.00	
3.	जीवनोपयोगी सुविचार भाग-1	50.00	
4.	जीवनोपयोगी सुविचार भाग-2	50.00	
5.	सुखी गृहस्थ सुविचार	75.00	
6.	वानप्रस्थ आश्रम एक सरल चिंतन	5.00	
7.	दुःख-स्वरूप, कारण और निवारण	20.00	
8.	अपने भाग्य निर्माता आप	80.00	
9.	तनाव मुक्ति	30.00	
10.	उत्कृष्ट शंका समाधान	110.00	
11.	संतान निर्माण	10.00	
12.	जीवनोपयोगी संदेश	40.00	
13.	फेसबुक शंका समाधान	50.00	
14.	आत्मनिरीक्षण	40.00	
15.	सुखी गृहस्थ	75.00	
16.	अपने भाग्य निम्राता आप (बड़े पोस्टर)	10.00	
17.	अपने भाग्य निर्माता आप (छोटे पोस्टर)	4.00	
18.	न्यायदर्शन भाष्य	प्रकाशन आधीन	
19.	सांख्य दर्शन भाष्य	प्रकाशन आधीन	
20.	इशोपनिषद भाष्य	प्रकाशन आधीन	
21.	क्रोध को कैसे दूर करें...	अनुपलब्ध	
22.	तत्वज्ञान	अनुपलब्ध	
23.	कर्मफल सुविचार	अनुपलब्ध	
24.	बाल संदेश	अनुपलब्ध	



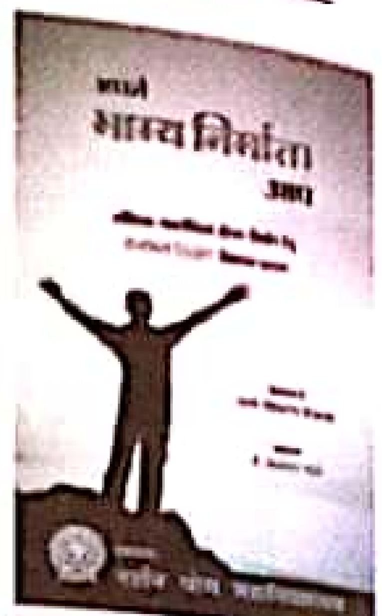








क्र.		मूल्य	प्रति
	स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी सरस्वती		
1.	अध्यात्मक सरोवर	150.00	
2.	संस्कृत सरोवर	प्रकाशन आधीन	
3.	भावना सरोवर	प्रकाशन आधीन	
4.	केनोपनिषद भाष्य	प्रकाशन आधीन	
	स्वामी ध्रुवदेव जी परिव्राजक		
1.	वेदार्थ प्रतीतिः	90.00	
2.	अष्टांग योग का स्वरूप	10.00	
3.	वैदिक सनातन धर्म..... (पत्रक)	5.00	
4.	चारित्र बोध	90.00	
5.	योग एवं योग का प्रयोजन	15.00	
6.	विष्णु सहस्त्रनामार्थ	30.00	
7.	वैदिक मंत्रों का प्रयोग	10.00	
8.	शरीर की वास्तविकता	10.00	
	स्वामी शांतानन्द जी सरस्वती		
1.	मृत्यु मीमांसा	15.00	
2.	वैदिक ध्यान हवन पद्धति	20.00	
3.	आर्यवन का प्रसाद	15.00	
4.	प्रारंभिक शिक्षा	15.00	
5.	यज्ञ की महिमा	10.00	
6.	वेदों में ईश्वर के प्रसिद्ध नाम	10.00	
	डॉ. राधावल्लभ जी		
1.	सफलता का संसार	150.00	
2.	सफलता सुविचार	70.00	
3.	सफलता शुभकमाना संदेश	125.00	
4.	सफलता के 15 सूत्र	15.00	
5.	सफलता के 15 सूत्र (पोस्टर)	10.00	
6.	श्रद्धा (फोल्डर)	10.00	
7.	वेद-वाणी	75.00	
8.	विद्या अविद्या	प्रकाशन आधीन	
	सफलता विज्ञान परियोजना अध्यक्ष श्री जगदीश जी शर्मा		
1.	आप सफल तो हैं.. सुविचार	41.00	
2.	सफलता की कुंजी-अभ्यास	49.00	
3.	आप सफल तो हैं...	149.00	
4.	समय लगाओ सफलता पाओ	111.00	
5.	सफलता के लिए निरंतरता...	149.00	
6.	ताकतवर सफल होते हैं	149.00	
7.	सहनशीलता है तो सफलता है	149.00	
8.	तेज चलो शीघ्र पहुँचों	199.00	
9.	सबसे तेज चलो सबसे शीघ्र...	149.00	
10.	स्मृति सफलता का आधार	199.00	
11.	सफलता विज्ञान वार्षिक टेबल	500.00	










पुस्तक में से....

अकामो धीरो अमृतः स्वयम्भूः रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः ।
तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम् ॥

हे ईश्वर! आप सब प्रकार से पूर्ण हैं। आपको अपने लिए किसी प्रकार की कामना नहीं है। अतः आप सर्वथा शान्त हैं। आप सर्वज्ञ हैं, अविनाशी, स्वयं समर्थ हैं। आप में कहीं से कोई कमी नहीं, सर्वथा आनन्द से परिपूर्ण हैं। आप स्थिर, जरा-जीर्णता से पृथक्, सदा एकरस, बलवान् को जान लेने पर ही विद्वान् मरने से भयभीत नहीं होता ॥

मुख्य प्राप्ति स्थान

दर्शनयोग धाम

ग्राम व डाक : लाकरोड़ा, ता.: माणसा, जि. गांधीनगर (गुजरात)-382835
दूरभाष : 9409615011, ईमेल - darshanyog@gmail.com,
Web : https://www.darshanyog.org